इस विशेष आवरण को संत शिरोमणि दिगम्बराचार्य श्री विद्यासागर जी मुनि महाराज के 50वां संयम स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में
श्री दिगम्बर जैन संरक्षिणी सभा जबलपुर के माध्यम से दिनांक 17 जुलाई 2018 को
मध्यप्रदेश डाक परिमण्डल भारतीय डाक विभाग के परिमण्डल शाखा द्वारा 5/- रूपये में जारी किया गया।

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पुण्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		अक्टूबर 2023	
16	सोमवार	द्वितीया	स्वाती
17	मंगलवार	तृतीया	विशाखा
18	बुधवार	चतुर्थी	अनुराधा
19	गुरुवार	पंचमी	ज्येष्ठा
20	शुक्रवार	षष्ठी	मूल
21	शनिवार	सप्तमी	पूर्वाषाढ़
22	रविवार	अष्टमी	उत्तराषाढ़
23	सोमवार	नवमी	श्रवण
24	मंगलवार	दशमी	धनिष्ठा
25	बुधवार	एकादशी	शतभिषा
26	गुरुवार	द्वादशी/त्रयोदशी	पूर्वाभाद्रपद
27	शुक्रवार	चतुर्दशी	उत्तराभाद्रपद
28	शनिवार	पूर्णिमा	रेवती अश्विनी
29	रविवार	प्रतिपदा	भरणी
30	सोमवार	द्वितीया	कृतिका
31	मंगलवार	तृतीया	रोहिणी
		नवम्बर 2023	
1	बुधवार	चतुर्थी	मृगशिरा
2	गुरुवार	पंचमी	आर्द्रा
3	शुक्रवार	षष्ठी	पुनर्वसु दि./रा.
4	शनिवार	सप्तमी	पुनर्वसु
5	रविवार	अष्टमी	पुष्य
6	सोमवार	नवमी	आश्लेषा
7	मंगलवार	दशमी	मघा
8	बुधवार	दशमी	पूर्वाफाल्गुनी
9	गुरुवार	एकादशी	उत्तराफाल्गुनी
10	शुक्रवार	द्वादशी	हस्त
11	शनिवार	त्रयोदशी	चित्रा
12	रविवार	चतुर्दशी	स्वाती
13	सोमवार	अमावस	विशाखा
14	मंगलवार	प्रतिपदा	अनुराधा
15	बुधवार	द्वितीया	ज्येष्ठा

तीर्थंकर कल्याणक

22 अक्टूबर: भगवान शीतलनाथ मोक्ष कल्याणक
29 अक्टूबर: भगवान अनन्तनाथ जी गर्भ कल्याणक
01 सितम्बर: भगवान संभवनाथजी ज्ञान कल्याणक
11 सितम्बर: भगवान पद्मप्रभजी जन्म तप कल्याणक
13 सितम्बर: भगवान वर्द्धमान स्वामजी मोक्ष कल्याणक
15 सितम्बर: भगवान पुष्पदंत जी ज्ञान कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

25 अक्टूबर: मुक्तावली व्रत
28 अक्टूबर: शरद पूर्णिमा, गुरु उपकार दिवस
31 अक्टूबर: रोहिणी व्रत
10 नवम्बर: मुक्तावली व्रत
11 नवम्बर: धनतेरस मंगल त्रयोदशी
12 नवम्बर: चातुर्मास निष्ठापन, वर्षायोग पूर्ण
13 नवम्बर: दीपावली, प्रातः भगवान महावीर स्वामी जी निर्वाण गौतम स्वामी जी, केवलज्ञान सायंकाल

सर्वार्थ सिद्धि

18 अक्टूबर: 06/24 बजे से 29/01 बजे तक
22 अक्टूबर: 06/24 बजे से 18/44 बजे तक
23 अक्टूबर: 06/24 बजे से 17/14 बजे तक
27 अक्टूबर: 09/25 बजे से 30/29 बजे तक
30 अक्टूबर: 28/09 बजे से 30/30 बजे तक
01 नवम्बर: 06/31 बजे से 28/36 बजे तक
03 नवम्बर: 06/32 बजे से 30/33 बजे तक
05 नवम्बर: 06/33 बजे से 10/29 बजे तक
11 नवम्बर: 25/47 बजे से 30/37 बजे तक
13 नवम्बर: 27/23 बजे से 30/39 बजे तक

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभ: अक्टूबर-19 नवम्बर-3, 10, 15
मशीनरी प्रारंभ : अक्टूबर-19 नवम्बर-3, 10, 15
वाहन खरीदने: अक्टूबर-16, 25, 28 नवम्बर-3, 4, 10
संपत्ति क्रय: अक्टूबर-20, 26, 27 नवम्बर-3

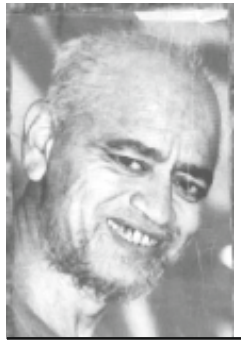

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 294 • अक्टूबर 2023
• वीर नि.संवत 2547 • विक्रम सं. 2079 • शक सं. 1942

लेख

- वैज्ञानिक युग और अहिंसा 08
- प्रथम पाठशाला संस्थापक गणेश प्रसाद वर्णी 11
- गुरु चरण में संजय की अंतिम श्वास 15
- तत्वार्थ सूत्र का अन्तः परीक्षण 21
- चारित्र्य का आधारः संयम और निष्ठा 25
- पंजाब में उपलब्ध कुछ जैनलेख 30
- क्षत्रचूड़ामणि और उसकी सूक्तियाँ 34
- बुजुर्गों को उपेक्षा नहीं सम्मान चाहिये 50
- प्रतिमा के गुण दोषों का विवेचनात्मक अध्ययन 52
- **वरिष्ठ नागरिकः** सुरक्षित रहिए 57
- मूत्र संबंधित कष्ट-मूत्र रूधिरता या यूरीमिया 59

बाल कहानी

- गलत कदम मत उठाओ 62

कविता

- मूक पशु को बचाना है 10
- नही दुनिया सच सारी 13
- पात्र-अपात्र 24
- काव्य महिमा 33
- प्रभु पार्श्वनाथ 51

कहानी

- मेरी भावना 44

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 14
चलो देखें यात्रा : 20 • आगम दर्शन :27 • माथा पच्ची : 28 • पुराण प्रेरणा : 29
बाबा की सीख : 35 • कैरियर गाइड : 36 • दुनिया भर की बातें : 37 • इसे भी जानियेः 42
•दिशा बोध : 43 • हमारे गौरव : 49 • हास्य तरंग-पाककला : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं : वर्ग पहेली : **66**

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826548159

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–95425053111
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8989845294

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ,इन्दौर (म.प्र.)

✲ आंतरिक सज्जा ✲
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें ।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851, 4003506
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, पिछले सितम्बर के अंक में बाबा की सीख स्तम्भ में अशोक पाटनी जी द्वारा लिखित संस्मरण में व्यापार करने के गुर बताये हैं। हर व्यक्ति दिवालिया होने से डरता है और अपने व्यापार को सीमित रूप से करता है परन्तु दिवाला उनका निकलता है जो हुण्डी के आधार अपना व्यापार बढ़ाते हैं असंतुलित व्यय भी दिवालिया होने का कारण बनता है। और जो व्यापार के प्रति नीति, नियत और नियंत्रण पर नजर नहीं रखते हैं उनका दिवाला निकलता हैं। बुर्जगों द्वारा दी गयी शिक्षा सदैव अनुकरणीय होती है।

राजकुमार जैन, इंदौर

• सम्पादक महोदय, चीन ने बच्चों के मोबाइल उपयोग को नियंत्रित करने का कानूनी प्रारूप तैयार कर उसे लागू किया है चीन की सरकार ने इसे अच्छी तरह से स्वीकार किया है। मोबाईल का अति प्रयोग करने से या मोबाईल में बच्चों के चिपके रहने से उनमें डिप्रेशन की बीमारी लग जाती है तथा भूख भी प्रभावित होती है। मोटापा भी बढ़ने लगता है आँखों में कई तरह की बीमारी लग जाती है। नींद भी प्रभावित होती है। बच्चे यदि मोबाईल का अति प्रयोग करते हैं तो घातक प्रभाव होता है । चीन देश ने अपने देश के बच्चों का भविष्य देखते हुये कानून बनाया अब हम सब भारत की सरकार से अपेक्षा कर रहे है कि वह अपने देश के भविष्य को वरबाद होने से बचायेगी।

राजीव जैन, दिल्ली

• सम्पादक महोदय, पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को तोशगार मामले में दूसरी बार गिरफ्तार किया गया उनके समर्थकों ने उग्र प्रदर्शन किया परंतु उन्हें वे जेल से बाहर नहीं ला पाये। विचारणीय चिह्न यह हैं कि पाकिस्तान कुछ ऐसी नियति बन चुकी है कि वह सदैव लोकतंत्र की पवित्र भावनाओं का समर्थक नहीं बन पाता है। राष्ट्राध्यक्ष या शासनाध्यक्ष को या तो जेल जाना पड़ता है या फिर देश छोड़ना पड़ता है या फिर उनकी हत्या हो जाती है । सेना के हाथ की कटपुतली सदैव पाकिस्तान की सरकारें रही हैं पाकिस्तान का आर्थिक विकास होना तो दूर की बात है। अभी तो वह गरीबी महंगाई से उभर नहीं पा रहा है। पाक की सेना जब चाहे तब तख्ता पलटकर देती है। लोकतंत्र का महत्व इस देश की सेना ने कभी नहीं समझा।

रजनीश मलैया, रहली

• सम्पादक महोदय, सितम्बर माह के संस्कार सागर अंक में बाल कहानी ''हिन्दी माध्यम का कमाल'' शीर्षक से पढ़ी राजुल ने न तो अंग्रेजी माध्यम को स्वीकारा और ना ही अपना विषय परिवर्तित किया फिर भी 24 विद्यार्थियों की कक्षा में अपना अनूठा कौशल प्रस्तुत किया । अंग्रेजी माध्यम के 24 विद्यार्थी जहाँ असफल रहे हों वहीं हिन्दी माध्यम की राजुल ने सफलता प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि अंग्रेजी माध्यम ऊंचाईयाँ छूने का आधार नहीं है हिन्दी माध्यम से कई लोग उच्च पद पर आसीन हैं। अतः समाज को अपनी धारणा बदलना होगी और मातृभाषा का सम्मान करना होगा।

अनीता जैन, ललितपुर

भक्ति तरंग
विनती सुन लीजे

हो प्रभुजी, म्हारो छै नादानी मनड़ो ।।टेक।।
हूं व्याकुल तुम पद सेवन को, यो नहिं आवत है बगड़ो जी ।।हो।।1।।
याकौ सुभाव सुधारि दयानिधि, मचि रदूयो मोटो झगड़ो जी ।।हो।।2।।
बुधजन की विनती सुन लीजे, कहजे शिवपुर को डगड़ो जी ।।हो।।3।।

हे प्रभु ! यह मेरा मन नादान है, नासमझ है, चंचल है। मैंबार-बार इसको आपके चरणों की भक्ति में लगाना चाहता हूँ, रत करना चाहता हूँ, पर यह उसके लिये आता ही नहीं, तैयार ही नहीं होता, यह हठी हो रहा है, बिगड़ रहा है, कुटेव (खराब आदतों) में लगा हुआ है।

हे कृपानिधान! मेरे मन का यह स्वभाव ठीक करो, उसे सुधारो। यह कैसे ठीक हो-मेरे समक्ष यह ही बड़ी समस्या है, यही प्रश्न उत्पन्न हो रहा है।

बुधजन कहते हैं कि हे प्रभु ! मेरी विनती सुन लीजिये और मुझे शिवपुर की, मोक्ष की डगर, गैल, रास्ता बताइये।

संस्कार प्रवाह

विश्व शांति और अहिंसा

अहिंसा शांति का आधार है। विश्व शांति का स्वप्न अहिंसा के बिना साकार होना संभव नहीं है। भारतीय ऋषियों ने अहिंसा को परमधर्म के रूप मान्यता दी है। महाभारत के निम्न श्लोक में 'अहिंसा परमो धर्म' उद्घोष स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है। शांति के बिना यदि जीवन सार्थक नहीं होता है तो अहिंसा के बिना शांति का प्रयास भी व्यर्थ होता है।

अहिंसा परमो धर्म स च सत्वे प्रतिष्ठित।
सत्ये कृत्या प्रतिष्ठा तु पवर्तन्ते प्रवृत्तय।। महाभारत वनपर्व 207/74 (पृष्ठ 685)

अहिंसा में अनंत शक्ति है, अहिंसक भविष्य कभी खराब नहीं होता है। धर्म का तकाजा, सार, निचोड़ अहिंसा ही है। सच्चा धर्म वही है जो जीवों के प्रति अहिंसा का प्रतिपादन करता हो। अहिंसा सब धर्मों में श्रेष्ठ है। परिग्रह के त्याग के बिना अहिंसा साकार नहीं होती जिसके पास तिल तुष मात्र भी परिग्रह है अहिंसा के निकट भी नहीं जा सकता है। दयाभाव+समता+निर्भयता = अहिंसा का समीकरण सिद्ध होता है। प्रेम करूणा संतोष समता अहिंसा रूपी भवन में मजबूत चार स्तंभ हैं। आश्चर्य की बात यह है कि कुछ लोग परिग्रह के साथ अहिंसा का ढोंग करने में लगे हुये हैं।

हर 2 अक्टूबर को सारा विश्व अहिंसा दिवस के रूप में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को याद करता है। परंतु भारत एक देश जिसकी तासीर में अहिंसा समायी हुई हैं परंतु आये इस देश के कानून निर्माता से ससंद या विधानसभा में ऐसे प्रस्ताव लेकर आते हैं जो बापू के अहिंसा विचारों को लज्जित करने के सिवाय कुछ नहीं करते हैं।

मुझे ऐसा लगता है कि राजनेता व शासन प्रशासन इस बात की तलाश समय समय पर करता रहता है। अहिंसक समाज कितनी जागरूक है और कितनी सो चुकी है। हम जानते हैं कि महावीर, गौतमबुद्ध, भगवान राम ने भारत के जनमानस को ऐसी घुट्टी पिलाई है कि भारत का हर राम भक्त, जैन, बुद्ध कितना भी क्यों न सो जाये पर वह सोते सोते भी अहिंसा का ही समर्थन करेगा। अहिंसा के विरोध में जब कभी धन कमाने की दृष्टि से हमारे शासकीय योजनायें कुछ ऐसी आती हैं, जो अहिंसा के विरोध में आती हैं। जैसे जीवित पशुओं के निर्यात योजनाओं ने संपूर्ण अहिंसा की मान्यताओं को झकझोर दिया। परंतु अहिंसक समाज में एक ऐसी जागरूकता आयी की संपूर्ण अहिंसक समाज ने जातीपंथ के भेद को भुलाकर सरकार का दमखम के साथ विरोध किया जिसका परिणाम यह आया कि केन्द्र सरकार को जीवित पशु निर्यात की योजनाओं को वापस लेना पड़ा। इसी तरह से यदि अहिंसक समाज जागरूक होकर केन्द्र या राज्य सरकार की हिंसक योजनाओं का संगठित होकर विरोध करेगी तो महात्मा गांधी की अहिंसा विश्व के साथ-साथ भारत में भी अपनी प्रभावशीलता को कायम रख पायेगी। अक्टूबर महिने का पहला सप्ताह अहिंसा के रूप में मनाया जाता है और यही पहल भारतीय भगवंत पुरुषों का उपदेश भी सार्थक कर देती है।

अंतराष्ट्रीय अहिंसा दिवस को मनाने का आह्वान संयुक्त राष्ट्र संघ ने किया है, जिसका लक्ष्य विश्व शांति को साकार करना है। हर भारतीय नागरिक का कर्तव्य है कि, वह विश्व शांति के इस अभियान में सच्चे अहिंसक बनकर अपना योगदान दें।

वैज्ञानिक युग और अहिंसा

लेखकः श्रीरतन जैन पहाड़ी

आधुनिक वैज्ञानिक युग किस प्रकार प्रगति पथ पर अग्रसर हो रहा है, इस पर हम दृष्टिपात करते हैं तो इन वायुयानों की गड़गड़ाहट के साथ-साथ हमें मानव की करूणा पुकार का भी प्रत्यक्ष बोध होता है। प्राचीन युग की तुलना आज के वैज्ञानिक युग से की जाये तो भले ही किसी रूप में आज का युग कुछ अग्रसर कहा जा सके, लेकिन अधिकांश रूप में और जहाँ तक ''शान्ति'' के अस्तित्व का सम्बन्ध है, प्रायः निराश ही होना पड़ेगा।

अणुवम के इस युग में जहाँ पाँच ही मिनट में सैकड़ों मील तक के मकान रहने वाले मनुष्य एवं पशु-पक्षियों का सफाया हो जाता है तथा उस बम-प्रभावित क्षेत्र में आने वाला व्यक्ति भी घुट-घुटकर मृत्यु का ग्रास हो जाता है। ऐसे समय में हम मानव से मानवता के संरक्षण की कल्पना कहाँ तक कर सकते हैं ? प्राचीन समय में दो सेनाएँ आपस में अस्त्र-शस्त्र बांधकर लड़ती थी-प्रजा अपना कार्य करती थी, लेकिन आज तो बड़े गौरव के साथ यह कहा जाता है कि ''समूचा देश-का -देश युद्ध मोर्चे पर है''। पहले साज की तरह युद्ध न होते थे, लेकिन आज तो ''सभ्यता'' और उसका युद्ध से सम्बन्ध दो भिन्न-भिन्न वस्तुएँ दृष्टि-गोचर होती हैं। युद्ध का सभ्यता से कोई सम्बन्ध ही नहीं रह गया है किन्तु किसी भी तरह शत्रु को पराजित करना ही युद्ध का एकमात्र ध्येय होता है। चाहे वह अन्याय हो या और किसी उचित-अनुचित तौर-तरीके से। इसी कारण देखिये ! प्रत्येक युद्ध में नये-नये शस्त्रास्त्रों का प्रयोग होता चला आ रहा है। पिछला युद्ध टैङ्क और हवाई जहाजों के प्रयोगों से खत्म हुआ, लेकिन यह युद्ध, जिसकी छाया पूर्णरूप से अभी भी हमारे ऊपर व्याप्त है, प्रारंभ तो हुआ पिछले प्रयोगों से लेकिन खत्म हुआ ''परमाणुबम'' से। इसमें सन्देह नहीं कि अगला युद्ध प्रारंभ तो होगा इस नवाविष्कृत ''अणुबम'' से और खत्म होगा महाप्रलय द्वारा ही। इस प्रगति में कोई रोक-थाम नहीं कर सकता। पश्चिम वाले जिस विभीषिका को शान्ति का दूत मानते हैं वही विभीषिका आने वाले चन्द दिनों में उनके नाश का कारण बनेगी। जिन शस्त्रास्त्रों का प्रयोग वे आज शत्रु के निर्दलन-स्वरूप करते हें और उसे अपनी रक्षा का सम्बल मान शान्ति-प्रसारक मानते हैं वे ही उन्हें जगत से नेस्तनावूद करने में सहायक होंगे, इसमें सन्देह की बात नहीं।

अगर इसमें रक्षा का कोई उपाय है तो वह अहिंसा ही। मानव की मानवता, सुख-शांति का साम्राज्य स्थापित रखने के लिये अहिंसा ही एक ऐसा मूलमंत्र है जिसके बल पर प्रत्येक प्राणी अपना अस्तित्व कायम रखते हुये सुख-शान्ति का जीवन यापन कर सकता है। आदिकाल से भारत अहिंसा की शिक्षा का शिक्षक रहा है। समय-समय पर इस भारत में ऋषि व महात्माओं ने अवतरित हो अहिंसा का पावन उपदेश जगत को दिया और भारत को आध्यात्मिकता की चरम सीमा पर पहुँचने का गौरव प्रदान किया।

मशीन आदि उत्पादक साधनों के विषय में हम यह पूर्ण रूप से मानने को प्रस्तुत हैं कि देश की व्यापारिक उन्नति के लिये मशीनों का प्रयोग आवश्यक है, लेकिन भारतवर्ष को किसी रूप में यह प्रयोग हानि-प्रद ही सिद्ध हुआ है- वह घातक ही सिद्ध हुआ है न कि वरदान-स्वरूप है। चर्खे एवं करघे का उपयोग ''गांधीवाद'' का प्रमुख अङ्ग है। ऐसे देश में जहाँ हजारों-लाखों मनुष्य बिना अल-वस्त्र के इस धरती से विदा हो अपनी जीवन-यात्रा समाप्त कर जाते हैं और उन्हें कोई जान भी नहीं पाता। ऐसे देश में जहाँ के लाखों मजदूर काम न मिलने के कारण दर-दर भटकते फिरते हैं और किसी प्रकार के औद्योगिक धन्धों के समुचित प्रचार से वह मिलों एवं खानो में अपना जीवन पशु से भी बदतर (निम्नस्तर पर) यापन करने को बाध्य होते हैं। मशीन एवं अन्य वैज्ञानिक उत्पादक यन्त्रों से ही यह भीषण समस्या हल होने वाली नहीं है, उस समस्या को सुलझाने के लिये कृषि-प्रधान-देश भारत में उद्योग-धन्धों का प्रसार ही श्रेयस्कार होगा, वर्ना यह असम्भव है कि हम अपने गरीब भारतीय मानव को दोनों समय भोजन एवं समुचित वस्त्र की व्यवस्था कर सकें।

हाँ, मशीनों का प्रसार उच्च स्तर वालों का मापदण्ड किसी सीमा तक विस्तृत कर सकता है, लेकिन निम्नस्तर वाला सर्वहारा वर्ग उसी प्रकार अपना दीनता में मरण के आंसू बहाता रहेगा जिस प्रकार सदियों से बहाता रहा है। हाँ, किसी प्रकार के सुधार के सद्भाव से उसके यह आँसू हम पोंछने में समर्थ हो सकते हैं। महात्मा गांधी की अहिंसा एवं उनके रचनात्मक कार्यक्रम पर आज हम ग्रामीण भारतीय तथा जैन्टिलमैन मिस्टर भारतीय का भी विकास कर सकते हैं ?

पूंजीवाद का सम्बन्ध- विज्ञान की रोक-थाम अधिकांश रूप में पूंजीवादी सत्ता पर निर्भर करती है। जिस देश में धनिकवर्ग अपनी सत्ता स्थापित करने की राह सोचेगा उस देश में यह निश्चय है कि सर्वहारा (मजदूर) वर्ग भी अपनी पीड़ाओं की घड़ियाँ काट रहा होगा। एक कहानी इस समय याद आती है।

रूस में किसी जगह एक चित्र टँगा था, जिसका आशय इस प्रकार है-

एक बच्चा अपनी माँ से कह रहा है। माँ ठण्ड लग रही है कोयला जला दो।

माँ उत्तर देती है- बच्चा घर में कोयला नहीं है।

माँ, घर में कोयला क्यों नहीं है ? बच्चे ने पूछा।

बच्चा ! आज तेरे बाबूजी को काम नहीं मिला इस लिये आज पैसे नहीं मिले और इसी कारण घर में कोयला न आ सका।

क्यों माँ ! बाबूजी को काम क्यों नहीं मिला, जिससे कोयला न आ सका।

माँ उत्तर देती है- बच्चा ! मालिक ने खान से कोयला बहुत ज्यादा निकलवा लिया है इसलिये शहर में अब कोयले की कमी नहीं है।

शहर में कोयला अधिक आ गया है, इसलिये आज तेरे घर में कोयला नहीं है।

यह पूंजीवादी मनोवृत्ति का परिणाम। चूंकि एक ओर कोयले का अम्बार लगा हुआ है इसी

कारण दूसरी और मजदूर श्रेणी का मानव ठण्ड से ठिठुर रहा है।

उपर्युक्त बातें विज्ञान से सम्बंधित हैं, लेकिन अहिंसा की उपादेयता का प्रश्न जटिलरूप धारण करता जा रहा है। एक ओर तो गांधी अपने आत्मबल एवं अहिंसा के प्रयोगों से विश्व को चुनौती दे रहा है कि यदि विश्व में शांति स्थापित होगी तो वह 'अहिंसा' से ही, वर्ना यह असंभव है कि अन्य साधन विश्वशांति में कारगर हो सकें। लेकिन दूसरी ओर अपनी मैत्री बनाये रखने का स्वप्न देखते हुये 'मित्रराष्ट्र' परमाणु-बम को मित्रता का आधार मान मैत्री-संबन्ध स्थापित करते हैं और तरह-तरह की Peace Confrences और शांति-प्रसारक सम्मेलन करते हैं। भगवान जाने कहाँ ''परमाणु-बम'' की मित्रता मित्रता के रूप में टिक सकती है। हाँ, यह हो सकता है कि जब रोगी ही न रहेगा तो रोग तो स्वयं चला जायेगा। जब ये दोनों आपस में लड़-पिट कर मर जायेंगे तो शांति का साम्राज्य तो संभव है ही ? वह समय भी तो दूर नहीं है।

बापू का यह सिद्धांत ठीक है कि 'कटुता कटुता से नहीं मिट सकती। रक्त रंजित पट स्वच्छ जल से ही साफ किया जा सकता है। विज्ञान द्वारा मिटती मानवता यदि सुरक्षित रक्खी जा सकती है तो वह अहिंसा के पालन से ही, अन्यथा परिणाम की भयंकरता का ठौर-ठिकाना नहीं ।'

कविता

मूक पशु को बचाना है

डॉ. निर्मल शास्त्री

शांत स्वरूप की छाँव तले, सरस वाणी की धार बहे।
अनुपम सुख बिलसित हो, सागर की बाहों में पले ॥1॥
निर्झरणी सम हो उज्जवलता, मोती से भी उच्च हो गरिमा।
निर्मल सरल स्वभावी पन, बनता रहे मुनीद्रों सम ॥2॥
पुष्पलता वल्लरियों से, महकाना सीखें गुण को।
विश्व शांति अनुभव करें, शीतलता ही हो सबको ॥3॥
सिंहो सी हो निर्भयता, हिरणों सी हो मनमोहकता।
चींटी से मिलकर के खाना, बगुला से हो ध्यान लगाना ॥4॥
सभी जानवर शिक्षा देते, गुण तो सब ही में होते।
वन वृक्षों को नहीं काटना, जीव आदि को नहीं मारना ॥5॥
यह तो उपकारी ही होते, अपने जीवन से सुख देते,
प्रकृति बनाती शाकाहारी, फिर क्यों होते जन माँसाहारी ॥6॥
जीवन सफल बनाना है, भवजल भ्रमण नशाना हैं।
नूतन हमको कुछ पाना है, जो यह संकल्प बनाना है ॥7॥
दया, करूणा, प्रगटाना है, तो सोई शक्ति जगाना है।
निर्मल यदि सुख पाना है, तो मूक पशु को बचाना है ॥8॥

प्रथम पाठशाला संस्थापक गणेश प्रसाद वर्णी

न्यायमूर्ति विमला जैन, भोपाल

जैन तीर्थ, नैनागिरि से वर्णी जी की अनूठी शुरुआत ने पूरी दुनिया को चकित कर दिया। जैन शैक्षणिक जगत के उगते हुये सूर्य की भांति अपने ज्ञान की शीतल किरणों से पूरी जैन समाज के युवक और युवतियों को शिक्षित और प्रशिक्षित कर वर्णी जी पूरे देश की शैक्षणिक क्रांति के सूत्रधार बन गये हैं। उनकी सहज, सरल और निष्कपट वाणी ने जन-जन का उद्धार कर दिया। स्वतंत्रता संग्राम में अपना अनुपम योगदान प्रदान किया। उनके आडंबर विहीन क्षुल्लक जीवन ने साधु की गरिमा स्थापित की। उनकी विनम्रता, सादगी और सहिष्णुता से प्रभावित होकर बुंदेलखण्ड के प्रत्येक व्यक्ति ने उन्हें ऊपर उठाकर ज्ञान और आचरण की सर्वोच्च सीढ़ियों पर विराजमान कर दिया।

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध की अवधि 1905-1953 में वर्णी जी ने नैनागिरि की अनेकों यात्रायें की। वे लंबी-लंबी अवधि तक नैनागिरि में रहे। उन्होंने नैनागिरि में प्राचीनतम धर्मशाला का वर्ष 1917 में शिलान्यास और 1918 में उद्घाटन कर एक वर्ष में ही निर्माण पूर्ण कराया। श्री शिवप्रसाद, शोभाराम और बालचन्द्र मलैया को प्रेरित कर वर्ष1935 में नैनागिरि में पाठशाला के विशाल भवन (मलैया धर्मशाला) का निर्माण कराया।

वर्णी जी देशभक्त संत और शिक्षा शास्त्री के रूप में विख्यात रहे हैं। उनकी विचारधारा बड़ी ही सटीक, प्रभावी और जमीन से जुड़ी रही है। उनके उपदेश व्यावहारिक और सरल हुआ करते थे। उन्होंने जैन समाज को शैक्षणिक रूप से सशक्त बनाने के लिये अनवरत ठोस प्रयास किये। गत जनगणना के आंकड़ों से ज्ञात हुआ है कि जैन समाज शत प्रतिशत रूप से शिक्षित है। राष्ट्रीय परिदृश्य में इसका प्रमुख श्रेय वर्णी जी तथा उनके द्वारा संस्थापित, सतत रूप से संपोषित और संचालित दशाधिक महाविद्यालयों और विद्यालयों तथा शताधिक छोटी-छोटी पाठशालाओं को जाता है। परिणामतः वर्णी जी जैन शैक्षणिक जगत में असाधारण क्रांति के जनक रहे हैं । वर्णी जी ने अपने समकालीन बंगाल के तीन संतों-विवेकानंद, महर्षि अरविंदो और स्वामी प्रणवानंद की भांति बुंदेलखण्ड में राष्ट्रीयता से ओतप्रोत आध्यात्मिक और शैक्षणिक अवदान दिया। यह सराहनीय है कि महर्षि अरविंदो की 150 वीं जयंती मनाई जा रही है।

पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी (1874-1961) का जन्म आश्विन कृष्णा चतुर्थी विक्रम संवत 1931 तदनुसार दिनांक 29.09.1874 दिन मंगलवार को वैष्णव धर्मानुयायी असाटी समाज में ग्राम हंसेरा, जिला ललितपुर, बुंदेलखण्ड (उ.प्र.) में हुआ था। वह आध्यात्मिक गुरु, सरल हृदय संत, महान शिक्षाविद, उपदेशक, परोपकारी, समाज सुधारक, संस्कृति संवर्धक, साहित्य सृजक और युगदृष्टा थे। वर्णी जी इस निष्कर्ष पर पहुँच गये थे कि जैन समाज के समग्र विकास के लिये शिक्षा सबसे बुनियादी आवश्यकता है । अतः उन्होंने मध्यप्रदेश सहित पूरे देश में सैकड़ों पाठशालाएं, संस्कृत विद्यालय, महाविद्यालय खुलवाये तथा जन-जन

में शिक्षा की अलख जगाई। वर्णी जी ने सहस्रों विद्वानों को जन्म दिया किन्तु उन्होंने अपनी जयकार करने वालों के समूह गठित नहीं किये। अपितु उन्होंने अपने शिष्यों को समाज में शाश्वत मूल्यों के जागरण के लिये प्रेरित किया।

पूज्य वर्णी जी महान राष्ट्र प्रेमी थे। जबलपुर में उन्होंने अपने शरीर को ढंकने की इकलौती चादर (जिसे नीलाम करके स्वतंत्रता आंदोलन को धन जुटाया गया था) आजाद हिन्द फौज को समर्पित कर लोगों को स्वतंत्रता आंदोलन में तन-मन और धन से सहयोग देने के लिये प्रेरित किया। स्वतंत्रता के 75वें समारोह के अवसर पर दिनांक 13.10.2021 को क्षुल्लक गणेश प्रसाद जी वर्णी के राष्ट्र के प्रति योगदान की स्मृति में भारत सरकार द्वारा विशेष आवरण मध्यप्रदेश सागर 14/2021 जारी किया गया है। दिनांक 13 अक्टूबर 2021 को मध्यप्रदेश के राज्यपाल की अध्यक्षता में भोपाल में आयोजित समारोह में भारत सरकार ने वर्णी जी के राष्ट्रीय योगदान को उनकी समाधि के 60 वर्ष बाद भी राष्ट्रीय स्तर पर स्मरण कर उनके कार्य की महत्ता को उत्कृष्टता प्रदान की है।

पूज्य गणेश प्रसाद जी वर्णी जी द्वारा 1905 में वाराणसी में जैन घाट पर स्थापित श्री स्याद्वाद महाविद्यालय के छात्रों का स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत के स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में यहां के विद्यार्थियों ने अनुपम और गौरवशाली योगदान दिया है। सन् 1921 के असहयोग आंदोलन, सन् 1932 के सत्याग्रह सन् 1940 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में यहां के अनेक छात्रों ने अपनी अहम भूमिका निभाई है। सन् 1942 के अगस्त आंदोलन में तो यह विद्यालय विद्यार्थियों का शस्त्रागार ही बन गया था। यहां के अनेक छात्र इस आंदोलन में पिस्तौल आदि के रखने के आरोप में जेल भेजे गये। यहां के छात्र रातों रात जागकर, भूखे-प्यासे रहकर इस स्वतंत्रता आंदोलन में पूरे समर्पण से कूद पड़े थे। 'रणभेरी' नाम से पर्चे छापकर वितरित करते हुये अनेक छात्र पकड़े गये फिर भी निराश नहीं हुये और आंदोलन में जुटे रहे।

यह वर्ष आजादी के अमृत महोत्सव का वर्ष है। इस अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की पुण्य-स्मृति में कई कदम उठाये गये हैं। हम और हमारे पूर्वज अपने देश के स्वतंत्रता संग्राम में सदैव अपनी आहुति देते रहे हैं। अब हम स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। हम सब मिल-जुलकर आगे आयें। वर्णी जी की 150वीं जन्म जयंति मनायें। इससे भावी पीढ़ी को प्रोत्साहन और मार्गदर्शन मिलेगा। स्वतंत्रता सेनानियों के महान नायक वर्णी जी की 150वें जन्मोत्सव की वर्षगांठ समारोहित करने के लिये हम ठोस प्रयास कर रहे हैं। स्वाधीनता संग्राम में दिये योगदान को इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखने और अपने वाली पीढ़ी की स्मृति में जागृत रखने के लिये वर्णी जी की जयंती को गौरव दिवस के रूप में मना रहे हैं।

वर्णी जी शैक्षणिक नेतृत्व के अद्भुत प्रतीक रहे हैं। वे लाखों भारतीयों को शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर आगे बढ़ने के लिये प्रेरित करते रहे हैं। वे ऐसे शिक्षाविद् रहे हैं जो समृद्ध जैन

संस्कृति और उसकी परंपराओं पर गर्व किया करते थे। वे स्थानीय समाज की रुग्ण विचारधारा को परिष्कृत करते थे।

गणेश प्रसाद वर्णी नाम से ही हमें उनके प्रभावी संतत्व का परिचय मिल जाता है। उनके प्रति स्वतः भक्ति जागृत हो जाती है। प्रतिदिन सर्वप्रथम उनको प्रणाम करने की इच्छा होने लगती है। **वर्णी जी ने रैदास, तुलसीदास, नानक देव और कबीरदास की भांति अपने नाम के आगे कोई विशेषण नहीं लगाया। अपने नाम के आगे-पीछे भांति-भांति के प्रत्यय और उपसर्ग लगाकर अपने नाम का श्रृंगार नहीं किया। नाम का ही नहीं तन का श्रृंगार भी नहीं किया। चांदी और सोने की थाली में किसी सेठ को अपने पैर पखारने का अवसर नहीं दिया। भांति-भांति के अत्यधिक महंगे और सुसज्जित आसन पर बैठने की कभी कामना नहीं की। शरणागत की भावनाओं का आर्थिक दोहन नहीं किया।** उन्होंने भौतिकता से दूर रहकर सच्चे जिज्ञासुओं की खोज की और उन्हें आध्यात्मिक प्रगति का मार्ग बताया। उन्होंने सूखे रेगिस्तान में दौड़ रहे व्यक्तियों की प्यास बुझाई। संत कबीर की पंक्तियाँ **'साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं'। 'धन का भूखा जो फिरै, सो तो साधु नाहिं।।'** वर्णी जी के व्यक्तित्व पर शब्दशः सही बैठती हैं।

वर्ष 2023 में वर्णी जी के जनम की 150वीं जयंति (सार्द्ध शताब्दि) आने के पूर्व हम अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य के व्यक्तित्व में उनके सदगुण विकसित करें।

कविता

नही दुनिया सच सारी

❊ संस्कार फीचर्स ❊

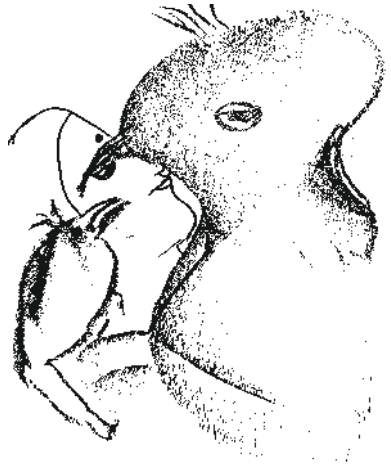

नील गगन में भरी उड़ाने, उड़ उड़कर मैं हारी
चोंच में अपनी दाना लेकर, प्रीत भरी महतारी
अपने बच्चे की यादें ही, लौटकर घर को लाई
पर तो थके बहुत है मेरे, पर थकान मिटती है
अपने जिगर के टुकड़े में ही, सब दुनिया सिमटी है
किसने देखा प्यार अनूठे, जो अपने बच्चे से
माँ की ममता कब मानेगी, छूटे न बच्चे से
अपना बेटा साथ निभाये, झूठा जग का सपना
भले मोह यह झूठा निकले, कोई कहाँ है अपना
मिले समागम जब संतों का,
नहीं दुनिया तब समझूँ सचसारी

संयम स्वास्थ्य योग

एकाग्रता का माध्यम त्राटकयोग

त्राटक, हठयोग की एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इसके नियमित अभ्यास से साधक की एकाग्रता में असीम वृद्धि होती है। इसके अभ्यास से गुप्त शक्तियाँ जागृत होती हैं। इसके नियमित अभ्यास से अनिद्रा रोग दूर होता है। इसका अभ्यास नाड़ियों को स्थिरता प्रदान करता है। इससे मन शांत होता है।

विधि: अंधेरे कमरे में किसी आरामदायक स्थिति में रीढ़ को सीधा रखते हुये बैठें। आँखों से एक से डेढ़ फीट की दूरी पर आँखों के समतुल्य रोशनी रहे ऐसी व्यवस्था करें। सर्वप्रथम दोनों नेत्रों को बन्द रखें। मेरूदण्ड को सीधा रखते हुये शरीर शिथिल रखें। स्थूल शरीर पर अपनी चेतना को रखें, उसमें कोई हलचल न हो। इस स्थिती में स्थिर हो जाने पर धीरे-धीरे आँखो को खोलें। मोमबत्ती की लौं के सर्वाधिक प्रकाशित भाग को देखें, जो कि लौ के सबसे ऊपर वाले सिरे पर होता है। जब तक आँसू न आ जाये अपलक दृष्टि से लौ को देखते रहें। आंसू आने पर आँखें बन्द कर उन्हें शिथिल करें। शरीर को स्थिर रखें। बन्द आँखों से लौ के प्रति सजग रहिये। पुनः जब प्रतिबिम्ब धुंधला पड़े तो आँखें खोलकर एक-एक दृष्टि से लौ को देखें।

सामान्य रूप से इसका अभ्यास 15-20 मिनिट तक करें। आध्यात्मिक उन्नति, तनाव, एकाग्रता में कमी व नेत्र विकार के निवारण हेतु इसकी अवधि बढ़ाई जा सकती है। प्रातः काल 4 से 6 के मध्य सर्वोत्तम समय हैं। वैसे इसे दिन में खाली पेट कभी भी किया जा सकता है।

गुरु चरण में संजय की अंतिम श्वास

❊ निर्मल कुमार पाटोदी ❊

जीवन की दिशा बदलने वाली थी। 27 मई की रात का समय था। धान का कटोरा छत्तीसगढ़ स्थित दिगम्बर जैन तीर्थ डोंगरगढ़ में आत्मसाधक अंतर्यात्री गुरु महाराज विद्यासागर जी विराजमान हैं। उनके श्री चरणों में राग से वैराग्य की भावना संजोकर, पूज्य श्री की छत्रछाया में असीम प्रसन्न भाव से इंदौर का भक्त संजय जैन 'मेक्स' मोदी बजाज स्वयं को भव से पार करने के लिये पूरी तरह से संकल्पित हो गये थे। यह ज्ञात होने पर भी कि असाध्य बीमारी में अस्पताल की चिकित्सा के साथ अपने परिणामों को सुधारा नहीं जा सकता है। मोक्षपथ की ओर जाना कठिन है। परंतु मोक्ष का द्वार समाधि धारण करने पर ही खुलता है। मन में गुरु के प्रति सच्ची श्रृद्धा-भक्ति हो, तो किसी का भी जीवन तर सकता है। अशुभ कर्म कट सकते हैं। शुभ कर्मों की प्रवृत्ति हो सकती है। इसी मुक्तिपथ को अंगीकार करने की संकल्प भावना से, कंकर से शंकर बनने के लिये गुरु जी के पादमूल में धर्मतीर्थ चन्द्रगिरि पहुंचे थे दिगम्बर जैनधर्म एकमात्र ऐसा धर्म है। जो जीवन जीने और समाधिपूर्वक मरने की कला सिखाता है। गुरु चरणों में आत्मसाधना करते हुये मरण समाधि, संल्लेखना धारण करने की क्रिया सिखाता है। क्रम से नियमानुसार व्रत-संयम पालने की क्रियाएं सिखाता है। जो घर-परिवार में रहते हुये नहीं किया जा सकता है। मिथ्या पथ छोड़ने, निष्कलंक चैतन्य भावना साधने के लिये गुरुभक्त संजय ने गुरु जी 108 आचार्य श्री विद्यासागर जी महायतिराज के पावन चरणों में श्रीफल समर्पित करते हुये हाथ जोड़कर सविनय, सादर निवेदन किया। अंतर्मन से कहा- गुरु जी में घर-परिवार का मोह छोड़कर विषय कषाय और परिग्रह को त्याग कर, मोक्षमार्ग पर बढ़ने के लिये गुरु जी की चरण-शरण में अनुग्रह करने आया हूँ। मुझे इस तन-पिंजर से मुक्ति दिलाने के लिये आप ही समर्थ हैं।

लोकोत्तर जीवन के लिये स्व विवेक से आपकी छत्र-छाया में व्रत-संयम धारण करने के लिये आया हूँ। शरीर तो नश्वर है। सांसारिक बंधनों से मुक्त होकर अनादि से अनंत की यात्रा की ओर बढ़ना चाहता हूँ।

आत्मकल्याण और आत्मसाधना के लिये आपकी शरण में आया हूं। इस जीवन-मरण से मुक्ति के लिये समाधि चाहता हूं। आपका अनुगामी हूं, जैसा आप कहेंगे, जो आज्ञा देंगे, पालन करूंगा। सबसे क्षमा चाहता हूं। सबको क्षमा करता हूं। यही प्रार्थना है।

शांति-वीर-शिव-ज्ञान परम्परा के विद्या सिंधु ने शरणागत साधक की समाधि के प्रति दृढ़ वैराग्य भावना जानकर आशीर्वाद देते हुये कायोत्सर्ग करने को कहा। बस इसी क्षण से साधक की परम शक्ति जागृत होने लगी थी। कहा भी गया है-

महाकष्ट पाता जो करता, पदार्थ जड़ देह संयोग, मोक्ष महल का पथ है, सीधा जड़ चेतन का पूर्ण वियोग। शुभ और शुद्ध परिणामों से कर्मों का क्षय होता है। आत्मतत्त्व शरीर से ही प्रकट होता है। जीवन में गुरु के सान्निध्य के बिना मुक्ति कहां संभव है ? सदगुरु का सान्निध्य प्रगाढ़ पुण्य

से मिलता है। गुरु ही हृदय की ग्रंथियों को खोलकर अंतःकरण को प्रकाशित कर देता है। उसकी वचन रूपी औषधि से तन-मन के रोगों की निवृत्ति हो जाती है। सत्य, शिव और सुंदर का बोध कराने में गुरु सक्षम होता है। आत्मा का परमात्मा से साक्षात्कार का सद्पथ गुरु ही दिखाता है। गुरु की भक्ति ही सम्पदा है। स्वयं तरते हैं और भक्तों को तार देते हैं। संयम से साधना मनुष्य पर्याय की अमूल्य निधि है। जब तक जीवन है, देह में चेतना है, क्रियाएं साथ-साथ चलती हैं। अंतिम समय में मन आत्मा में लीन हो जाता है। चेतना के प्रभाव से रोग दूर होने लगते हैं। कहा गया है ''तन का रोग न रोग है, मन का रोग ही रोग, तन-मन के दो रोग से, भव भ्रमण का योग''।

समाधि सम्राट के दर्शन पश्चात् साधक संजय भैया के मन में असीम प्रसन्नता थी। अब आचार्य श्री जी के निर्देशनानुसार क्या लेना है ? क्या नहीं ? यह अपने आशीष वचनों से विशाल बाल ब्रह्मचारी संघ के महानायक आचार्य भगवन् ने समझा दिया था। वे स्वयं दिन में तीन-चार बार बाल ब्रह्मचारी रोहित भैया जी भी स्वास्थ्य का हालचाल जान लेते थे। भैया जी हर दिन पूज्य गुरुवर्य के पास पहुंचते थे। तपोनिधि से उन्हें कुछ न कुछ गुरु मंत्र मिलते रहते थे। मंगलकारी तपोनिधि ने हर दिन मंगतरामजी की बारह भावना -''कहां गये चक्री, जिन जीता भरत खण्ड सारा का स्मरण करने को कहा। बोले- अपनी आत्मा का धर्म-ध्यान कर रहे हो, यही करना है।''

पहले ही दिन महाव्रती ने पूछ लिया था- ''आठ दिन रूकोगे।'' साधक ने सहजता से हां कह दी थी। ऐसा लगने लगा कि ज्ञानसागर जी के लघुनंदन को वचन सिद्धि हो। यह प्रमाण तब समझ में आया, जब आठवें दिन पूर्णिमा की चांदनी में समाधि शतक की संल्लेखना की साधना का अंतिम समय निकट लगने लगा था। रोहित भैया जी को स्वास्थ्य अनुकूल नहीं दिखा। उन्होंने तुरन्त गुरु जी को बता दिया। आत्मशिल्पी ने साधक को तत्काल अपने पास बुलवा लिया। अब साधक के कदम कहां रूकने वाले थे। सामने जब अरिहंत हों, संत निकट हों, तो समाधि मरण की महायात्रा स्वतः सुहावनी हो जाती है। अन्तर्मन के गहरे आनन्द की अनुभूति को व्यक्त करने की सामर्थ्य शब्दातीत होती है।

परम उपकारी संत शिरोमणि विद्यासागर जी की अनंत कृपा के प्रसाद से इंदौर पंचकल्याणक महामहोत्सव में संजय भैया और पत्नि नीलू को भगवान का माता-पिता का पात्र बनने का सौभाग्य सुलभ हो गया था। ऐसे दुर्लभ पुण्यशाली धर्मस्थ जीवन की यात्रा के अंतिम पड़ाव में शारीरिक व्याधि से ग्रसित होने पर भी विचलित नहीं हुये। अपने चिर परिचित अंदाज में कहा- ''गुरु जी हैं, तो चिंता काहे की करें'' अब तक चल रही अपनी समस्त औषधियों का त्याग कर दिया। गुरु शरण पाकर ऐसा लग रहा था मानो जन्म-जन्मान्तर की प्यास पूरी हो गई हो। सभी को आप स्वास्थ्य दिख भी रहे थे। मुख मण्डल दिव्य आभा से आलोकित हो रहा था।

नियति को कुछ और ही मंजूर था। जीवन के इस संध्याकाल में समाधि-साधक को पंच परमेष्ठी में समाहित अनादिनिधन णमोकार महामंत्र सुनाया जा रहा था। जीवन में की गई तीर्थों की वंदना का स्मरण करने का कहा गया। स्वयं समाधि साधक, मुनि श्री जी और भैया जी के मुखारबिंद से महामंत्र उच्चरित हो रहा था। पूर्णिमा की रात जैसे नये ही लोक की और साधक की

देह को आत्मा से पृथक करने को आतुर हो रही थी। उपस्थित श्रद्धालुओं के द्वारा उच्चारित णमोकार महामंत्र की ध्वनि से पूरा परिसर गुंजायमन हो रहा था। साधक की अंतिम समय की दृढ़ता और अधिक दृढ़तर होकर परम शक्ति में परिवर्तित होने लगी थी। अंत समय की निकटता में समाधि-धारक सचेत था वह बोला-''मेरी यह सैय्या-तकिया हटा दों।'' यह सुनकर श्रद्धालुओं को ऐसा प्रतीत हुआ कि आत्मस्थ भक्त अब अधिक स्वस्थ्य और प्रसन्न है। उसके चेहरे पर दिव्य आभा झलक रही थी। यथार्थ में इस नश्वर शरीर से मुक्त होने का अनंत यात्रा का सुखद क्षण था। सामने चन्द्रप्रभु भगवान वेदी में विराजमान थे। बंद होते नेत्र मानो पूज्य मुनिश्री क्षमासागर जी की इस रचना के माध्यम से यह संदेश दे रहे थे ''दीप उनका, रोशनी उनकी, सहारा भी उनका, मैं चल रहा हूं। प्राण उनके, हर सांस उनकी, मैं जी रहा हूं।''

वात्सल्य मूर्ति गुरु जी ने उद्बोधन देते हुये कहाः ''कुछ मलाई लगाई, कुछ बर्फ की डली रखी और लगातार छह बार बोलकर सुनाया- ओम, ओम, ओम, ओम, ओम, ओम।'' भक्त भी आंखें खोलकर दोहराता रहा। जैसे कह रहा हो आप अभी मुझे ऐसा मत समझो। इस बीच तपोसाधक बोले ''भीतर है अभी पेट्रोल। इस प्रकार जब होता है, तब साइंस भी साइलेंस हो जाता है। अब वह बोल नहीं सकता। विश्व भी आज इसी ओर देख रहा है। सारी थ्योरियां हीन होती चली जा रही हैं। भीतर वाला वही काम करेगा।'' बोधि समाधि की राह पूरी हो गई। प्यासे को अमृत मिल गया। आत्मा से परमात्मा बनने की साधना विद्या गुरु की छत्रछाया में मोक्षधाम की ओर उर्ध्वगमन हो गई। समाधि का उपसंहार महामहोत्सव में परिवर्तित हो गया।

कहा गया है- ''मिलता साधक भक्त, अपने तपो साधक की भक्ति'' गुरुभक्त हमारे संजय भैया को जब कभी किसी कार्यक्रम को प्रारंभ करते थे, तब वह गुरु का स्मरण करते हुये भक्ति भाव से गाते थे- ''तरणि विद्यासागर गुरु, तारो मुझे ऋषीश।'' करूणाकर करूणा करो, कर से दो आशीष।

धर्मनिष्ठ परिवार में पिता जी खेमचंद जी और माताजी विद्याबाई जी निवासी देवरी जिला सागर के यहां तृतीय पुत्र संजय भैया का जनम हुआ। आपके दो बड़े भाई संतोषकुमार जी और राकेशकुमार जी तथा छोटे अनुज संजीवकुमार जी हैं। पत्नि श्रीमती नीलू जी और दो पुत्रियां बड़ी कुमारी साक्षी शिक्षा सी.ए. और छोटी कुमारी सृष्टि एम.ए. है। बहिनें तीन बड़ी गुणमाला जी पति विजयकुमार जी विदिशा, सरोज जी पति अभयकुमार जी तेन्दूखेड़ा और प्रो. डॉ. रीना पति अभिषेक जी हैं। संजय भैया पहली बार बीनाबारहा में अंतर्यात्री आचार्य श्री जी की शरण मेंआये थे। तब ही से आचार्य श्री जी के आशीर्वाद से चल रहे निर्माण कार्यों से जुड़ गये थे। शिक्षा इंजीनियरी की ग्रहण की थी किंतु जीवन के अंतिम समय तक भव्य मंदिरों और धर्मायतनों के निर्माण की जिम्मेदारी का निर्वाह पूर्ण समर्पण से करते रहे। बीनाबारहा और श्री दिगम्बर जैन सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र रेवातट, नेमावर, देवास और दयोदय चेरिटेबल फाउण्डेशन ट्रस्ट, इंन्दौर जहां प्रतिभा स्थली ज्ञानोदय (कन्या) विद्यापीठ है, इन संस्थानो के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के पहले कार्यकाल में मध्यांचल के महामंत्री और उसके बाद के कार्यकाल में तीर्थ जिर्णोद्धार कमेटी के अध्यक्ष पद के दायित्व का निर्वाह किया।

समाधि की साधना : जीवन में पुण्य पाप बहुत होते हैं। किंतु शेष जीवन में शुभ ही नहीं शुद्ध को अपनाना चाहिये। अजर-अमर आत्मा अनंतों बार शरीर को छोड़ती रही है। उसका मरण कभी नहीं होता है। रोग शरीर में होते हैं। मोह के कार ण शरीर में वेदना मालूम पड़ती है। हम संसार में बार-बार भटकते आये हैं इसी कारण कर्म बंधते रहते हैं। पूर्व भवों में किये कर्मों के कारण परिषह होता है। कर्मों की निर्जरा धीरे-धीरे होती है। पुण्य अर्जित करना अलग बात है और कर्मों की निर्जरा करना अलग बात है। पुण्य अर्जित करके ही कर्मों का क्षय किया जा सकता है। जितनी शक्ति सिद्ध भगवान के पास है, उतनी ही शक्ति हमारी आत्मा में भी विराजमान है। अंतर इतना ही है कि सिद्ध आत्माओं ने अपने कर्म मल को दूर कर लिया है और हम ऐसा नहीं कर पायें हैं। पुरुषार्थ करके हम भी उनके जैसा बन सकते हैं । मन और देह के विकारों को दूर करने के लिये तप और उपवास किये जाते हैं । मैं आनंद स्वरूप हूँ। सुख स्वरूप हूँ। पूर्ण रूप से निरोगी हूँ। मैं आत्म तत्व हूँ। ऐसे विचार से अपनी आत्मा को निर्भर या हल्का करना अपने हाथ में हैं।

सर्वज्ञात है कि संजय भैया ने आचार्य श्री का सान्निध्य पाकर इस जीवन में जो सेवा कार्य किये उसका भरपूर फल गुरु जी का वरदहस्त पाकर अर्जित कर लिया था।

भाव्यांजलि: मुनि श्री प्रमाणसागर जी: '' संजय मैक्स पूज्य आचार्य भगवन् के चरणों में बहुत साल तक रहे। उनका ऐसा मरण जीवन के अंतिम काल तक गुरु चरणों में हुआ। निश्चित ही संजय मैक्स परम पूज्य गुरुदेव के कृपा पात्रों में से एक थे। बहुत निकटता थी। उन्होंने गुरुदेव के मार्गदर्शन में बनने जा रहे उपक्रमों में अपनी बहुत अच्छी भूमिका निभाई। उनने जीवन भर सेवा की, गुरु की तीर्थ की, जितनी सराहना की जाये कम है। मैं तो कहूंगा गुरुदेव का उन पर विश्वास और भरोसा था। उनसे हमेशा काम लिया। बीमारी तो किसी को भी नहीं छोड़ती भले ही बीमारी आई, पर उनने बीमारी से हार नहीं मानी। धर्मी व्यकित पर बहुत सारे उपसर्ग होते हैं। भगवान पारसनाथ ने तो दस भव तक कोई पाप नहीं किया, फिर भी उन पर बहुत भयानक उपसर्ग आया। उसको नकारा नहीं जा सकता। यह तो कर्म संयोग था। संजय भैया ने बीमारी को हरा दिया। आपको पता होना चाहिये, उनका मरण नहीं हुआ। उनकी संल्लेखना हुई गुरु चरणों में सारे मोह भाव को त्यागते हुये 8.43 मिनट पर शाम को णमोकार जपते हुये उनका समाधिमरण हुआ। इस बात का प्रमाण है कि उन्होंने जीवन भर जो सेवा की उसका फल प्राप्त कर लिया है। लोगों को भी सीख लेना चाहिये। अच्छा करने वाले को अच्छा फल मिलता है।''

निर्यापक मुनिश्री प्रसादसागर जी: संजय जैन (देवरी-सागर) इंजीनियर रहे हैं। इंदौर में अपना व्यापार किया। मंदिर आदि निर्माण कार्यों को देखते रहते थे। आचार्य श्री जी के प्रति बहुत समर्पित रहे हैं। उन्होंने अपनी जिन्दगी में जो-जो कुछ गुरुदेव ने कहा जितनी ताकत थी करने की, उतना उन्होंने किया। आचार्य श्री जी का गजब का विश्वास जीता ।

निर्यापक मुनि श्री संभवसागरजी: वे गुरुदेव के चरणों में संबोधन में बहुत अच्छे से व्यतीत कर रहे थे। उस दिन दो घंटे पहले ही उन्होंने गुरुदेव के चरण स्पर्श किये। बहुत अच्छे से गुरुदेव ने संबोधन किया। उसी दिन रात को उनका स्वर्गारोहण हो गया। गुरुदेव के जितने भी प्रकल्प कुण्डलपुर, नेमावर, इन्दौर आदि में संजय मैक्स का नाम सबसे अग्रिम था। पूज्य आचार्य भगवन के चरणों में बहुत साल रहे। ऐसा साइलेन्ट जीवन मरण से स्वर्गारोहण किया।

मुनिश्री अजितसागर जी: उनके बारे में हम लोग बोलते थे, दुनिया में कोई पुण्यात्मा है, तो वह संजय है। जिसको आचार्य श्री जी का वरदहस्त प्राप्त है। ऐसे मैक्स भैया आठ दिन पहले गुरुदेव के श्री चरणों में समर्पित हो गये। जिनका समर्पण अद्वितीय है।

आर्यिका आदर्शमती माताजी: ''आचार्य श्री जी के आशीर्वाद से उनके द्वारा अनेक क्षेत्रों में कार्य होते थे।''

संजय मैक्स ने आचार्य भगवंत के सान्निध्य में संल्लेखना का व्रत लेकर के जो अपने जीवन का भव सार्थक बनाया है वह कार्य उनका अति सराहनीय रहा है। सल्लेखना ग्रहण करने का भाव बहुत दुर्लभ है। और उन्होंने दुर्लभ संल्लेखना को ग्रहण किया। जीवन के वास्तविक स्वरूप को समझ कर संल्लेखना व्रत को ग्रहण किया। उससे भी अधिक दुर्लभ है अंतिम श्वांस पंच परमेष्ठी के स्मरण से अरहंत बोलकर के निकल जाए। सभी को महसूस हो रहा है कि वे आचार्य श्री जी भगवंत के हनुमान थे। कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। उनकी क्षति इंदौर समाज ही नहीं पूरे भारत को महसूस हो रही है। हम सब मिलकर के यही प्रार्थना करते हैं , उनकी आत्मा का कल्याण हो।

आर्यिका पूर्णमती माताजी- ''मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि वह बीमार हैं। उन्होंने पूरी क्लास अटैण्ड की थी। जिसे गुरु जी की कृपा और गुरु का स्नेह मिलता है, उसे क्या पीड़ा का ऐहसास हो सकता है। जैसे पता चला कि उनकी सम्यक सल्लेखना हो रही है, त्यागपूर्वक मरण हो गया है। बहुत सौभाग्यशाली होते हैं लोग तो गुरु के दर्शन करने के लिये तरसते हैं, दर्शन मिल जाये तो आशीर्वाद के लिये तरसते हैं और परिवार के लोगों ने कहा स्वास्थ्य ठीक नहीं है। आचार्य भगवन ने कहा क्या ले जा रहे हो ? परिवार के लोगों ने कहा भगवन आप आज्ञा दीजिये क्या करें ? आचार्य श्री जी के शब्द अनायास निकलते हैं। सच कहते हैं। वचन सिद्ध है आचार्य भगवन को। आचार्य श्री ने कहा आठ दिन रखकर के देख लों और आठवें ही दिन उनकी सल्लेखना हो गई।''

ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी- आचार्य श्री जी के सान्निध्य में समाधिमरण की अंतिम इच्छा थी, जो पूर्ण हो गई।

प्रतिष्ठा सम्राट बाल ब्रह्मचारी विनय भैया जी, (बण्डा-सागर)- इन्दौर पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर एक मात्र ऐसे पात्र भी हैं, जिन्होंने अपने प्राण भी गुरुदेव के चरणों में रख दिये हैं। शरीर उनका रहा। लगता है प्राण गुरुदेव में उनके रहे। उनको भगवान के माता-पिता बनने का अवसर मिला।

संजय भैया मैक्स का समाधि मरण हो जाने पर मुनिश्री आगमसागरजी, निरोगसागर जी, दुर्लभसागर जी और संधानसागर जी ने भी अपना भाव्याजंलि व्यक्ति की।

चलो देखें यात्रा

मुक्तागिरि

महत्त्व एवं दर्शनः स्व. श्रीमान नत्थुसार पासूसा कलमकर श्रीमोती खंड एवं श्री गैंदालाल जी बडजात्या ने अंग्रेजों के जमाने में सन् 1928 में यह पहाड़ी खरीदकर सिद्धक्षेत्र को संरक्षित किया। जैन समाज के लिये यह दूर दर्शिता वाला ऐतिहासिक फैसला था।

अधिकांश मंदिर 15वीं सदी के प्राचीन मंदिर है। पहाड़ पर 52 एवं तलहटी पर 2 मंदिर है। तलहटी मे धर्मशाला के सामने मंदिर है। सम्राट श्रेणिक बिम्बसार द्वारा गुफा मंदिर बनाने का उल्लेख है। तलहटी से वंदना लगभग डेढ़ किलोमीटर है। अनेकों मुनियों के निर्वाण होने से क्षेत्र सिद्धक्षेत्र है। यहां का प्राकृतिक सौंदर्य अपूर्व है। मंदिरों पर क्रमसंख्या है।

10वें नम्बर का मंदिर पर्वत के गर्भ में है। यह मंदिर मेंडागिरी के नाम से प्रसिद्ध है। भगवान शांतिनाथ की प्रतिमा दर्शनीय है। मंदिर एक में पार्श्वनाथ की सप्तफण मंडित प्रतिमा प्राचीन शिल्पकला का नमूना है। कार्तिक पूर्णिमा को मेला एवं रथयात्रा का आयोजन होता है। जनश्रुति के अनुसार यहां पर केशर की वर्षा होती थी।

शांतिनाथ मंदिर के समीप से 250 फीट की ऊँचाई से वर्ष भर जल प्रपात की धारा गिरती है। प्रपात के आसपास सारे मंदिर हैं। पूरा क्षेत्र रमणीक एवं हिल स्टेशन जैसा है।

मार्गदर्शनः अमरावती- परतवाड़ा बैतूल रोड़ पर, परतवाड़ा से 6 किमी, पर खरपी मोड़ आता है। यहां से क्षेत्र 7 किमी है। अमरावती से बसें जीपें तथा परतवाड़ा से ऑटो/टैक्सी उपलब्ध होती है। बैतूल साईड से बस से आने वालों को खरपी उतरना चाहिये। यहां मोड़ पर जैन मंदिर है। इंदौर एवं अजंता से आने वाले अकोला/अकोट, अचलपुर, परतवाड़ा होते हुये मुक्तागिरि पहुंच सकते हैं। जयपुर-चैन्नई-दिल्ली साईड से आने वाले बैतूल स्टेशन उतरें। यहां से बस/टैक्सी साधन हैं। 100 किमी।

परतवाड़ा से बस सुबह 10 बजे एवं शाम 4 बजे। अमरावती से रणजीत ट्रेवल्स गांधी चौक से सुबह 10 बजे, सायं 5.30 बजे (0721-2574257) अमरावती-65, अकोट- 60, बैतुल-100, परतवाड़ा-14, कारंजा-130, चिखलदरा हिल स्टेशन- 65 किमी, इंदौर- 380, कारंजा-50, नेमगिरि-120, धर्मशाला से 1 किमी पहाड़ी पर गोमुख है।

तत्वार्थ सूत्र का अन्तः परीक्षण

लेखक– पं. फूलचन्द्र जैन शास्त्री

तत्त्वार्थ सूत्र यह नाम बतलाता है कि इसमें तत्त्वार्थ विषयक सूत्रों का संग्रह किया गया है। जिनागम में सात तत्त्व और नौ पदार्थ कहे गये हैं। सात तत्त्वों का कथन करते समय पुण्य और पाप स्वतंत्र नहीं गिने जाते, वे आस्रव और बन्ध में अन्तभूर्त हो जाते हैं। तथा नौ पदार्थों का कथन करते समय पुण्य और पाप आस्रव और बन्ध से अलग गिने जाते हैं। सात तत्त्वों और नौ पदार्थों की कथनी में यही अन्तर है। दिगम्बर सम्प्रदाय प्रचलित ग्रंन्थों में ये दोनों परम्परायें स्वतंत्र रूप से अपनाई गई हैं। पर श्वेताम्बर सम्प्रदाय में नौ पदार्थ विषयक परम्परा ही अधिकतर पाई जाती है। सात तत्त्व-विषयक परम्परा तत्त्वार्थाधिगम सूत्र को छोड़कर अन्यत्र एक तो पाई नहीं जाती, पाई भी जाती है तो वह बहुत बाद के एक-दो ग्रन्थों में ही पाई जाती है। तात्पर्य यह कि सात तत्त्व-विषयक मान्यता को श्वेताम्बर सम्प्रदाय में तत्वार्थसूत्र के बाद भी विशेष महत्व नहीं दिया गया है। सर्वत्र तत्त्व या तत्त्वार्थ रूप से नौ पदार्थों का ही उल्लेख किया जाता है। अतः इस विषय का साधार विचार कर लेना आवश्यक हो जाता है कि तत्त्वार्थसूत्र में सूत्रकार ने विवेचन करने के लिये जो सात तत्त्व स्वीकार किये हैं उस पर किस सम्प्रदाय की मान्यता का प्रभाव है। इस विचार के लिये निम्न विभाग आवश्यक प्रतीत होते हैंः-

1. सूत्र, भाष्य और उसकी टीकाएँ।
2. सात तत्त्व और नौ पदार्थों के विषय में दोनों सम्प्रदायों के आगम-प्रमाण।

सूत्र, भाष्य और उसकी टीकाएँ : तत्त्वार्थ सूत्र के पहले अध्याय के चौथे सूत्र में सात तत्त्वों के नाम गिनाये हैं। इस सूत्र की सर्वार्थसिद्धिकार और भाष्यकार ने जो व्याख्या की है उसमें अन्तर है। उक्त सूत्र में सूत्रकार ने प्रथमपद बहुवचनान्त और द्वितीय (तत्त्वं) पद एक वचनान्त रक्खा है। इसका सर्वार्थसिद्धिकार ने विशेषण विशेष्य भाव के रहते हुये भी कामचार देखा जाता है इस अभिप्रायनुसार समर्थन किया है। पर भाष्यकार ने जो कुछ लिखा है वह भिन्न ही है। वे लिखते हैं।

''जीवा अजीवा आस्रवो बन्धः संवरो निर्जरा मोक्ष इत्येष सप्तविधोऽर्थस्तत्त्वम्। एते वा सतपदार्थोस्तत्त्वानि।''

विशेषण विशेष्यभाव के रहते हुये कामचार (यथेच्छ प्रयोग) को भाष्यकार भी स्वीकार करते हैं। भाष्य में ऐसे अनेक स्थल पाये जाते हैं जहां द्विवचनान्त के साथ एकवचनान्त, बहुवचनान्त के साथ एक वचनान्त आदि प्रयोग किये गये हैं। इसलिये सूत्र में जो कामचार है उसके निवारण के लिये भाष्यकार 'इत्येप' आदि कहते होंगे यह तो कहा नहीं जा सकता है। फिर इस प्रयोग का क्या कारण है कि यह विचारणीय हो जाता है।

जहां तक शैली के सम्बन्ध में विचार किया जाता है तो इसी प्रकार के अन्य सूत्रों पर लिखे गये भाष्य को देखने से यही प्रतीत होता है कि उनके प्रकृत लेखन से शैली का कोई सम्बन्ध नहीं

हैं। उदाहरण के लिये पहले अध्याय का 9वां सूत्र ही ले लीजिये। वहां भाष्यकार 'एतत्पंचविधं ज्ञानम्' इतना ही कहकर आगे बढ़ गये हैं। वहाँ 'एताति वा पंच ज्ञानानि' आदि विकल्पान्तर नहीं सुझाया। भाष्य के टीकाकारों ने इसका एक समर्थन किया है। सिद्धसेन गणि लिखते हैं-

''सामान्येन विवक्षिता सतो सैकत्वमिव विभर्तिः मुख्यया तु कल्पनया वस्तुधमेत्वात् प्रतिवस्तु भेत्तव्या भवति। तदा तु बहुवचननैव भवितव्यमेवेति।''

अर्थात्- जीवादि अर्थों में रहने वाली स्वसत्ता जब सामान्यरूप से विवक्षित होती है तब वह एक कही जाती है और जब मुख्य कल्पना से विचार करते हैं तो वह वस्तु का धर्म होने के कारण प्रत्येक वस्तु में अलग-अलग हो जाती है। अतः उस समय 'तत्त्व' पद बहुवचन होना चाहिये।

यह तो स्पष्ट है कि तत्त्वार्थसूत्र में तत्त्वों का प्रतिपादन सामान्यरूप से विवक्षित नहीं है, तभी तो उनके सात नाम गिनाये। पर सिद्धसेनगणि ने भाष्य के उक्त अंश का जो अभिप्राय निकाला है तदनुसार मूलसूत्र में तत्त्वपद एक वचनान्त और बहुवचनान्त इस प्रकार दोनों प्रकार से होना चाहिये। भाष्यकार के उक्त भाष्यांश का यदि यही अभिप्राय मान लिया जाये तो कहना होगा कि मूल सूत्रकार और भाष्यकार ये एक व्यक्ति नहीं हैं, किन्तु भिन्न भिन्न हैं। स्वयं सूत्रकार इस प्रकार प्रयत्न करेगा, यह विचारणीय हो जाता है।

इसी प्रकार छठे अध्याय के श्वेताम्बर-सम्मत सूत्र- पाठ में पुण्य और पाप विषयक दो सूत्र माने गये हैं, जिनकी क्रमसंख्या 3 और 4 हैं । पर पाप विषयक सूत्र के विषय में मनभेद हैं। सिद्धसेनगणि की टीकानुसार तो 'अशुभः पापस्य' यह चौथा सूत्र होता है और हरिभद्रसूरि की टीकानुसार 'शेषं पापमिति' यह चौथा सूत्र होता है। इन दोनों सूत्रों में किसी भी सूत्र पर भाष्य नहीं पाया जाता है, यह निश्चयपूर्वक हो जाता है कि भाष्यकार ने इनमें से किसे सूत्र में स्वीकार किया होगा। इस समय जो प्रमाण पाये जाते हैं उनके अनुसार विचार करने से तो यही प्रतीत होता है कि 'अशुभः पापस्य'यह भाष्यमान्यसूत्र नहीं है, क्योंकि, सिद्धसेनगणि ने 'अशुभः पापस्य' इस सूत्र का जो भाष्य माना है वह इससे पहले के 'शुभः पुण्यस्य' का ही है इसका नहीं। उसमें पुण्य प्रकृतियों की ही सूचना दी गई है इस लिये चौथे सूत्र का भाष्य कहना असंगत है। तथा तत्त्वार्थसूत्र में पूर्व सूत्र में जो विषय कहा गया है शेष रहे विषय का प्रतिपादन यदि पारिशेषन्याय से जाता है तो भाष्यकार उसके लिये स्वतंत्र सूत्र आवश्यकता नहीं मानते हैं जैसा कि उनकी कथन से मालूम पड़ता है। हरिभद्रसूरि ने अपनी टीका 'अशुभः पापस्य' इसे कोई स्थान नहीं दिया इसके भाष्य को पूर्व सूत्र का ही भाष्य माना है। यही कहा जा सकता है कि यह भाष्य सम्मत सूत्र है। वह कब और कैसे जुड़ गया यह प्रश्न विचाररत है जिस पर आगे प्रकाश डाला गया है।

हरिभद्रसूरि ने 'शेषं पापसिति' इस प्रकार चौथा सूत्र माना है वह सिद्धसेन गणि की टीका भाष्य का अंश माना गया है। इससे इतना तो निषिद्ध हो जाता है कि यह पाठ भाष्यसम्मत है। विचारणीय यह रह जाता है कि यह सूत्र है या ना पर इसको विचार करते समय हमें आठवें अध्याय 'अतोऽन्यत्पापमिति' इस पाठ को भी सामने लेना आवश्यक प्रतीत होता है, क्योकि, भाष्य यहां जिस विषय की सूचना और 'शेषं पापमिति' पाठ ही कर रहे हैं उसी विषय की सूचना वे आठवें

अध्याय 'अतोऽन्यत्पापमिति' पाठ द्वारा भी कर रहे हैं।

इसे सूत्र मानने और न मानने के विषय में इतना ही कहा जा सकता है कि सर्वत्र भाष्य की जो नीति अपनाई है तदनुसार यह भाष्यांश ही होना चाहिये। यदि स्वतंत्र सूत्र माना जाये तो आठवें अध्याय में 'अतोऽन्यत्पापम्' को सूत्र रूप से स्वीकार नहीं करने का कोई सबल प्रमाण नहीं पाया जाता भाष्य न पाये जाने की युक्ति दोनों सूत्रों के लिये समान है।

सर्वार्थसिद्धिमान्य सूत्रपाठ मूल है या नहीं विषय पर तो इसे लेखमाला के अनन्तर फिर प्रकाश डाला जायेगा। पर दूसरे अध्याय के अन्तिम सूत्र की वृत्ति में पाठान्तर की सूचना, चौथे अध्याय के 22वें सूत्र की वृत्ति में 'असमर्थ सूत्रतः कथं मन्यते' इत्यादि ऐसे स्थल हैं, जिनसे भी यह अनुमान किया जा सकता है कि सर्वार्थसिद्धिवृत्ति मूल सूत्रों के आधार से लिखी गई होगी। इसलिये सर्वार्थसिद्धि में निबद्ध 'अशुभः पापस्य' यह सूत्रांश सर्वार्थसिद्धिकार का न होकर मूल सूत्रकार ही रहा होगा, यह कहा जा सकता है। पर एक तो भाष्यकार ने इसे स्वीकार ही न किया होगा, यदि स्वीकार भी किया होगा तो वह भाष्य के अवयवरूप से ही स्वीकार किया होगा। इसे मिलाकर यदि समूचा भाष्य पढ़ा जाता है तो उसका स्वरूप निम्नप्रकार होता है। जो कि 'शुभः पुण्यस्याशुभः' पापस्य को एक सूत्र मान लेने पर अपने रूप में परिपूर्ण कहा जा सकता है। यथा-

'शुभो योगः पुण्यस्य आस्त्रवो भवति अशुभः पापस्य । तब सद्वेद्यादि पुण्यं वच्यते । शेषंपापमिति।'

इसमें दो अनुमान किये जा सकते हैं। एक तो श्वेताम्बर परंपरा में 'अशुभः पापस्य' यह सूत्र कैसे बना, इस पर भी इसमें प्रकाश पड़ जाता है। सिद्धसेनगणि के सामने कदाचित यह प्रश्न रहा हो कि 'शुभः पुण्यस्य' इस सूत्र की व्याख्या रूप से भाष्य में इसे कैसे स्थान दिया जा सकता है इसलिये उन्होंने इसे दूसरा सूत्र मान लिया हो। दूसरे स्वयं भाष्यकार संदेहास्पद हों कि इसे भाष्य में स्थान दिया जाये या पारिशेषन्याय की सरणी के अनुसार अनुक्त के समुच्चय से काम निकाला जाये। इस द्विधावृत्ति के कारण किसी पुसतक में वह जुड़ गया हो और किसी में न जुड़ा हो। यदि यह दूसरा अनुमान ठीक हो तो यह विवाद का सारा मामला समाप्त हो जाता है। तथा इससे यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि सूत्रकार और भाष्यकार ये अलग-अलग दो व्यक्ति होने चाहिये।

सात तत्त्व और नौ पदार्थों के विषय में दोनों संप्रदायों के आगमों के प्रमाण: अब हम दोनों सम्प्रदाय के आगमों के प्रमाण उपस्थित किये देते हैं , जिससे पाठकों को इस विषय के निर्णय करने में सहायता मिले कि तत्त्वार्थ सूत्र पर किस सम्प्रदाय की मान्यता की गहरी छाप है:-

भगवान कुन्दकुन्द लिखते हैं -

दव्वत्थिकायछप्पण तथपयत्थेसु रात्तणवएसु।64

अर्थ- द्रव्य छह हैं, अस्तिकाय पांच हैं, तत्त्व सात हैं और पदार्थ नौ हैं।

छद्दव्व एव पयत्था पंचत्थी रात्त तथ णिद्दिष्टा।

रादहइ ताण रूपं गो सद्दिट्ठी गुणेयव्वो ।।20।।

अर्थ- द्रव्य छह हैं, पदार्थ नौ हैं, अस्तिकाय पांच हैं और तत्त्व सात हैं। इनके स्वरूप का जो श्रद्धा करता है उसे सम्यग्दृष्टि समझना चाहिये।

राव्वविरओ वि भावहि णव य पयत्थाई सत्त तवाई।
जीव रामाराई गुणी चउदरा गुणगणणाभाई ।।65 ।। - भावप्राकृत

अर्थ- सर्वविरत मुनि भी नौ पदार्थ, सात तत्त्व, चौदह जीवसमास और चौदह गुणस्थानों का चिन्तवन करें।

श्वेताम्बर परम्परा में सात तत्त्वों का उल्लेख कहीं पाया जाता है। स्वयं श्रद्धेय पं. सुखलाल जी तत्त्वार्थ सूत्र की भूमिका में लिखते हैंः-

''इस मीमांसा में भगवान ने नवतत्त्वों को रखकर इन पर की जाने वाली अचल श्रद्धा को जैनत्व की प्राथमिक शर्त के रूप में वर्णन किया है। त्यागी या गृहस्थ कोई भी महावीर के मार्ग का अनुयायी तभी माना जा सकता है जबकि उसने चाहे इन नवतत्त्वों का यथेष्ट ज्ञान प्राप्त न किया हो, तो भी इनके ऊपर यह श्रद्धा रखता ही हो, अर्थात् जिन कथित ये तत्त्व ही सत्य हैं ऐसी रूचि प्रतीति वाला हो। इस कारण से जैन दर्शन मे नव तत्त्व जितना दूसरे किसी का महत्व नहीं है। ऐसी वस्तुस्थिति के कारण ही आ. उमास्वाति ने अपने प्रस्तुत शास्त्र के विषय रूप से इन नवतत्त्वों को पसंद किया।''

कविता

पात्र-अपात्र

गाय ने घास खाकर बाल्टी दूध से भर दी
सर्प ने पिया दूध उगला जहर
भेंट में किसी को मौत वर दी
बस अंतर यही है पात्र अपात्र की पहचान है
इसी पहचान से पात्र तो दिल में उतर जाता है
अपात्र दिल से उतर जाता हैं। पात्र पूज्य अपात्र अपूज्य होता

चारित्र्य का आधारः संयम और निष्ठा

लेखकः श्री काका कालेलकर

अपने जीवन को शुद्ध और समृद्ध बनाने की साधना उन्होंने की है, वे अनुभव से कहते आये हैं कि ''आहारशुद्धो सत्त्वशुद्धिः''। इस सूत्र के दो अर्थ हो सकते हैं, क्योंकि सत्व के दो अर्थ माने हैं- शरीर का संगठन और चारित्र्य। मगर आहार शुद्ध है, याने स्वच्छ है, ताजा है, परिपक्व है, सुपाच्य है, प्रमाणयुक्त है और उसके घटक परस्परानुकूल हैं तो उसके सेवन से शरीर के रक्त, मज्जा, शुक्र आदि सब घटक शुद्ध होते हैं । वात, पित्त, कफ आदि की मध्यावस्थ रहती है और सप्तधातु परिपुष्ट होकर शरीर निरोगी, सुदृढ कार्यक्षम तथा सब तरह के आघात सहन करने के योग्य बनता है ओर इस आरोग्य का मन पर भी अच्छा असर होता है।

''आहारशुद्धो सत्त्वशुद्धि'' का दूसरा और व्यापाक कार्य यह है कि आहार अगर प्रामाणिक है, हिंसाशून्य है, द्रोह शून्य है और यज्ञ, दान, तप की फर्ज अदा करने को प्राप्त किया है तो उससे चारित्र्यशुद्धि को पूरी-पूरी मदद मिलती है। चारित्र्यशुद्धि का आधार ही इस प्रकार की आहारशुद्धि पर है।

अगर यह बात सही है, आहार का चारित्र्य पर इतना असर है, तो विहार का यानी लैंगिक शुद्धि का चारित्र्य पर कितना असर हो सकता है, उसका अनुमान कठिन नहीं होना चाहिये।

जिसे हम काम-विकार कहते हैं अथवा लैंगिक आकर्षण कहते हैं, यह केवल शारीरिक भावना नहीं है। मनुष्य के व्यक्तित्व के सारे के सारे पहलू उसमें समाहित हो जाते हैं और अपना-अपना काम करते हैं। इसीलिये जिसमें शरीर, मन, हृदय की भावनाएँ और अधिक निष्ठा-सबका सहयोग अपरिहार्य हैं, ऐसी प्रवृत्ति का विचार एकांगी दृष्टि से नहीं होना चाहिये। जीवन के सार्वभौम और सर्वोत्तम मूल से ही उसका विचार करना चाहिये। जिस आचरण में शारीरिक प्रेरणा के वश होकर बाकी सब तत्त्वों का अपमान किया जाता है, यह आचरण समाज द्रोह तो करता ही है, लेकिन उससे भी अधिक अपने व्यक्तित्व का महान द्रोह करता है।

लोग जिसे वैवाहिक प्रेम कहते हैं, उसके तीन पहलू हैं। एक भोग से संबंध रखता है, दूसरा प्रजातन्तु से और तीसरा भावना की उत्कटता से। पहला प्रधानतया शारीरिक है, दूसरा मुख्यतः सामाजिक और तीसरा व्यापक अर्थ में अध्यात्मिक। यह तीसरा तत्त्व सबसे महत्त्व का सार्वभौम है और उसी का असर जब पहले दोनों के ऊपर पूरा-पूरा पड़ता है, तभी वे दोनों उत्कट, तृप्तिदायक और पवित्र बनते हैं।

इन तीन तत्त्वो में से पहला तत्त्व बिल्कुल पार्थिव होने से उसकी स्वाभाविक मर्यादाएँ भी होती हैं। भोग से शरीर क्षीण होता है। अतिसेवन से भोग-शक्ति भी क्षीण होती है, और भोग भी नीरस हो जाते हैं। भोग से संयम का प्रमाण जितना अधिक होगा उतनी ही अधिक उसकी उत्कृष्टता होगी। भोग में संयम का तत्त्व आने से ही उसमें आध्यात्मिकता आ सकती है। संयम पूर्ण भोग में ही निष्ठा और परस्पर आदर टिक सकते हैं और संयम और निष्ठा के बिना वैवाहिक जीवन का सामाजिक पहलू कृतार्थ हो ही नहीं सकता।

केवल लाभ हानि की दृष्टि से देखा जाये तो भी वैवाहिक जीवन का परमोत्कर्ष संयम और अन्योन्य निष्ठा में ही है। भोग-तत्त्व पार्थिव है और इसीलिये परिमित है। भावना-तत्त्व हार्दिक और आत्मिक होने से उसके विकास की कोई मर्यादा ही नहीं है।

आज कल के लोग जब कभी लैंगिक नीति के स्वच्छंदता को पुरुस्कार करते हैं, जब वे केवल भोग-प्रधान पार्थिव अंश को ही ध्यान में लेते हैं। जीवन की इतनी कल्पना वे ले बैठे हैं कि थोड़े ही दिनों में उन्हें अनुभव हो जाता है कि ऐसी स्वतन्त्रता में किसी किस्म की सिद्धि नहीं है और न सच्ची तृप्ति। ऐसे लोगों ने अगर उक्त ही छोड़ दिया तो फिर उनमें तारक असंतोष भी नहीं बच पाता। विवाह-समन्वय में केवल भोग-संबंध का विचार करने वाले लोगों में भी अपना अनुभव जाहिर किया है-

एतत्कामफलं लोके यद्द्वयोः एकचित्तता।
अन्यचित्तकृते कामे शवयोरिव संगमः ।।

यह एक चित्तता यानि हृदय की एकता अथवा स्नेह ग्रन्थी अन्योन्यनिष्ठा और अपत्यनिष्ठा के बिना टिक ही नहीं सकती। बढ़ने की बात दूर ही रही।

संयम और निष्ठा ही सामाजिक जीवन की सच्ची बुनियाद है। संयम वे जो शक्ति पैदा होती है, वही चारित्र्य का आधार है। जो आदमी कहता है वह चारित्र्य की छोटी-मोटी एक भी परीक्षा में उत्तीर्ण न हो सकेगा। इसीलिये संयम ही चारित्र्य का मुख्य आधार है।

चारित्र्य का दूसरा आधार है निष्ठा। व्यक्ति के जीवन की कृतार्थता तभी हो सकती है जब वह स्वतंत्रापूर्वक समष्टि के साथ ओत-प्रोत हो जाता है। व्यक्ति स्वातन्त्र्य को सम्हालते हुये अगर समाज परायणता सिद्ध करनी हो तो यह अन्योन्यनिष्ठा के बिना हो नहीं सकती और अखिल समाज के प्रति एक सी अनन्यनिष्ठा तभी सिद्ध होती है, जब आदमी ब्रह्मचर्य का पालन करता है, अथवा कम से कम वैवाहिक जीवन परस्पर दृढनिष्ठा से प्रारंभ करता है। अन्योन्यनिष्ठा जब आदर्श कोटि को पहुंचती है तब वहीं से सही समाज सेवा शुरु होती है।

इस सब विवेचन का सार यह निकला कि ''व्यक्तिगत विकास के लिये, कौटुम्बिक समाधान के लिये, सामाजिक कल्याण के लिये और आध्यात्मिक प्रगति के लिये संयम और निष्ठा अत्यन्त आवश्यक हैं'' और इसीलिये सामाजिक जीवन में लैंगिक सदाचार का इतना महत्व है।

अब इस सदाचार का आत्यान्तिक स्वरूप क्या है, कौन सा स्वरूप तात्त्विक है और कौन सा सांकेतिक, यह विचार समय-समय पर करना पड़ता है। उसमें चन्द बातों में परिवर्तन भी आवश्यक हो, लेकिन इतना तो समझ ही लेना चाहिये कि लैंगिक सदाचार के बिना समाज सेवा निष्ठा के साथ हो नहीं सकती है।

जिनका विकास एकांगी हुआ है अथवा जिनके जीवन में विकृति आ गई है, उनसे भी कुछ न कुछ सेवा की जा सकती है, लेकिन वे समाज के विश्वासपात्र सदस्य नहीं बन सकते। समाज निर्भयता से उनकी सेवा नहीं ले सकता और ऐसे आदमी का विकास अशक्यप्राय होता है। उसकी प्रतिष्ठा नाम मात्र की रहती है।

विषय गंभीर है। उसके पहलू भी असंख्य है और इनका शुद्ध विचार करने की पात्रता आज के अपूर्ण समाज में पूरी-पूरी है भी नहीं, तो भी इस विषय को हम छोड़ भी नहीं सकते। लीपा-पोती से काम नही चलता। केवल रूढ़ि को सम्हाल कर हम समाज को सुरक्षित नहीं रख सकते और अनेक रूढ़ियों का तुलनात्मक अध्ययन किये बिना और उनका सार्वभौम समन्वय किये बिना हम सामाजिक प्रगति भी नहीं कर करते। इसीलिये समय-समय पर मनुष्य जाति को इस सवाल की चर्चा करनी ही पड़ती है।

आगम दर्शन

अध्यात्म योग का अनुपम ग्रंथ योगसार

योगसार में 108 दोहे हैं। वर्ण विषय प्रायः परमात्म प्रकाश के तुल्य ही है। इन दोहों में एक चौपाई ओर दो सोरठा भी सम्मिलित हैं। अपभ्रंश भाषा में लिखा गया यह ग्रंथ एक प्रकार से परमात्म प्रकाश का सार कहा जा सकता है।

इसके प्रारंभ में भी आत्मा के उन्हीं तीनों भेदों का निरूपण आया है, जिनका परमात्म प्रकाश में निर्देश किया जा चुका है। बताया गया है कि यदि जीव तू आत्मा को आत्मा समझेगा, तो निर्वाण प्राप्त कर लेगा। किन्तु यदि तू पर पदार्थों को आत्मा मानेगा, तो संसार में भटकेगा ही।

योगसार के अध्ययन से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि इसका विषय क्रमबद्ध नहीं है। यह एक संग्रह जैसा है। विषय निरूपण के लिये क्रमबद्ध शैली का अनुसरण नहीं किया गया है। फुटकर विषयों का संकलन जैसा प्रतीत होता है।

जोइन्दु का अपभ्रंश भाषा पर अपूर्व अधिकार है। इन्होंने अपने उक्त दोनों ग्रंथों में अध्यात्म रस का सुन्दर चित्रण किया है। ये क्रांतिकारी विचारधारा के प्रवर्तक हैं। इसी कारण इन्होंने बाह्य आडम्बर का खण्डन कर आत्मज्ञान पर जोर दिया है।

जैन रहस्यवाद का निरूपण रहस्यवाद के रूप में सर्वप्रथम इन्हीं से आरंभ होता है। यों तो कुन्दकुन्द, वट्टकेर और शिवार्थ की रचनाओं में भी रहस्यवाद के तत्त्व विद्यमान हैं पर यथार्थतः रहस्यवाद का रूप जोइन्दु की रचनाओं में ही मिलता है।

वैदुष्य की दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि इन्होंने कुन्दकुन्द और पूज्यपाद के आध्यात्मिक ग्रंथों का अध्ययन कर अपने ग्रंथ-लेखन के लिये विषय-वस्तु ग्रहण की है। पूर्वाचार्यों की मान्य परंपरा को एक नये रूप में ही उपस्थित किया है। यही कारण है कि जोइन्दु का प्रभाव अपभ्रंश के कवियों के साथ हिन्दी के संत कवियों पर भी पड़ा है।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
सितम्बर 2023

कस्तूरी का गंध कहाँ

प्रथम-

जंगल जंगल पर्वत पर्वत
मैंने जग को खोजा
अद्भुत खुशबू पाने को
मैंने पल पल सोचा
खोजा मैंने पूरा जहाँ
कस्तूरी का गंध कहाँ

श्रीमती शुभि जैन, इंदौर

द्वितीय-

नाभि अंतर बस रही
फिर भी भटकी मैं
बनी बावली सोचती
कस्तूरी का गंध कहाँ

श्रीमती रजनी जैन, राहतगढ़

तृतीय-

सारी शक्ति अपने भीतर
फिर भी भटके मृग वन भीतर
ढूंढे खुशबू यहाँ वहाँ
कस्तूरी का गंध कहाँ

अर्पित जैन, जयपुर

वर्ग पहेली क्र. 286
अगस्त 2023 के विजेता

प्रथम : श्रीमती अनीता जैन, इंदौर
द्वितीय : राजकुमार जैन, ललितपुर
तृतीय : अभिलाषा जैन, बड़ोत

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ ह् अ ढ् ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ ट् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् य् ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

व्यसनों में नींच व्यसन-"जुआ"

अतृप्यदेष भूपालस्तर्पसित्वादखिलाः प्रज्ञाः ।
परोपकारवृत्तीनां परतृप्तिः स्वतृप्तगे ।।

यह राजा समस्त प्रजा को संतुष्ट करके ही स्वयं संतुष्ट होता था जो ठीक ही है क्योंकि परोपकार करने वाले मनुष्यों के दूसरों को संतुष्ट करने से ही अपना संतोष होता है।

क्रोधनेपु त्रिप्रथोपु कागजेपु चतुर्पु च ।
नापरं व्यसनं द्यूतानि कृष्टं प्राहुरागमाः ।।

क्रोध से उत्पन्न होने वाले मद्य, मांस और शिकार इन तीन व्यसनों में तथा काम से उत्पन्न होने वाले जुआ, चोरी, वेश्या और पर-स्त्री सेवन इन चार व्यसनों में जुआ खेलने के सम्मान कोई नीच व्यसन नहीं है ऐसा सब शास्त्रकार कहते हैं।

सुकेतुरेव दृष्टान्तो येन राज्यं च हारितम् ।
त स्माल्लोकद्वयं वाच्छन दूरतो द्यूतमुत्सृडोत ।।

राजा सुकेत ही इसका सबसे अच्छा दृष्टान्त है क्योंकि वह इस जुआ के द्वारा अपना राज्य भी हरा बैठा था। इसलिये जो मनुष्य अपने दोनों लोकों का भला चाहता है वह जुआ को दूर से ही छोड़ देवे।

प्रीत्यप्रीतिसमुत्पन्नः संस्कारो जायते स्थिरः ।
तस्मादप्रीतिमालाओ न कुर्यात्वकापि कस्यचित् ।।

आचार्य कहते हैं कि प्रेम और द्वेष से उत्पन्न हुआ संस्कार स्थिर हो जाता है इसलिये आत्मज्ञानी मनुष्य को कहीं किसी के साथ द्वेष नहीं करना चाहिये।

तदेवादाय सक्रोधः स्वयम्भूविद्विषं प्रति ।
प्रहित्यादादसूस्तस्य किं लस्यात् सुकृतोदयात् ।।

उसी समय राजा स्वयंभू ने कुपित होकर वह चक्र शत्रु के प्रति फेका सो ठीक ही हैं क्योंकि पुण्योदय से क्या नहीं होता ?

पंजाब में उपलब्ध कुछ जैनलेख

❊ लेखकः डॉ. बनारसीदास जैन, एम.ए., पी.एच.डी ❊

ऐतिहासिक सामग्री में लेखों (शिलालेख, ताम्रशासन, प्रशस्ति आदि) का स्थान बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है। लेखों में प्रायः अपने समकालीन घटनाओं का उल्लेख रहने से उनकी प्रामाणिकता में संदेह की गुंजाइस कम रहती है। भारत का प्राचीन इतिहास लिखने में ऐसे लेखों ने अशातीत सहायता की है। जैन धर्म के इतिहास का संकल्न करने में भी ये कुछ कम महत्व के नहीं हैं। मथुरा के कंकाली टीले से मिले लेखों ने कल्पसूत्र में वर्णित कुल, गण, शाखा आदि जैन परंपरा को अकाटब रीति से सिद्ध कर दिया है। और दक्षिण में पाये जाने वाले लेखों ने जैन धर्म के गौरव पर भारी प्रकाश डाला है।

इनके अतिरिक्त मध्यकालीन तथा वर्तमान युग के अनेक लेख ऐसे विद्यमान है जो प्रायः पाषाण और धातुमयी प्रतिमाओं पर उत्कीर्ण हैं। इनमें प्रतिष्ठा की तिथि तथा प्रतिष्ठा कराने वाले आचार्य और श्रावक के गच्छ जाति आदि का उल्लेख दिया जाता है। इन पर से पट्टावलियों में वर्णित आचार्य-परंपरा के अस्तित्व काल की पुष्टि होती है।

जैन लेखों को हिन्दी जनता के संमुख रखने का श्रेय मुनिजिनविजय, प्रो. हीरालाल तथा स्व. वा. पूर्णचंद नाहर को है। जहाँ तक मुझे मालूम है इन महाशयों के लेख-संग्रह तथा अन्यत्र, नगरकोट के लेख को छोड़कर, पंजाब के और किसी भी लेख का समावेश नही है।

पंजाब में भी जैन लेख काफी संख्या में मिलते हैं, क्योंकि यहाँ जैन धर्म अति प्राचीनकाल से चला आ रहा है। किसी समय यह धर्म यहाँ बड़ी उन्नति पर आया। कई स्थलों पर प्राचीन अवशेष मिलते हैं। अब भी पजाब के बड़े-बड़े नगरों तथा कस्बों में एक-एक दो-दो जैन मंदिर विद्यमान है। उनमें सैकड़ों प्रतिमाएँ है, जिन पर लेख खुदे हुये हैं।

पंजाब का सबसे पहला प्रकाशित लेख नगरकोट (कांगड़ा) से उपलब्ध हुआ था, जो वहाँ के किले में भगवान् ऋषभदेव की मूर्ति के नीचे पट्ट पर खुदा हुआ है। इसका लेखनकाल सं. 1523 है। मुनिजिन-विजय द्वारा संपादित ''विज्ञप्ति-त्रिवेण'' में प्रतीत होता है कि उस समय कांगड़ा एक प्रसिद्ध और प्राचीन जैन-तीर्थ था। परंतु आज कांगड़े में न कोई जैनी है और न मूर्तियों के अतिरिक्त उस तीर्थ कोई निशान ही बाकी है, यह काल की कैसी विचित्र गति है। निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि इस तीर्थ का विध्वंस कब और कैसे हुआ। कदाचित् मुसलमानों के हाथों से अथवा भूकंप आदि से जैसा कि सन् 1905 में हुआ था।

सिंहपुर के निकटवर्ती जैन मंदिर के अवरोपों पर भी लेखों का होनस संभव है। यह मंदिर जेहलम जिले में कटास के पास था। इसके अवरोप चोया सैंदनशाही के पास 'मूरती' ग्राम से मिले हैं। चीनी यात्री हूइनचांग ने इस मंदिर का उल्लेख करते हुये कहा है कि यहाँ एक लेख भी खुदा था जो सूचित करता था कि यहाँ भगवान ऋषभदेव ने देशना दी थी। यही अवरोप लाल पत्थर के हैं और अब लाहौर के म्यूजियम में सुरक्षित हैं। इनका विस्तृत वर्णन अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ हैं।

नीचे कुछ लेख उद्वत किये जाते हैं जो सबके सब श्वेताम्बर मंदिरों से लिये गये हैं। यद्यपि पंजाब में बहुत से दि. अर्वाचीन मंदिर हैं तथापित कई एक प्राचीन भी हैं। सुनने में आया है कि जींद में एक मंदिर है जो अब बंद पड़ा है। नकोदर (जि. जालंधर) के मंदिर में कई दिगम्बर प्रतिमाएँ हैं।

ये लेख चार नगरों के मंदिरों से लिये गये हैं - 1. अमृतसर, 2. पट्टी (जि. लाहौर), 3. जीरा (जिला फीरोजपुर), और 4.- नकोदर (जि. जालंधर) इनमें जैनों की अच्छी पुरानी बस्ती है। यद्यपि लेखों को प्रतिमाओं पर से पं. जगदीशलाल शास्त्री एम.ए. ने बड़ी सावधानी से उतारा है तथापि कहीं-कहीं लेख मद्धम पड़ गये हैं, इससे पाठ संदिग्ध रह गये हैं।

1. संवत् 1156 माघ सुदि 14 सुके
आसीत् प्राग्वाट वंशस्य भूपको विहिलाभिधाः।
पत्नी सलहिका तस्य जिनदत्तः सुवस्तयोः ॥1॥
भार्या च रोहिणी तस्य पुत्रौ सागररोहिकौ।
दुहिता सीहिणी चान्या वधू सहजमती तथा॥2॥
संसारासारतां ज्ञात्वा पुत्रैः सर्वेः सुसम्पदा।
कारितो मोक्षलामार्थ चतुर्विंशतिपट्टकः ॥3॥ (जीरा, धातुमयी चतुर्विंशति जिनप्रतिमा)

2. संवत् 1270 ज्येष्ठ व प्र. श्री सिद्धसेन सूरिभिः॥ (नकोदर, धातुप्रतिमा)

3. संवत् 1474 चैत्रवदि 1 शनौ श्रीश्रीमाल ज्ञातीय पूर्वश्रेष्ठि सउरा सु. संगग सु. पासवीर भार्या रूडीसुत संगवी चउथाकेन भार्या डाही सहितेन आत्म श्रेयोर्थ श्री पद्मनाथ विवं कारापितं श्री बाहाणगच्छे श्री वीरसुरिभि प्रतिष्ठितं। (पट्टी, धातुप्रतिमा)

4. सं. 1481 (?) वर्षों वैशाप श्री मूलसंघे भट्टारक जी श्री जयचंद्र
(नकोदर, पाषाणपार्श्वप्रतिमा)

5. सं. 1494 वर्षे माघ शुदि 15 रवौ श्रीमाल ज्ञातीय श्र. धारा भार्या छाछ (बाराही वास्तव्य) लटे साजण श्रेयोर्थ आतृ कीकाकेन श्री नमिनाथ मुख्य पंचतीर्थो कारापिता श्री पृ. श्री गुणसमुद्रसूरी मुपदेशन प्रतिष्ठितं विधिना। (पट्टी, धातुप्रति)

6. संवत् 1515 वर्षे ज्येष्ठ वदि (?) शनौ श्रीमालवसे श्रीहीरा भा. हीरादे पुत्र सारंग भू श्रावके भा. पवी पु. समधरयुक्त न श्रीअचंलगच्छश सुमतिनाथ बिबं कारितं खश्रेयाते प्रतिष्ठितं श्रीसंघेन। (जीरा, धातुप्रतिमा)

7. सं. 1515 वर्षे फाल्गुन शुदि 8 ओसवाल ज्ञातीय लघु संतानीय सं. मेघा नागल पु. देवा भा. वरगाकेन (?) भा. वनाइ देधर सहितेनात्मश्रेय से चतुर्शितिपट्ट कारितं श्रीधरनाथ विबं कारापितं श्री कोरंटगच्छे नेनाचार्यसंत प्रतिष्ठितं श्रीभावदेवसूरिभिः।

(नकोदर धातु प्र. दो प्रतिमाएं इसमें नग्न है)

8. सं. 1516 वर्षे माघ शुदि 5 शुक्रे ओसवाल ज्ञातीय राउस समरसी भा. टहिक् पु. रा. नरसिंगना भा. नामलदे भ्रातृ रा. धागा सुत्त रालापा दाछा धग सावस्ता रा. लापा भा. माई सुमूला

सुतारमी प्रमुख कुटुम्बयुतेन निजश्रेय से मुनिसुव्रतविबं कारितं। प्रतिष्ठितं तपापक्षे श्रीसोम सुन्दरसूरिशिष्य श्रीमुनिसुन्दरसूरिशिष्य श्रीरत्नशेख सूरि पट्टालंकरण श्रीलक्ष्मीसागरसूरिभिः।

संवत् 1517 वर्षे वैशाख सुदि 3 सोमे श्रीश्रीवंश सा. देल्हणदे पु. शिवा भा. सलपु सुतलाडणेन पत्नी वमकू पु. माला भ्रातृ भादासहितेन स्वश्रेयसे श्रीअंचलगच्छाधिप श्री जयकेसरीणामुपदेशेन श्रीशीतलनाथ चतुर्विंशतिपट्टः कारितः। प्रतिष्ठितः श्री संघेन॥ श्री भूर्यात।

10. संवत् 1521 वर्षे जे. शु. 4 गुरु श्रीमाल कांति सेठिया सं. कमला भा. कमलसिरि पु. सं. भायया (?) सं. गुणराज भा. बांपलदे पुत्र्या रयणसिरि नाम्न्या स्वश्रेयसे चतुर्विंशति बिंबानिकारयित्व श्री सीतलबिंबं का. प्र. तपा श्रीलक्ष्मीसागर सूरिभिः॥ (जीरा, धातुप्रतिमा)

11. श्री संवत् 1521 वर्षे वैशाख शुदि 12 श्री श्रीमालजातीय श्रे. जोगा भा. कडूतया सु. कलांपा धरणा भोजा वीरायुतया आत्मश्रेय से श्री अमिनाथादि पंचतीर्थी आगमगच्छे श्रीहेमरत्न सूरीणासुपदेशेन कारिता प्रतिष्ठा च अहम्मदाबाद वास्तव्यः श्रीः॥ (नकोदर, धातुप्रति)

12. संवत् 1521 वर्षे ज्येष्ठ वदि 12 गुरु श्री श्रीमाल ज्ञा. सा. बीसा भा टहिकू सु. हासाकेन वनाश्रेयसे श्री शांतिनाथ बिबं कारापितं प्रति. श्री पूर्णिमा प्रथम श्री श्रीसाघसुन्दर सूरिणामुपदेशेन विधिना श्राद्धैः।

13. संवत् 1523 वर्षे वै. शु. 13 दिने वृद्धनगर वास्तव्य ऊकेश जातीय स. हसा भा. अमरादेसुत सं. देपाल पहिराज डूंगर जिनदासाः तेपु सं. पहिराजेन भा. मोहणदे सुत देवचन्द्रयुतेन निजमातृश्रेयसे श्री शंभबबिंब का. प्र. तपागच्छ नायक श्री लक्ष्कीसागरसूरिभिः। (नकोदर, धातुप्रतिमा)

14. संवत् 1523 वर्षे वैशाखशुक्ल 5 बुधे सन ऊकेशक्षा. भा. नागसी भा. नागलदे पु. तोजावेन भा. वरजू भ्रा. वाछां भा. मूजी पु. कीका श्रीरंग श्रीदत्त सोमालप वधु पद्माई हर्पाई जीवाई पम युतेन निजश्रेयसे श्रीसुमनिबिबं का. प्र. तपा श्री लक्ष्मीसागरसूरिभिः श्री सुधानंदजसूरि श्रीरत्नमंडनसूरि परिष्ठीतेः। (नकोदर, धातुप्रतिमा)

15. संवत् 1663 वर्षे वैशाष शुदि 13 सोगदिने आगरा नगरे वास्तव्य लोढा गोत्रे ओगणि शास्त्रायां सं. ऋषभदास भार्या रेप श्री पुत्र सं. कुंरपाल तहघुदांपव जैनशासनोत्तति कृ. सं. सोनपाल भा. सुवर्ष श्री तदां जैन सं. रूपचंद्रेण भार्याद्वयुतेन श्रेयसे सुकुटबेन शांतिनाथबिंबं कारितं अचंलगच्छे श्री धर्मसूरीणा आ. श्रीकलयाणसगरसूरि युत्राणमुपदेशेन श्रीसंघेन। (पट्टी, धातुप्रतिमा)

16. सं....016 श्रीमूलसंघ त्र. श्री हंसोपदेशात् वाई हेममती नित्यं प्रणमति। (नकोदर, धातुप्रतिमा)

17. संवत् 1715 का. शुदि 3 मूलभद्रा देवकीर्तिभिः रतना सुत रही आराद्ध प्रणाती। (नकोदर, धातुपार्श्वप्रतिमा)

18. श्रीमूलसंघे भ. श्री पं. प्रभाचंद्रस्तत्सिप्य श्री धर्मचंद्रस्तदाम्नाये खंडेलवालान्वये गोघागोवेसा पारस भार्या मौलि... फलरामा... प्रणमति। (पट्टी, धातुप्रतिमा)

19. संवत् .... वर्षे वैशाख वदि 2 भौमे श्रीमूलसंघे भट्टारक श्रीदेवेन्द्र कीर्तिदेवाः तच्छिष्य श्री विद्यानंदि देवा तरीरू देशानाहूबड़वंशे ये गोइंदा भार्याभर्म्म (?) तयोः पुत्रास्त्रयः श्री हीर भार्वा हर्पू। भड़े पर्वत। भा माकू गोतृनर्छद भार्या वाऊ अपरा माणिक दे। वाऊ पुत्र राणा भार्या हीरा। (अमृतसर, धातुप्रतिमा)

ऊपर के लेखों में से अंत के चार तथा नं. 4 इस बात की साक्षी दे रहे हैं कि जिन प्रतिमाओं पर ये लेख हैं वे दिगम्बर संप्रदाय की होनी चाहियें। नकोदर के भाई तो स्वयं कहते है कि हमारे पूर्वज दिगंबर थे और पहिले वहां के मंदिर में लेख नं. 4 वाली प्रतिमा मूलनायक थी। लाहौर के श्वेताम्बर और दिगम्बर दोनां मंदिर एक दूसरे से मिले हुये थे। पहिले दोनों का एक ही द्वार था ओर श्वेतांबर मंदिर में होकर जाता था। इससे प्रायः सभी भाई दोनों मंदिरों के दर्शन का लाभ लिया करते थे। अब कुछ समय से दोनों का अपना अपना पृथक द्वार हो गया है।

श्वेताम्बर और दिगम्बर लेखों में परंपरा के अतिरिक्त शैली का भी कुछ भेद है, जैसा कि उनके अंतिम शब्दों से प्रतीत हो रहा है।

यद्यपि ऊपर के लेख देश के इतिहास पर कोई भारी प्रकाश नहीं डालते, तथापि ये जैन संघ की दशा का स्पष्ट चित्र खींचते हैं। इनसे विदित होता है कि उनके समय के संघ अनेक गच्छों और शाखाओं में विभक्त था, जिमें से बहुत सी शाखाएँ अब लुप्त हो गई हैं और कई एक नई बन गई हैं। श्रीयुत मोहनलाल दलीचंद देशाई ने ''जैन साहित्य नो संक्षिप्त इतिहास'' नामक अपने ग्रंथ के विभाग 5, प्रकरण 5 में संघ की छिन्नभिन्नता का विस्तृत वर्णन किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि जैन संघ में केन्द्रयी सत्ता का बिलकुल अभाव हो गया था। जिस गच्छ या शंका का जोर होता वही प्रधान बन जाता। अतः प्रधान बनने की होड़ सी लगी रहती थी। इस परिणाम यह हुआ कि जो साधु या भट्टारक कुछ पकड़ता था, वही अपनी पृथक भक्त मंडली बना लेता था। यही दशा अब तक बराबर चली आ रही है जैन संघ किसी ऐसे नेता को अभी तक जन्म नहीं सका तो इन भिन्न-भिन्न संप्रदायों आम्नायों और टोलों को एक सूत्र में पिरो सका हो। ऐसे अवतार पुरुष की नितान्त आवश्यकता है।

कविता

काव्य महिमा

काव्य की गाथाएँ बहुत होती है
काव्य की धाराएँ बहुत होती है
काव्य अमृत की पिटारी है
कविता वही होती है
जो मुर्दों में जान डाल देती है
कविता मायूसी को खोकर
सृजन का प्रयोजन पूर्ण करती है।

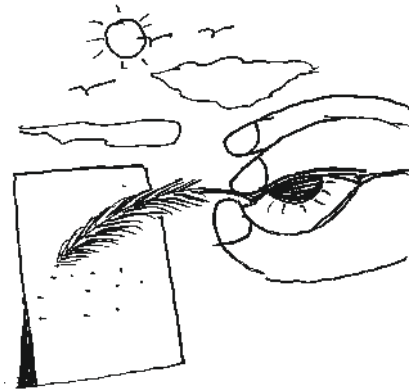

क्षत्रचूड़ामणि और उसकी सूक्तियाँ

❊ लेखकः पं. सुमेरूचंद जैन दिवाकर, न्यायतीर्थ शास्त्री ❊

साहित्य के गद्य और पद्य नाम के विभागों में अधिकांश कवि ऐसे पाये जाते हैं जो एक-एक क्षेत्र में ही अपना प्रमुख रखते हैं। कालिदास, भारवि, भवभूति आदि कविजन पद्य के क्षेत्र में विख्यात हैं, तब गद्य के क्षेत्र में वाण आदि का सम्मान पूर्ण स्थान है। यह सौभाग्य बिरलों में ही प्राप्त होता है कि गद्य के समान पद्य के क्षेत्र में भी यशस्वी होवें। अंग्रेजी साहित्य में भी यही बात पाई जाती है गद्य लेखकों में लेम्बुस्काट डॉ. जानसन, मेकाले आदि का नाम प्रसिद्ध है, किन्तु वे पद्य लेखकों में अपना कोई उल्लेखनीय स्थान नहीं बना सके। इसी प्रकार उच्च कोटि के पद्यकार में मिल्टन, टेनीसन, शैली, ब्राउनिंग आदि का नाम लिया जाता है, किन्तु गद्य संसार में उनकी उस प्रकार की कोई ख्याति नहीं है। उच्च गद्य लेखक और पत्रकार होने का सौभाग्य जैन महाकवि वादीभसिंह को प्राप्त है। इनके गद्यचिंतामणि के पारायण से 'वाणेचिछष्ट मिदं जगत्' की उक्ति अत्युक्तिपूर्ण प्रतीत होती है। इनका क्षत्रचूड़ामणि ग्रंथ काव्य-जगत् का निष्कलंक दीप्तिमान नक्षत्र है। इस ग्रंथ में महाकवि वादीभसिंह ने क्षत्रियों के चूड़ामणि महाराज जीवंधर के मनोहर चरित्र का अत्यंत आकर्षण ढंग से वर्णन किया है।

कथा का सार-जीवंधर की कथा का संक्षिप्त सार इस प्रकार है कि हेमांगद देश की राजधानी राजपुरी में जैन धर्मावलम्बी महाराज सत्यंधर राज्य करते थे। उन्होंने अपनी महारानी विजया में अत्यासक्त होने के कारण मंत्री अष्टांगार के हाथ में राज्य का भार सौंप दिया। कृतघ्न काष्टागार ने राज्यतृष्णा के वशीभूत होकर राज्य पर अपना कब्जा कर लिया। उस समय क्षत्रिय धर्म को पालन करते हुये युद्ध भूमि में महारा सत्यंधर का शरीरान्त हो गया। महाराज की रानी विजया गर्भिणी थी, अतएव क्षत्रि राजवंश की आशा के एकमात्र केन्द्र शिशु के संरक्षणार्थ महाराज ने पहले से वायुयान के समान एक आकाश में उड़ने वाला मयूरबन्ध भी बनवा रक्खा था और उसमें युद्ध की विकट स्थिति के समय महारानी को बैठाकर उड़ा दिया था। अवसर की बात है कि वायुयान श्मशान भूमि में पहुंचा और वहाँ महारानी के एक तेजस्वी पुत्ररत्न उत्पन्न हुआ। महारानी तो तपस्वियों के एक आश्रय में रहकर अपना समय काटने लगी, और एक अत्यन्त समृद्ध वणिकशिरोमणि श्रेष्ठिवर गंधोतट के यहाँ बालक का पालन-पोषण हुआ। बालक जीवंधर ने आर्यनंदी नाम के महान् आचार्य के द्वारा अनेक विद्याओं में विदग्धता प्राप्त की। तरूण होने पर कुमार को ज्ञात हुआ कि मैं क्षत्रियपुत्र हूँ, मेरे राज्य का अधिकारी काष्टांगार बन बैठा है। कुछ समय के अनन्तर जन-धन आदि सब प्रकारों के बलों से सुसज्जित होकर वीर शिरोमणि जीवंधर ने काष्टागार को मारकर अपने राज्य को प्राप्त किया। काफी समय तक वैभव-विभूति का आनंद लेकर स्थायी शान्ति के लिये महाराज जीवंधर ने अपने पुत्र सत्यंधनर को राज्य-भार सौंपकर जैनी दीक्षा धारण की और महावीर भगवान की शरण में रहकर अपनी आत्मशुद्धि की तथा परम मुक्ति प्राप्त की।

यह कथा श्री गुणभद्राचार्य के उत्तरपुराण से भाव को लेकर लिखी गई है। और भी अनेक कविचूड़ामणियों ने जीवंधर कुमार के चरित्र को वर्णन करने में अपनी लेखनी को सफल किया है। जिनमें महाकवि हरिचन्द्र का जीवंधर चम्पू तथा कन्नड भाषा के ग्रंथकार तिरुयकदेव 'जीवकचिंतामणि' खास तौर से उल्लेख योग्य हैं।

क्षत्रचूड़ामणि के रचयिता का असली नाम ओडयदेव था 'वादीभक्ति' उनकी उपाधि थी। उनका समय लगभग नवमी शताब्दी का अनुमान किया जाता है।

बाबा की सीख

घी की डबलिया

❊ अशोक पाटनी, आर.के.मार्बल्स ❊

हर परिवार में जब नये सदस्य के रूप में कोई बहु प्रवेश लेती है। तो उसे कई दिन तक सामंजस्य बैठाने की समस्या रहती है। परंतु परिवार का एक भी सदस्य यदि समझदार होता है। तो परिवार के अंदर कलह उत्पन्न नहीं हो सकता है। और नये सदस्य को सामंजस्य बैठाने में कठिनाई नहीं होगी। और सहजता से नया सदस्य परिवार में घुल मिल जाता है।

जब मेरा विवाह हुआ उसके तीसरे दिन की घटना है कि सुशीला भोजन करने वाले सभी सदस्यों को भोजन परोस रही थी। वही पर एक घी की डबलिया बीच में रखी थी। मेरी माँ भी भोजनशाला में काम कर रही थी। नई बहु आने के कारण परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर भोजन कर रहे थे। और कुछ दिन ऐसा ही चलने वाला था। बस फिर क्या था सुशीला यही बार-बार ध्यान रखती थी कि मुझसे कोई गलती न हो जाये परंतु यह भी एक सच है कि ज्यादा सावधानी रखने पर कहीं न कहीं चूक अवश्य होती है। हुआ यही घी की रखी डबलिया में सुशीला का पैर लग ही गया डबलिया लुढ़क गयी। डबलिया के लुढकते ही मेरी माँ की त्यौरी बदल गई परंतु वे अपने भीतर का गुस्सा व्यक्त नहीं कर पायी। क्योंकि वहाँ पर मेरे बाबा बैठे थे। परंतु मेरी माँ एक सास बन चुकी थी। सास बनने के कारण थोड़ा बहुत तो सासपना आ ही गया था।

इसलिये माँ ने सुशीला से वजनदारी के साथ कहा लाड़ी नीचे देखकर चलाकर देखो घी की डबलिया गिरा दी। सुशीला ने कहा माँ साहब गलती हो गई बात कुछ आगे बढ़ती इससे पूर्व ही बाबा अपनी गंभीर मुद्रा में बोले लाड़ी नई लाड़ी से तो मैने कहा था कि तू घी की डबलिया में पैर मार देना बाबा की बात सुनकर मेरी माँ और सुशीला दोनों मौन होकर समझ गई कि बाबा किसी भी बात को आगे बढ़ाने के पक्ष में नही हैं। क्योंकि बात का बतंगड़ बनने में देर नहीं लगती है।

केरियर

कैसे बनें अध्यापक

हमारे भारत वर्ष में अध्यापन को एक अत्यंत उत्तम कार्य माना जाता है। बड़ी संख्या में अध्यापक ग्रामीण क्षेत्रों के प्राइमरी व मिडिल स्कूलों में पढ़ाते हैं। शहरों क्षेत्रों में भी अनेक लोग अध्यापन का कैरियर के रूप में अपनाते जा रहे हैं। महिलाओं के लिये अध्यापन कार्य सर्वाधिक आसान कार्य है। कम समय में वे अध्यापन द्वारा उत्तम धन अर्जन कर सकती हैं। कई बार विशेष विषय में अध्यापकों को अन्य सुविधाएं भी आकर्षित करती है जैसे- आवास की सुविधा, बच्चों के लिसे फीस में छूट, पेन्शन की सुविधा, ग्रेच्युइटी आदि।

पिछले कुछ वर्षों में अध्यापन शौक के स्थान पर व्यवसाय का रूप ग्रहण करता जा रहा है। जगह-जगह कोचिंग सेन्टर खुलने लगे हैं। लोग ट्यूशन करने लगे हैं। स्कूलों के अतिरिक्त भी लोगों को अध्यापन कार्य खूब मिल रहा है। हजारों की संख्या में निजी स्कूल खुलते जा रहे हैं। इसी कारण अध्यापकों की मांग में बढ़ोतरी हुई है।

कार्य के क्षेत्र: प्राइमरी स्कूल अध्यापक, जूनियर स्कूल अध्यापक, सेकेन्डरी स्कूल अध्यापक, लेक्चर, रीडर, प्रोफेसर आदि।

प्रशिक्षण व योग्यता: प्राइमरी स्कूल अध्यापकों को 12वीं के बाद प्रि-स्कूल अथवा किन्टरगार्डन शिक्षण का डिप्लोमा या सर्टीफिकेट पाठ्यक्रम किया होना चाहिये। सेकेन्डरी स्कूल के अध्यापकों को स्नातक पाठ्यक्रम के बाद बी.एड. किया हुआ होना चाहिये।

प्रोन्नति के पश्चात अन्यक्षेत्र: अध्यापक प्रोन्नति के पश्चात अन्य प्रतिष्ठित पदों पर भी सुशोभित हो सकते है। वे स्कूल, कॉलेज अथवा विश्वविद्यालय के प्रशासनिक पदों पर कार्य कर सकते हे जैसे उपप्रधानाचार्य अथवा प्रधानाचार्य बन सकते हैं।

ट्यूशन द्वारा व्यवसाय: अध्यापक आज ट्यूशन द्वारा नियमित स्कूल अध्यापकों से भी अधिक कमा सकते हैं। आज सभी वर्ग के बच्चों, सामान्य, गरीब या धनी के लिये ट्यूशन एक जरूरत बन गई है। इसी बढ़ती मांग के कारण ट्यूशन के क्षेत्र से अधिकाधिक अध्यापक आते जा रहे हैं।

योग्यता: किसी भी विषय में ट्यूशन लेने के पूर्व अध्यापक को उस विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिये।

अध्यापन का भविष्य: अध्यापकों की बढ़ती मांग को देखकर कहा जा सकता है कि अध्यापकों का भविष्य उज्जवल है।

वेतन व सुविधाए: पब्लिक व सरकारी स्कूल के अध्यापकों को अच्छा वेतन मिलता है। इसके अतिरिक्त प्रोविडेन्ट फन्ड, बीमा, महंगाई भत्ता, मेडिकल सुविधाएं भी अध्यापकों को प्राप्त होती हैं।

अध्यापन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम: प्रायः सभी विश्वविद्यालयों में बी.एड का डिप्लोमा या डिग्री पाठ्यक्रम है। बी.एड का कोर्स स्नातक डिग्री के पश्चात् किया जा सकता है। तभी सभी जगह यह 1 वर्ष का पाठ्यक्रम है। एम.ए. का पाठ्यक्रम भी 1 वर्ष का होता है और बी.ए. के पश्चात् ही किया जा सकता है।

निम्नलिखित विश्विद्यालयों से शिक्षण पाठ्यक्रम किया जा सकता है।

डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, गोहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी पटना, विश्वविद्यालय पटना, कानपुर विश्वविद्यालय, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय इंदौर व देश में और भी अनेक विश्वविद्यालय हैं।

पत्राचार द्वारा भी बी.ए. और एम.ए. किया जा सकता है।

■ 1 अगस्त

- ठाणेः जिले के शाहपुर तहसील के सरलंबे के पास समृद्धि मार्ग पर निर्माण कार्य चलते गाडरलांचर मशीन गिरने से 20 लोगों की मृत्यु हुई।

- पटना हाईकोर्ट ने जाति आधारित सर्वे मामले की सभी याचिकायें खारिजकर जाति आधारित सर्वे का रास्ता साफ किया।

- लोकमान्य तिलक स्मारक ट्रस्ट ने प्रधानमंत्री नरेन्द्रमोदी को तिलक पुरुस्कार से सम्मानित किया।

■ 2 अगस्त

- नाइजेरिया में शराब पीने पर सरेआम कोड़ों की सजा दी गई।

- बॉलीबुड के आर्ट निर्देशक नितिन देसाई ने आत्महत्या की उनका शव लटका मिला।

- राज्यसभा लीथियम सहित 6 परमाणु खनिजों के खनन में निजी क्षेत्र को इजाजत देने वाला विधेयक पारित हुआ।

■ 3 अगस्त

- भारत सरकार ने लैपटाप, टैबलेट के आयात पर प्रतिबंध लगाने संबंधी अधिसूचना जारी की।

- ज्ञानवापी मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने मस्जिद कमेटी की याचिका खारिज करते हुये कहा ए.एस.आई की सर्वे जारी रहेगी।

- कैबिनेट सचिव राजीव गौबा को 1 वर्ष का सेवा विस्तार मिला।

■ 4 अगस्त

- सुप्रीम कोर्ट ने राहुल गांधी के मानहानी मामले में सजा पर रोक लगा दी। कोर्ट ने अधिकतम सजा सुनाई का कारण नहीं बताया- सुप्रीम कोर्ट।

- नागपुरः बाम्बे हाईकोर्ट की नमापुर खंडपीठ के न्यायमूर्ति रोहित देव ने भरी अदालत में इस्तीफा दिया।

- रूद्रप्रयाग जिले के गौरीकुंड में भूस्खलन होने से 4 लोगों की मौत हुई।

■ 5 अगस्त

- पाकिस्तान की एक जिला अदालत ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को तीन साल की सजा तोशखाना मामले में सुनाई उन्हें तुरंत जेल भेला।

- भिवंडीः आतंकी आलिक अतीक को एन.आइ.ए ने गिरफ्तार किया।

- ज्ञानवापी के तहखानों में मूर्तियों और टूटा त्रिशूल मिला देव मूर्तियाँ को ढेर मिला।

■ 6 अगस्त

- पाकिस्तान के सिंधप्रांत में एक एक्सप्रेस पटरी से उतरी। 22 लोग मृत 100 लोग घायल हुये।

- मणिपुर हिंसा के मामले में थाना प्रभारी सहित 5 पुलिसकर्मी निलम्बित हुये।

- नूंह, जिस होटल से पथराव किया गया उसे जिला प्रशासन ने ध्वस्त कराया।

■ 7 अगस्त

- राहुल गांधी की 137 दिन बार लोकसभा की सदस्यता बहाल उनहोंने संसद में प्रवेश किया।

- चंडीगढ़- पंजाब के राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित ने सिख गुरुद्वार एक्ट को मंजूरी नहीं दी।

- कंबोडिया के नये प्रधानमंत्री हुन मानेत बने।

■ 8 अगस्त

- विपक्ष के अविश्वास प्रस्ताव पर लोकसभा में चर्चा शुरु हुई।

- राजस्थान सरकार ने नौकरी के पहले चरित्र प्रमाण अनिवार्य किया छेड़छाड़ करने वालों को नौकरी नहीं देने की घोषणा की।

- आप पार्टी के सांसद राघव चड्ढा के खिलाफ विशेषाधिकार हनन का नोटिक दिया।

■ 9 अगस्त

- इम्फालः यूनाइटेड नगा कउंसिल की ओर बड़ी रैली आयोजित हुई।

- गौरीकुंड में भूस्खलन से दो बच्चों की मौत हुई।

- केरल विधानसभा में केरल का केरलम नाम बदलने का प्रस्ताव पारित हुआ।

■ 10 अगस्त

- लोकसभा में सरकार के खिलाफ आये। अविश्वास प्रस्ताव ध्वनिमत से गिरा।

- महात्मा गांधी के परपोते तुषार गांधी ने राष्ट्रपिता के विरूद्ध अपमान जनक टिप्पणी करने पर शिव प्रतिष्ठ संस्थापक सांभाजी भिड़े के खिलाफ एफ.आई.आर दर्ज कराई।

- दुकबाडोर में राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार फार्नाडो क्लिाविर्सेशियों की हत्या हुई।

■ 11 अगस्त

- अंग्रेजी की निसानी खत्म करने के उद्देश्य से 3 विधेयक लोकसभा में पेश किये गये विधेयक संसदीय स्थाई समिति के भेजे गये।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि नफरती बयान के लिये सभी समुदाय जिम्मेदार हैं।

- हवाई के जंगलों की आग रहवासी इलाके में पहुंचने से 55 लोगों की मौत हुई।

■ 12 अगस्त

- कीव (यूक्रन)ः राष्ट्रपति बोलोदिमीर जेलेस्कीने सेना भर्ती केन्द्रों के सभी प्रमुखों को वर्खास्त किया।

- दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति जैकब जुमा भ्रष्टाचार मामले में जेल से रिहा हुये।

- पाकिस्तान के राष्ट्रपति आरिफ

अल्वी ने अनवरउलहक काकर को प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

■ 13 अगस्त

- ठाणे शहर के कलवा नगर में शिवाजी महाराज अस्पताल में 24 घंटे में 18 मौंते हुई।

- अमेरिकी सांसद थानेदार ने कहा कि यू एस की सुरक्षा के लिये भारत से संबंध बनाये रखना अहं।

- कोडागांवः (छ.ग) नक्सलियों ने कोटवार धरदास बघेल की हत्या की।

■ 14 अगस्त

- हिमाचल प्रदेश में बादल फटे 52 लोगों की मृत्यु हुई 300 पर्यटक फंसे ।

- फिल्मी कलाकार सुशांत सिंह मृत्यु के फेंक न्यूज फैलाने वाले चैनल पर 1 लाख दंड को सुप्रीम कोर्ट ने अपर्याप्त कहा।

- जम्मू कश्मीर के अनंत नाग में हजारों लोगों ने तिरंगा यात्रा में अपनी उपस्थिति दी।

■ 15 अगस्त

- मथुराः बांकेबिहारी मंदिर के पास एक इमारत छज्जा गिरने से 5 लोगों की मौत हुई।

- फरीदाबादः नूंह दंगा भड़काने में भड़काऊ भाषण देने वाले विट्टू बजरंगी को पुलिस ने गिरफ्तार किया।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी राष्ट्र को संबोधन में देशवासी न बोलकर परिवारजन बोला।

■ 16 अगस्त

- नेहरू मेमोरियल म्यूजियम 4 लाइब्रेरी का नाम केन्द्र सरकार ने प्रधानमंत्री संग्रहालय किया।

- फैसलाबाद (पाक)ः भीड़ ने 5 चर्च जलाएं और इसाईघरों में लूटपाट की।

- उत्तराखंड के मद महेश्वर धाम में फंसे 122 श्रद्धालुओं को बाहर निकालने का काम हुआ।

■ 17 अगस्त

- आई.एन.एस विध्यगिरि को राष्ट्रपति द्रोपपी मुर्मू ने लांच किया।

- गुलाम नवी आजाद ने कहा कि भारतीय मुसलमान पहले हिन्दू ही थे 800 वर्ष पहले कश्मीर में सिर्फ पंडित ही थे।

- काँग्रेस ने मुकुल वासनिक को गुजरात का प्रभारी बनाया।

■ 18 अगस्त

- सी.जी.एस. टी अधिकारी हेमंत कुमार को सी.बी.आई ने गिरफ्तार किया उन पर चीनी कम्पनी से 30 लाख घूस मांगने का आरोप है।

- मणिपुर के उखरूल में जन जातीय गांव में हमला हुआ 3 लोगों की मौत हुई।

- कश्मीरी अलगाववादी यसीन मलिक की पत्नी मुशाल हुसैन मलिक प्रधानमंत्री की विशेष सलाहकार नियुक्त हुई।

■ 19 अगस्त

- लद्दाख के लेह में सेना का वाहन खाई में गिरने से 9 जवान शहीद हुये।

- कनाडा के ब्रिटिश कोलंबियो के रहवासी क्षेत्र में आग पहुंची 13000 मकान खाली करने के आदेश हुये।

- अमेरिका के एक स्कूल में बच्चों को लिंग भेद का पाठ पढ़ाने वाली शिक्षिका केटी रिंडरले को बर्खास्त कर स्कूल से निकाला।

■ 20 अगस्त

- मिशन मून रूस का फेल हुआ लूना-25 क्रेश हुआ।

- उज्जैन शराब का लती दिलीप पंवार ने कुत्ते को पीटने से रोकने पर पत्नी और दो बच्चों की हत्या करने के बाद आत्महत्या कर ली।

- लाहौरः डीजल से लदा पिकअप यात्री बस से टकराया 16 की मौत जलकर हुई 15 घायल हुये।

■ 21 अगस्त

- पाकिस्तान के राष्ट्रपति हाउस अरेस्ट की हालत में पहुंचे। आर्मी चीफ आसिम मुनीर के 4 कमांडर बागी हुये।

- पुंछ जिले के बालाकोट सेक्टर में घुसपैठ की नाकाम हुई दो आतंकवादी ढेर हुये।

- भाजपा सासंद सनी देओल का बंगला नीलाम होना रद्द हुआ। बैंक को कर्ज चुकाने की पेशकश मिली।

■ 22 अगस्त

- नागपुरः एयरपोर्ट पर 25 करोड़ अम्फेटा माईन ड्रग्स पकड़ी गई नाइजोरियम गिरफ्तार हुआ।

- थाईलेंड के पूर्व प्रधानमंत्री थाकसिन शिनवाजा 15 वर्ष बाद लौटे सुप्रीम कोर्ट ने 8 वर्ष की सजा भ्रष्टाचार मामले में सुनाई।

- कोलकाता उच्च न्यायालय पूर्व मुख्य न्यायाधीश प्रकाश श्रीवास्तव राष्ट्रीय हरित अधिकरण के अध्यक्ष बने।

■ 23 अगस्त

- मिजोरम की राजधानी आईजोल से 20 किमी. दूर बन रहे रेलवे पुल ढहने से 21 मजदूरों की मौत हुई।

- स्वदेशी हल्के लड़ाकू विमान तेजस ने 20 हजार फिट की ऊंचाई से मिसाइल दांगी।

- 6 बजकर 4 मिनट पर चंद्रयान-3 ने सेल्फ लेडिंग की।

■ 24 अगस्त

- अल्लू अर्जुन बेस्ट एक्टर आलिया कृति सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री पुरुस्कार की घोषणा हुई।

- ब्रिक्स में 6 देश और शामिल हुई अर्जेंटीना मिस्र इथियोपिया ईरान सऊदी अरब संयुक्त अरब उपस्थित नये सदस्य बने।

- बेंगनर चीफ येवगेनी पिगोझिन की विमान हादसे में मौत हुई यह दुर्घटना हादसा हैं या बदला यह कहना संदिग्ध है।

■ 25 अगस्त

- बारामतिः शरद पंवार ने कहा अजित पंवार हमारे नेता हैं इससे राजनीति में हलचल मची।

- अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प चुनाव परिणामों में धोखा धड़ी मामले में 20 मिनट जेल में रहे।

- वर्ल्ड एथलेटिक्स चैम्पियन में नीरज चौपड़ा फायनल में पहुंचे।

■ 26 अगस्त

- मुदरैः ट्रेन में सिलेण्डर रखकर बैठे थे। आग लगने से 9 लोगों की मौत हुई।

- मास्कोः ड्रोन हमले की खबरों के चलते हवाई अड्डों का संचालन बंद हुआ।

- भोपालः शिवराजर सरकार 3 नये मंत्री बने। गौरीशंकर बिसेन ने राजेन्द्र शुक्ल एवं राहुल लोधी ने शपथ ली।

■ 27 अगस्त

- विजयवाड़ा में एक व्यक्ति के पास 6.4 करोड़ का सोना जब्त किया गया।

- बारासात (पं. बंगाल) अवैध पटाखा फैक्ट्री में विस्फोट हुआ 8 लोग मृत हुये 50 मकान क्षतिग्रस्त।

- राजगढ़ जिले के एक गांव में तालाब डूबने से एक परिवार के तीन लोगों की मौत हुई।

■ 28 अगस्त

- वर्ल्ड एथलेटिक्स चैम्पियन में नीरज चौपड़ा ने स्वर्ण पदक भाला फेंक में जीतकर इतिहास रचा।

- कोटाः छात्रों की आत्महत्या को देखते हुये जिला कोचिंग संस्थानों के नियमित टेस्ट पर रोक लगाई।

- ईशा आकाश और अनंत अम्बानी रिलायंस समूह के निर्देशक बने।

■ 29 अगस्त

- रसोई गैसे सिलेंडर 200 रूपये सस्ता हुआ यह घोषणा केन्द्र सरकार ने की।

- चीन के सरकारी अखबार ने भारत-चीन की सीमा में फेरफार कर नक्शा प्रकाशित किया।

- गीतिका श्रीवास्तव इस्लामाबाद स्थित भारतीय उच्चायोग प्रभारी बनी।

■ 30 अगस्त

- भारत ने जी-20 शिखर सम्मेलन में शाकाहारी भोजन का प्रावधान निश्चित किया गया। माँसाहारी भोजन नहीं देने की घोषणा हुई।

- यूक्रेन का रूस पर बड़ा हमला युद्धक्षेत्र से 660 किमी दूर रूसी सेना के 4 विमान उड़ाये।

- विशेष अधिकार समिति ने काँग्रेस नेता अधीर रंजन चौधरी के निलंबन को खेद जताने के बाद निरस्त किया।

■ 31 अगस्त

- केन्द्र सरकार ने ससंद का विशेष सत्र 18-22 सितम्बर तक बुलाने की घोषणा की।

- मुम्बईः विपक्षी गठबंधन इंडिया की 3 बैठक प्रारंभ हुई। इसमें 28 दलों ने भाग लिया।

- जयावर्मा सिन्हा रेलवे बोर्ड की पहली महिला चेयरपर्सन बनी।

इसे भी जानिये

खेल में पुरुस्कार

पुरुस्कार सम्मान	पुरुस्कार प्रदान करने वाले	पुरुस्कार का विवरण	वर्ष	राशि
सरला सम्मान	उड़ीसा साहित्य अकादमी	उड़िया साहित्य के विकास में सराहनीय योगदान के लिये	1980	30,000
अर्जुन पुरुस्कार	खेल विभाग मानव संस्थान मंत्रालय	विभिन्न खेलों में विशेष उपलब्धि प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को	1961	3 लाख
द्रोणाचार्य पुरुस्कार	खेल विभाग मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार	खेल प्रशिक्षकों द्वारा किये गये उत्कृष्ट सेवाओं के लिये	1985	3 लाख
राजीव गांधी खेल रत्न	भारत सरकार	खेलों में सराहनीय प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को	1992	5 लाख
के.के. विड़ला खेल पुरस्कार	के.के. विड़ला फाउण्डेशन	ओलम्पिक एवं गैर- ओलम्पिक में खिलाड़ियों द्वारा सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन हेतु	1991	50,000
सी.के. नायडू पुरुस्कार	भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड	भारतीय क्रिकेट के प्रति असाधारण योगदान (मैदान के अंदर या बाहार) हेतु	1994	2लाख
जी.डी. विड़ला अन्तराष्ट्रीय पुरुस्कार	बिड़लाकला एवं संस्कृति पुरुस्कार	भारतीय संस्कृति व ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण एवं चिकित्सीय देखभाल के लिये	1991	2 लाख

दिशा बोध

दरिद्रता

1. क्या तुम जानना चाहते हो कि दरिद्रता से बढ़कर दुःखदायी वस्तु और क्या हैं ? तो सुनो दरिद्रता ही दरिद्रता से बढ़कर दुःखदायी है।
2. सत्यानाशिनी दरिद्रता इस जन्म के सुखों की तो शत्रु है ही, पर साथ ही साथ दूसरे जन्म के सुखोपभोग की भी घातक है।
3. ललचाती हुई कंगाली, वंश–मर्यादा और उसकी श्रेष्ठता के साथ वाणी के माधुर्य तक की हत्या कर डालती है।
4. दारिद्रपूर्ण ऊंचे कुल के आदमियों तक की आन छुड़ाकर उन्हें अत्यंत निष्कृष्ट और हीन दासता की भाषा बोलने के लिए विवश करती है।
5. उस एक अभिशाप के नीचे, जिसे लोग दरिद्रता कहते हैं हजार तरह की आपत्तियां और उपद्रव छिपे हुए हैं।
6. निर्धन आदमी बड़ी कुशलता और प्रौढ़ पाण्डित्य के साथ अगाध तत्वज्ञान की भी विवेचना करें, तो भी उसके शब्दों की कोई कीमत नहीं होती।
7. एक तो कंगाल हो और फिर धर्म से शून्य – ऐसे अभागे द्ररिदों से तो उसको जन्म देने वाली माता का मन भी फिर जाएगा
8. क्या कंगाली आज भी मेरा साथ न छोड़ेगी ? कल ही तो उसने मुझे अधमरा कर डाला था।
9. जलते हुए शूलों के बीच सो जाना भले ही संभव हो, पर दरिद्रता की दशा में आँख का झपकना भी असंभव है।
10. गरीब लोग दरिद्रता से अपना पिण्ड छुड़ाने के लिए यदि उद्योग नहीं करते हैं; तो इससे केवल दूसरों के भोजन, नमक, पानी की ही मृत्यु होती है।
11. दरिद्रता प्रायः अज्ञानियों, आलसी, मुफ्तखोर और जन्म–जन्मान्तर के पापियों / घेरती है।

कहानी

मेरी भावना

लेखकः 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

14 अगस्त शाम के 5.00 बज रहे थे, बादल आस-मान में छा रहे थे, बादलों की गरगराहट की गूंज भी बढ़ रही थी, बिजली चमक रही थी, पानी की बौछारें तेज हो रही थी, ऐसा लग रहा था जैसे बादल फट गया हो। शिमला के सड़कों पर लोग निकल नहीं पा रहे थे। पहाड़ी इलाकों में मेघों की छट्टा ऐसे हो रही थी जैसे की कोई दुल्हन अपनी साड़ी को चेहरे पर ढ़क रही हो, ठीक इसी प्रकर मेघ भी पर्वतों की शिखाओं को ढ़क रहे थे। अक्षय अने कमरे में बैठा हुआ था, रोज की तरह वह अपना काम कर रहा था। अक्षय एक आर्चीटिक इंजीनियर होने के कारण उसे कई साइटों पर घूमना पड़ता था क्योंकि उसकी कंपनी उसके लिये काफी मेहनत कराने के बाद तन्खा देती थी। अक्षय मूलनिवासी बिलासपुर हिमाचल प्रदेश का था। बिलासपुर में उसका पूरा परिवार रहता था लेकिन काम के दृष्टि से अक्षय शिमला में ही एक अपना कमरा लेकर रहा करता था। जब आज 14 अगस्त के दिन अक्षय अपनी ड्राइंग खींच रहा था कि अचानक मोबाइल की घंटी घनघना उठी उसने फोन उठाया और बात हुई उसकी बहन भावना कह रही थी कि भैया अब रक्षाबंधन का पर्व आने वाला है मैं आपके लिये राखी तैयार रखी हूँ तो अक्षय ने कहा कि अगर मुझे समय मिला तो जल्दी आऊंगा अन्यथा मैं 30 अगस्त को ही आऊंगा। रक्षाबंधन के दिन और राखी बंधा करके सीधा शिमला की ओर लौट आऊंगा। जब अक्षय और भावना की बात चल रही थी तो अक्षय ने कहा भावना तुम अच्छी तैयारी करके रखना क्योंकि मेरा जन्मदिन भी 24 अगस्त को आने वाला है अगर मैं नहीं आ पाया तो केक यहीं शिमला भिजवा देना भावना कहती है

यह कैसी बात करते हो इतनी बरसात में केक भिजवाना कैसे संभव है परंतु अक्षय ने कहा कि दुनिया के अंदर कोई भी चीज असंभव नहीं हो सकता है बस हमारे अंदर हौसला होना चाहिये। भावना की बात सुनकर अक्षय ने कहा कि असंभव कुछ मत बनाओ तुम संभव सब कुछ है।

इतनी सब बात होने के बाद अक्षय सो गया, 15 अगस्त के सुबह जब टीवी के सामने बैठा था तब वह देखता है कि बिलासपुर की नदियां काफी बाढ़ पर चढ़ी हुई है और बाढ़ के दृश्य आज तक चैनल पर दिखाई दे रहे थे। टीवी पर अक्षय देखता है की भरभरा के पहाड़ नीचे गिर रहे हैं और पहाड़ की मिट्टी खिसक रही है, रोड़ पर आ रही है और कभी रोड़ को भी पर करके दूसरी तरफ गिर रही है। यह सब देख करके वह बारिश और भविष्य में लोगों की त्रासदी न बढ़े इसके लिये अक्षय अब भगवान से प्रार्थना करने लगता है अब अक्षय की प्रार्थना भगवान सुनते होंगे या न सुनते होंगे ये तो नहीं कहा जा सकता है लेकिन अक्षय अपनी प्रार्थना में कोई कमी नहीं रख रहा था उसने भगवन के सामने खड़े होकर के अपने मन में ही याद किया की है भगवन आप सबकी रक्षा करना और मेरा भी परिवार बिलासपुर में रहता है उसकी भी रक्षा करना और यह कहके अक्षय सो जाता है और अक्षय के सोने के उपरांत अक्षय जैसे ही सोचता है कि अक्षय के पास उसकी टीवी की स्क्रीन भी चालू बंद होती रहती है और बिलासपुर, हमीरपुर और इसके साथ-साथ कई पहाड़ी इलाकों के शहरों में पानी और भुस्खलन की दृश्यों को वह बीच-बीच में आंखें खोल करके देखता रहता है। आज तो अक्षय की आँखों में नींद भी नहीं आ रही थी लेकिन अक्षय ने एक बात तय की कि सुबह होते ही हम बिलासपुर जरूर जायेंगे सुबह होते ही अक्षय ट्रैन से जाने का विचार कर रहा था की पता लगा की रेलवे पटरी की मिट्टी खिसक जाने से सारी की सारी ट्रेने रद्द कर दी गई है। यह पता लगने के बाद बहुत वह चिंतित हो जाता है और वह सोचता है कि बिलासपुर कैसे जाया जाये और वह यह तय करता है कि अब वह खुद की गाड़ी से बिलासपुर जायेगा। टैक्सी वाले से संपर्क किया और संपर्क करने के बाद अक्षय बिलासपुर की और बढ़ा और बिलासपुर पहुंचने के बाद वह एक जगह खड़ा हो जाता है, चारों तरफ पानी ही पानी दिखाई दे रहा था उसे वहाँ से घर तक जाने का रास्ता खोजने में बहुत दिक्कत हो रही थी। वह जब अपनी घर के तरफ बढ़ने लगा तो कुछ पुलिसकर्मियों ने उसे रोक दिया और बोला भाईसाहब आप फिलहाल यहीं रूकिये आगे बहुत खतरा है। अक्षय एक जगह खड़ा हो गया एक टीनशेड़ के नीचे से वह देखता है उसका पुरे परिवार और घर पूरी तरीके से पानी से घिर चुका है। कभी भावना छत पर आ रही है और फिर छत से नीचे उतर जाती है, अक्षय भावना को देख

रहा था और भावना से कुछ नहीं कह रहा था क्योंकि दुरी लगभग 200 मीटर की थी, पहाड़ी के ऊपर उसका घर था और देखते ही देखते अक्षय ने देखा की ऊपर एक झाड़ गिरा और झाड़ गिरते ही वह मकान भी खंडहर में बदल गया और तास की पते ही तरह मकान गिरने और बहने लगें अक्षय फिर भगवान से प्रार्थना करते लगा की भगवान आखिर आप क्या करने वाले हैं। या तो आप पानी रोकें या इस भूस्खलन को रोके। अक्षय के कानों में चीखें सुनाई दे रही थी बचाओ-बचाओं की आवाजें आ रही थी कि भावना छतरी लगा करेक ऊपर देख रही थी की उसे अक्षय दिखाई दे गया भावना ने आवाज दी भैया और अक्षय ने भी भावना कहा लेकिन आगे नही बढ़ सका क्योंकि बहुत पानी बढ़ता चला जा रहा था। अब अक्षय ने देखा की सब लोग अपने छतों पे चले गये है। और ये सब कैसे बचेंगे क्योंकि मकान एक-एक करके भरभरा करके तास के पत्ते के तरह नीचे गिर रहे हैं ये सारे के सारे लोग जो बरसात की मुसीबत से घिर गये हैं , सारे मकान एक-एक करके गिर रहे हैं आखिर ये मकान कब तक टिकेंगे । पुलिस अधिकारी के कहा भाईसाहब आप चिंता न करें सबकुद अच्छा होने वाला है मैने सेना के लिये सूचना दे दी है और कुछ ही देर में सेना के जवान आ जायेंगे ओर जवान आने के बाद इन सभी लोगों को सुरखित निकल लिया जायेगा। तभी हैली कॉप्टर की गरगराहट आसमान में सुनाई देने लगी और अक्षय ने देखा और अपने सीने पे हाथ रखकर एक बार भगवान को फिर याद किया और कहने लगा प्रभु बचालो । पर भावना छत के ऊपर और ऊपर से नीचे आ जा रही थी, अक्षय देख रहा था परंतु वह कुछ नहीं कह पा रहा था। अक्षय अपनी सब कुछ भगवान से प्रार्थना करने के बाद हैलीकॉप्टर को तो पा लिया था और हेलीकॉप्टर एक-एक करके लोगों को ऊपर खींच रहा था परंतु उसकी भावना अभी भी छत के ऊपर खड़ी ही थी। छतरी लगाये हुये पानी में भींग रही थी और नीचे से ऊपर लोग आते चले जा रहे थे परंतु उसने एक पड़ोसी के मकान को भरभरा के गिरते हुये देखा और सोचा अब मेरा मकान भी गिर जायेगा अब कैसे बचायो जाये और फिर पुलिस अधिकारी के पास जाता है और कहता है देखो साहब वह मेरी बहन छत पर खड़ी है और मैं उसे राखी बंधवाने के लिये आया हूँ मेरी राखी और मेरी बहन की रक्षा कर दें। तब अधिकारी ने कहा देखों भाई आप अपना काम करिये और मुझे मेरा काम करने दीजिये क्योंकि जब इस बिलासपुर में लोगों ने पर्यटन-स्थल बनायें, होटलें बनाई और रास्तों को चौड़ा किया तब तब सरकार ने उसे रोकने का प्रयास किया तब कोई माना नहीं। जितने भी ये मकान देख रहे हैं ये सब अतिक्रमण के मकान है। ये अतिक्रमण का मकान होने से अतिक्रमण का कभी भी यही ह्रास होने का है जब हम समझाते है तो कोई सुनता नहीं है । आज

पानी की बारिश आई चारों तरफ भूस्खलन की स्थिति बनी तो हमारे इस पहाड़ों को खोखला करने का काम जिन लोगों ने किया है आज वो सब लोग कहाँ है, ये भी याद करों क्योंकि जब व्यक्ति को चारों तरफ लाभ लाभ दिखता है तो उस समय यह भूल जाता है कि एक समय ऐसा भी आ सकता है कि जब हमारे अस्तित्व पर भी खतरा मडरा सकता है, जीवन और मृत्यु के सवाल बन सकता है तब कौन क्या करता ह। तब एक बात अक्षय ने कहा साहब अभी समय भाषण और प्रवचन का नहीं है ये समय बचाने का है तो पुलिस अधिकारी ने कहा भाई जी हम से तो बचाने का आशा कर रहे हो और हमारे आदमी भी अपनी जान हथेली पर रखें हुये पुरे के पुरे क्षेत्र को अपनी सुरक्षा की दृष्टि से देख रहे हैं और बचाने का प्रयास कर रहें हैं पर तुम हमें अनावश्यक तौर पर आ करके कह रहे हो कि इनको बचा लो उनको बचा लो आपका परिवार तो बचाने का है लेकिन आप ये बात क्यों नहीं सोचते की सबको बचाया जाये। इतने में अक्षय देखता हैं कि उसके मकान की आगे की दिवार की ईंट भरभरा के गिर रही है तब वह चिल्ला पड़ा की अब मेरे परिवार को कोई बचाने वाला नहीं है इतने में हैलीकॉप्टर उसके ऊपर में मडराने लगा और मडराते हुये लिफ्ट करने का काम शुरु हो गया और उसने देखा की भावना भी उस हेलीकॉप्टर में बैठ चुकी है और पानी से वह बहुत दूर आने वाली है। अक्षय वह हेलीकॉप्टर जहाँ उतरने वाला था उस हैलिपैड की तरफ दौड़ पड़ा। जब अक्षय हेलिपैड के तरफ दौड़ रहा था तब वह पागलों की तरह चिल्ला रहा था। परंतु उसकी बात कोई सुन नहीं रहा था क्योंकि चारों तरफ हाहाकार मचा हुआ था । कोई किसी की चीख किसी का दर्द, किसी के प्रेम, किसी के करूणा सुनने वाला नहीं था। लेकिन अक्षय दौड़ पड़ा और दौड़ते-दौड़ते वह चला जा रहा था की अचानक उसका पैर फिसल गया, अक्षय का पैर फिसलते ही वह गिरते-गिरते बचा और संभाल कर उसने पुनः दौड़ना प्रारंभ किया और अचानक उसने देखा की पुलिस के लोगों ने उसे एक डंडे से रोक दिया और बोला कहाँ भीतर जा रहे हो, अभी सब लोग व्यवस्थित आयेंगे उसके बाद तुम्हें भीतर जाने को मिलेगा वहीं पर चारों तरफ भीड़ लगी हुइ थी और अक्षय भी खड़ा-खड़ा यह सोच रहा था की आज मैंने भगवान की प्रार्थना की और भगवान ने मेरे परिवार को तो बचा लिये और ज्यों ही उसने पीछे मुड़कर देखा की अचानक उसका तीन मंजिल का मकान भरभरा करके तास के पत्ते की तरह नीचे गिर गया अब वह सोचने लगा मेरा जो मकान गिर गया है तो अब मैं कैसे और कहाँ अपने परिवार रखूँगा। जब अपने परिवार के बारे में वह सोच रहा था की तभी उसने देखा की और भी कई मकान भरभरा कर गिर गये। महादेव का मंदिर भी भरभरा करके गिर गया। अब उसने सोचा की ऐसा

प्रलय हमने कभी भी अपने जीवन इससे पहले नहीं देखा था शायद हमारे बुजुर्गों ने भी कभी नहीं देखा होगा। ऐसे प्रलय को देखने लगा ओर फिर वह चलते-चलते हेलिकॉप्टर को भूल करके उसी स्थान पर खड़ा हो गया जहाँ पर वह विनाशलीला देख रहा था। चारेां तरफ खंडहर में बदलते चले जा रहे थे मकान जहॉ कभी अच्छे-अच्छे वृक्ष लगे हुये थे सब वृक्ष धीरे-धीरे धाराशाही हो रहे थे, यहाँ तक की कोई भी जगह ऐसा नहीं दिख रहा था जहाँ विनाश न हुआ हो अब इस विनाश के लिये भगवान की कोई सुनता नहीं है अब भगवान ने कहा था की अक्षय अपने सर पर हाथ रख करके वह सोचने लगा है भगवान आप कृपालु हैं, दयालु हैं आज आप क्यों हम लोगों को भूल गये। जब चारों तरफ हमारे संकट के बादल छायें हो, जब हमें कोई सहारा नहीं मिल रहा हो तब तो एक भगवान का ही सहारा होता है, और आपने हम लोगों को भुला दिया परंतु उसने देखा कि पानी की इतनी तेज बौछारे आ रही थी और हेलीकॉप्टर भी अब उड़ने में असमर्थता सा दिख रहा था लेकिन कुछ लोग छतों पर खड़े खड़े अभी भी चिल्ला रहें थे, कुछ नीचे जा करके पानी में डूब चुकें थे और निकल नहीं पा रहें थे, कई लोग अभी भी चिल्ला रहे थे। अब अक्षय इस विनास को देख करके कुछ नहीं कर सकता था, परंतु उसे एक आशा की किरण यह थी कि उसकी भावना कब और कहाँ मिलेगी लेकिन वह धीरे-धीरे अपनी एक स्कूल की ओर बढ़ा जिस स्कूल में बाढ़ग्रस्त लोगों को ठहाराया जा रहा था, सभी लोगों के लिये भोजन की व्यवस्था की जा रही थी लेकिन जब वह वहाँ पहुँचता है तो एक ही बात कहता है मेरी भावना-मेरी भावना ओर वह देखता है कि सामने उसके भावना खड़ी हो जाती है और भावना को देख करक अपलक खड़ा हो जाता है । वह देखता है कहीं मैं सपना तो नहीं देख रहा हूँ जहाँ सब कुछ विनाश को प्राप्त हो गया हो वहीं आज मेरी बहन सुरक्षित है और वह सोचता है आज मेरी राखी बांधने वाला कोई मेरे सामने खड़ा है और वह भावना के लिये आदर्श बना करके भावना को देखता रहता है। अपलक और भावना, अक्षय को अपलक देखती रहती है दोनों कुछ नहीं बोलते है । भावना से पूछता है अक्षय पिताजी कहाँ हैं, भावना कहती है मुझे कुछ पता नहीं। जब पिताजी की कोई खबर नहीं होती है तो फिर पूछता है मम्मी कहाँ है, भावना कहती है मुझे मेरा पता है इन दोनों को ढूँढ़ना पड़ेगा की वे कहाँ हैं कैसे हैं क्योंकि मेरे आने के पहले तक वहीं छत पर थें, उन्हें किसने लिफ्ट किया ये मुझे पता नहीं है, परंतु वह देखता है थोड़ी ही देर में उसके माँ और पिता जी भी वहीं आ करके खड़े हो जाते हें और वह कहने लगता है मेरी भावना-मेरी भावना बच गई।

हमारे गौरव

आचार्य अजितसागर

भोपाल के समीप आष्टा कस्बे में भोंरा ग्राम है। यहाँ के निवासी श्री जवरचन्द जी के परिवार में वि.सं. 1982 में चतुर्थ बालक ने जन्म लिया। इसे राजमल नाम से संबोधित किया। इनके परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य और वातावरण धार्मिक था।

घर के धार्मिक परिवेश से राजमल प्रभावित थे। उनकी बुद्धि प्रखर व तीक्ष्ण थी। इंदौर जिले के अजनास ग्राम में कक्षा चार तक की आरंभिक शिक्षा हुई। आरंभिक शिखा के पश्चात् सं. 2000 में उन्हें आचार्य श्री वीरसागर जी के प्रथम दर्शन का अवसर मिला। 17 वर्ष की अल्पवय में है। संघ में सम्मिलित हो जैनागम के गहन अध्ययन में जुट गये गहन ज्ञानार्जन के साथ ही वैराग्य की भावना तीव्रतर होती गई। वि.सं. 2002 में आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज से सातवी प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये।

ब्र. राजमल जी ने अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करायी। परिणाम स्वरूप आप प्रतिष्ठाचार्य की उपाधि से विभूषित किये गये।

संवत् 2018 को सीकर मे परम पूज्य श्री शिवसागर जी महाराज से चतुर्विध संघ के समक्ष मुनि दीक्षा धारण की इस समय आचार्य श्री वीरसागर जी ने आपका नाम अजितसागर रखा।

आपने अपने जीवन में अनेक प्राचीन पाण्डुलिपियों को अनुवाद के साथ सम्पादित कर प्रकाशित करने का श्रमपूर्ण कार्य किया जिनमें श्लोकार्धसंग्रह एवं सर्वोपयोगिक श्लोक संग्रह जैसे महद् ग्रंथ भी शामिल है।

आचार्य कल्पश्री श्रुतसागर जी के आदेश से आपको उदयपुर में 7 जुलाई 1987 को पट्टाचार्य नियुक्त किया गया।

देह परित्याग कर इस संसार से मुक्ति की ओर अगला कदम बढ़ाया।

बुजुर्गों को उपेक्षा नही सम्मान चाहिये ।

❊ विजय कुमार जैन, राघौगढ (म.प्र.) ❊

भारतीय संस्कृति ने परिवार के वरिष्ठजनों अथवा बुजुर्गों का सम्मान देने उनकी सुख सुविधाओं का हर क्षण ध्यान रखने की प्राचीन परम्परा रही हैं। परिवार में कोई भी कार्य करने से पूर्व वरिष्ठ जनों से सलाह मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद लिया जाना आवश्यक माना जाता था। वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से भारत में संयुक्त परिवार की प्राचीन परंपरा समाप्त हो रही है। एकल परिवार बढ़ते जा रहे हैं। एकल परिवार में सबसे ज्यादा उपेक्षा बुजुर्गों को ही रही है।

वृद्धावस्था में समाज ने बुजुर्गों से उपेक्षा पूर्ण व्यवहार हो रहा है। वृद्ध व्यक्ति की प्रमुख चिंता उपेक्षा पूर्ण व्यवहार एवं अपेलापन होती है। परिवार में इनके लिये सुविधाओं की कोई कमी नहीं होती मगर परिवार के सदस्यों को इनके सुख-दुख की चार बात कर उनका मन हल्का करने समय नही होता है। बेटे बेटी बहू बच्चे परिवार का कोई भी सदस्य इनके लिये समय नहीं देता है। परिवार में बुजुर्गों का मान सम्मान बना रहे, परिवार में बुजुर्गों के कारण अशोभनीय स्थिति उत्पन्न न हो इसके लिये हमें बुजुर्गों के मनोविज्ञान को समझना व उनकी समस्याओं को जानना जरूरी है। उम्र के अंतिम पायदान पर आकर अधिकांश व्यक्ति किसी न किसी शारीरिक अथवा मानसिक बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। उम्र अधिक होने पर श्रवण शक्ति व नेत्र ज्योति कमजोर हो जाती है। कुछ लोगों की स्मरण शक्ति भी कमजोर हो जाती है। जो वास्तव में बीमारी नही एक स्वाभाविक अवस्था है।

परिवार के बुजुर्गो का हर समय ध्यान रखना अतिआवश्यक है। अगर उनकी नेत्र ज्योति कम हो गई या पहले से ही कमजोर है तो समय-समय पर उनकी आँखों की जांच कराना चाहिये डॉक्टर की सलाह अनुसार चश्मा बनवाया चाहिये। अगर कम सुनने लगे है तो कानों का भी उपचार कराना चाहिये। उन्हें हर प्रकार से स्वस्थ्य एवं प्रसन्न रखने का प्रयास करना चाहिये। वे निरंतर सचेत एवं ऊर्जावान बने रहे इसके लिये उनकी शारीरिक क्षमता के अनुसार उपयोगी कार्य एवं गतिविधियों को खोजने में भी मदद करनी चाहिये।

अनेक बार उनकी स्मरण शक्ति कमजोर होने के कारण सभी बातें याद नहीं रहती हैं। समय पर दवा लेना भी भूल जाते है। ऐसी स्थिति में उन्हें दोषी ठहराकर उन पर गुस्सा होना उचित नही है। जिस बात को भूल गये हैं उसको स्मरण कराने की आवश्यकता है। हमारी स्थिति यह है कि परिवार के छोटे बच्चों के किसी जिज्ञासा का समाधान करने बार-बार समझाते हैं जबकि परिवार के बुजुर्ग को कोई बात समझ में नही आती है तो चिड़चिड़ाहट आ जाती है। हमारी इस धारणा में सुधार करना चाहिये। परिवार में कोई नया कार्य प्रारंभ करने से उनसे सलाह लेकर उस कार्य का शुभारंभ उनके ही करकमलों से कराना चाहिये। ऐसा करने से उन्हें यह संतुष्टि होगी की परिवार में आज भी उनका महत्व और सम्मान है। बुजुर्गों की आवश्यकताओं और इच्छा को प्राथमिकता देना परिवार का दायित्व है। जब भी खरीदारी के लिये बाजार जायें तो बुजुर्गों से मिलकर उनसे पूछकर जायें उन्हें कुछ मंगवाना तो नहीं है। हमारा प्रयास यह होना चाहिये उनकी मांग से कुछ ही

लाकर उन्हें संतुष्ट करें। हम जब भी रिश्तेदार या निकट परिचित के यहाँ उनके निमंत्रण पर कार्यक्रम मे भाग लेने जायें तो परिवार के बुजुर्गों को साथ चलने का अनुरोध करें। कार्यक्रम से वापस आने पर वहाँ मिले।

उपहार एवं मिठाइयाँ उन्हें दिखायेंगे तो उन्हें प्रसन्नता होगी तथा यह अहसास होगा कि परिवार में मेरा सम्मान कायम है। अगर बुजुर्ग यात्रा करने में सक्षम हैं तो ऐसी यात्रा का कार्यक्रम अवश्य बनायें जहाँ उनकी आनंददायक यात्रा हो सके। वर्तमान में पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में सबसे ज्यादा उपेक्षित बुजुर्ग हो रहे हैं। परिवार में आलीशान मकान बनाया जाता है पहली मंजिल पर माता-पिता के लिये कमना बनाया जाता है उस कमरे के समीप ही घर के पालतू कुत्ते के लिये कमरा बनाया जाता है। बुजुर्ग माता-पिता की सेवा की जिम्मेदारी हम न लेकर कुत्ते को देते हैं। परिवार के बुजुर्ग के गंभीर बीमार होने पर नर्सिंग होम भर्ती पर अस्पताल के भरोसे छोड़ दिया जाता है। परिवार सम्पन्न अथवा धनाड्य है तो जिस कमरे में बुजुर्ग को भती किया उनकी सेवा के लिये एक वैतनिक कर्मचारी लगा दिया जाता है। बेटा बेटी बहू अथवा परिवार के अन्य सदस्य सुबह शाम हाल चाल पूछने चले जाते हैं। इस आत्मीयता विहीन प्रवृत्ति को बंद करने की आवश्यकता है। जिस बुजुर्ग को जीवन के अंतिम समय में जब वह जीवन मरण के बीच लड़ रहा है परिवारजनों का यह दायित्व नहीं है हम सब काम छोड़कर उनकी मन से सेवा करें। यह सत्य है जिन परिवारों में बच्चों एवं बुजुर्गों के बीच दूरी बनाकर रखी जाती है। उनके साथ उपेक्षा का व्यवहार किया जाता है उन परिवारों की आने वाली पीढ़ियाँ सुसंस्कारित नहीं हो सकती।

कविता

प्रभु पार्श्वनाथ

पार्श्वनाथ स्तवन (वंशस्थ छंद)

निर्यापक श्रमण
मुनिश्री योगसागर जी महाराज

देवादि देवा प्रभु पार्श्वनाथ।
हे वीतरागी शिव विश्वनाथा ।।
अर्हत जिनेशा शत ईन्द्र वन्द्या।
हे सूर्य ! मेटो मम पाप सन्द्या ।।

हे विघ्न हर्ता भव रोग वैद्या।
जो नाम जापे हर कार्य साद्यं ।।
रागी न द्वेषी सम भाव रूपी।
चैतन्य ता से निज आत्म रूपी ।।

कैवल्य ज्ञानी भव दुःख मुक्ता।
निर्मोह तासे वसु कर्म जीता ।।
त्रैलोक्य के सर्व पदार्थ जाना।
आत्मीय आनन्द अपूर्व जाना ।।

पर्याय बुद्धी भव को भ्रमाये।
तात्त्वीक ज्ञानी भव को मिटाये ।।
यों सार पूर्णा तव देशना है।
वैराग्य को ? जाग्रत को कराये ।।

योगेश का दुर्दर योग होता।
घोराति घोर उपसर्ग जीता ।।
नागेन्द्र का आसन भी हिलाया।
ओ ही फना मंटप को किया था ।।

प्रतिमा के गुण दोषों का विवेचनात्मक अध्ययन

❊ ब्र. जयकुमार जैन, निशांत ❊

भारतीय संस्कृति समन्वय समृद्ध है, यहाँ सभी धर्मों, जातियों, भाषाओं, परम्पराओं, ग्रंथों, न्यायों को एक जैसा बहुमान प्राप्त है। सभी का एक ही उद्देश्य है प्राणी मात्र को सुख शांति, खुशहाली की प्राप्ति, इसके माध्यम एवं आराधना की पद्धति भी भिन्न-भिन्न हैं यथा मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, चर्च, शिवालय आदि।

प्रतिमा अर्थात् मूर्ति जिसकी परिकल्पना आराध्य की प्रतिकृति के रूप में की गई है। चाहे राम, कृष्ण, शंकर, देवी, संत या वीतरागी जैन तीर्थंकर की हो। सभी अपने-अपने आराध्य के प्रति श्रद्धा, भक्ति एवं निष्ठा से समर्पित होकर धार्मिक अनुष्ठान सम्पादित करते हैं ।

ऐतिहासिक साक्ष्यानुसार प्रतिमा की परम्परा जैनधर्म में सबसे प्राचीन है। जैन साहित्यानुसार यह परम्परा शाश्वत, अकृत्रिम, अनादि निधन है। इसके साक्ष्य हैं पंचमेरु, नन्दीश्वर, देवभवन, देव विमान आदि के अकृत्रिम चैत्यालय। जैन धर्मानुसार कई चौबीसियाँ हो चुकी हैं, वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती जिनके नाम से इस देश का भारत वर्ष नामकरण हुआ है द्वारा प्रथम कृत्रिम अर्थात् मानव निर्मित जिनालयों का उल्लेख मिलता है, परन्तु पुरातत्त्व साक्ष्य के बिना स्वीकार नहीं करता है । इस संदर्भ में पुरातात्त्विक दृष्टि से एच.डी. संकलिया, यू.पी. शाह, आर.सी.अग्रवाल, क्लाज ब्रून, के.डी. बाजपेई, मारुतिनंदन प्रसाद तिवारी मुख्य हैं।

जैन संदर्भों में तिलोयपण्णत्ती, त्रिलोकसार, जैन प्रतिमा विज्ञान, वास्तुसार प्रकरण प्रतिष्ठापाठ, प्रतिष्ठा सारोद्धार आदि ग्रंथों के साथ मूल ग्रंथ धवला में आचार्य वीरसेन स्वामी ने अवगाहना को ताल से माप करने का उल्लेख किया है।

प्रतिमा की आवश्यकता- इस पंचमकाल में साक्षात् अरिहन्त परमेष्ठी नहीं हैं तथा सभी श्रावकों को आचार्य, उपाध्याय एवं साधु का भी साक्षात् सद्भाव प्राप्त नहीं होता हैं। अतः आचार्यों ने नवदेवों के अवलम्बन का उल्लेख किया है।

अरहंत सिद्धसाहु तरियं जिणधम्मवयण पडिमाओ।
जिणणिलयं इदि एदे णवदेवा दिन्तु मे वोहिं।। त्रिलोकसार टिप्पणी पृष्ठ 6

श्रावक के नित्य कर्तव्य में भी जिनबिम्ब पूजा का विधान किया गया है -

देवपूजा गुरुपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानंचेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने।। पद्मनंदि पंचविंशतिका 6/7

श्रावक को धर्माचरण के साथ द्रव्य नीति पूर्वक संचय करने का निर्देश है तथा विवेकपूर्वक संचित सद्द्रव्य का सदुपयोग कहाँ एवं कैसे करना चाहिये, जिससे पुण्यार्जित
द्रव्य के व्यय से और पुण्यार्जन किया जा सके आचार्य जयसेन स्वामी ने प्रतिष्ठापाठ ग्रंथ में सप्तदान स्थानों का उल्लेख किया है -

ये नश्वरं वैभववमाकलय्य क्षेत्रेषु सप्तस्वस्ति वापयन्ति।

तैर्लब्धमीशत्वफलं मनुष्यभवस्य सारं सुगृहीतुकामैः।। प्रतिष्ठापुष्प पृ. 8

जिनबिम्ब की अनिवार्यता- जैन श्रावक श्राविकाओं के प्रतिदिन होने वाले दैनिक कर्त्तव्यों में हुये सावद्य अर्थात् पाप का प्रक्षालन करने के लिये जिनबिम्ब के अवलम्बन से भगवान् की श्रद्धा भक्ति करने का निर्देश मिलता है, इसके आचार्यों ने परम्परा से मोक्ष का हेतु भी बताया है।

दाणं पूया मुक्खं सावयधम्मो। रयणसार गाथा 10

दाणं पूया सीलमुववासो चेदि चउव्विहो सावयधम्मो। जयधवला प्रथमभाग सूत्र 82

जिनबिम्ब के दर्शन से निधत्त निकाचित कर्म जिनका संक्रमण, उदीरणा, अपकर्षण एवं उत्कर्षण नहीं होता क्षय का प्रबल निमित्त कहा गया है।

जिणबिंब-दंसणेण णिधत्त-णिकाचिदस्स वि-
मिच्छात्तादि कम्मकलावस्स खयदंसणादो। षट्खण्डागम पुस्तक 6

दर्शन पाठ में जिनबिम्ब का भाव सहित दर्शन, पापनाशक, मोक्षसाधन, पूर्व जन्मों का पापों का क्षयकारक, संसारांधकार नाशक, भव्यों के मन कमल को विकसित करने वाला, धर्मामृत की वृष्टि करने वाला, जन्म, जरा, मृत्यु विनाशक एवं सुख समृद्धि की वृद्धि का साधन बताया गया है।

पश्यन्ति जिनं भक्त्या पूजयन्ति स्तुवन्ति ये।
ते च दृश्याश्च पूज्याश्च स्तुत्याश्च भुवनत्रये।। पद्मनन्दि पंचविंशतिका श्लोक 14

मैं वंदू जिनदेव को कर अति निर्मल भाव।
कर्म बंध के छेदने और न कछु उपाव।। विनयपाठ

देव स्तुति में दौलतराम जी लिखते हैं-

जय परम शांत मुद्रा समेत भविजन को निज अनुभूति हेत।
तुम गुण चिंतत निज पर विवेक प्रगटें विघटें आपद अनेक।।

इस प्रकार वीतराग भाव वाली पद्मासन-कायोत्सर्ग समुचतुरस्र संस्थान रौद्रादि बारह दोषों से रहित, वास्तु दोषों से रहित, अशुभ रेखाओं से रहित, योग्य धातु, पाषाण से निर्मित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा द्वारा अर्हत गुणों से संस्कारित, वृद्ध बालावस्था रहित, नासाग्रस्थित अविकारी दृष्टि प्रतिमायें अतिशय फलदायी होती हैं।

इसके विपरीत यदि प्रतिमा के निर्माण से पंचकल्याणक प्रतिष्ठा तक किसी प्रकार की शिथिलता, हीनाधिकता होती है तो उसका दुष्प्रभाव भी देखा गया है।

जैनं चैत्यालयं चैत्यमुत निर्मापयन् शुभम्।
वांछन स्वस्य नृपादेश्च वास्तु शास्त्रं न लंघयेत्।। प्रतिष्ठा सरोद्धार 1/7

प्रतिमा निर्माण के लिये शुभवार, तिथि, लग्न नक्षत्र, राशि में प्रशस्त पाषाण यथा मोटी, विशाल, ठंडी, सुन्दर, ठोस, मजबूत, अच्छी गंधवाली, चमक वाली, बिन्दु-दाग रेखा से रहित, मधुर ध्वनि वाली होना चाहिये। प्रतिष्ठा सारोद्धार पृ. 1/50

पाषाण के अतिरिक्त मणि, रत्न, स्फटिक, स्वर्ण, रजत, पीतल, ताम्र आदि प्रशस्त द्रव्यों से जिनबिम्ब का निर्माण करते हैं। प्रतिष्ठापाठ श्लोक 89

प्रतिमा निर्माण अनुभवी, संयमी, प्रतिष्ठाचार्य के निर्देशन में ज्योतिष शास्त्र के नियमानुसार

प्रतिष्ठाकारक एवं प्रतिष्ठेय प्रतिमा एवं नगर की राशि मैत्री, वर्ग मैत्री, नवमांश मैत्री, कांकणी, आदि मैत्री विचार करके, दक्षिणायन, गुरु -शुक्र अस्त, मलमास, अशुभ योग, वार, तिथि, लग्न मुहूर्त को छोड़कर प्रतिमा निर्माण करना चाहिये। प्रतिष्ठा रत्नाकर

यह अत्यन्त विचारणीय है जहाँ प्रतिमा शुभ फल देती है वहीं विपरीतता में अशुभ फल भी देती है, अतः प्रतिमा निर्माण में विशेष सावधानी रखना चाहिये, पाषाण-चयन से प्रतिमा की प्रतिष्ठा होने तक सावधानी अनिवार्य है -

अर्थहीनाऽर्थ कर्तारं मंत्रहीनातु कृत्विजम्।

श्रियं लक्षणहीना तु न प्रतिष्ठासमो रिपुः। बृहदवास्तुमाला

द्रव्यहीन प्रतिष्ठा यजमान का, मंत्रहीन प्रतिष्ठा आचार्य का एवं लक्षण हीन प्रतिष्ठा लक्ष्मी का नाश करती है। ऐसी प्रतिष्ठाओं के समान कोई शत्रु नहीं है।

लघुकाय बिम्ब निर्माण में भी उतनी ही सावधानी रखना चाहिये क्योंकि उसकी नाप में अंतर होने पर शुभाशुभ फल होता है यथा-

एक अंगुल जिनबिम्ब- श्रेष्ठ	दो अंगुल- धननाशकारक
तीन अंगुल जिनबिम्ब- सिद्धिकारक	चार अंगुल- दुखकारक
पाँच अंगुल जिनबिम्ब- धनधान्य यशकारक	छः अंगुल- उद्वेगकारक
सात अंगुल जिनबिम्ब- पशुवृद्धिकारक	आठ अंगुल- हानिकारक
नौ अंगुल जिनबिम्ब- पुत्रादिकारक	दक्ष अंगुल- धननाशक
ग्यारह अंगुल जिनबिम्ब- इच्छित कार्यकारक	पुष्पांजलि-2/30

हीनांगी जिनबिम्ब का फल- जिनबिम्ब के आंगोपांग समचतुरस्र संस्थान के अनुरूप होना चाहिये। बेडोल, भिन्न माप, हीनांग या अधिकांग का प्रभाव प्रतिष्ठाकारक पर पड़ता है। अतः प्रतिष्ठाकारक को प्रतिष्ठेय प्रतिमा का माप एवं सूक्ष्म परीक्षण अनुभवी प्रतिष्ठाचार्य से कराना चाहिये।

हीनांग प्रतिमा का फल निम्नानुसार है—

वक्रनासिका	–	दुखकारक
अंग छोटे हो	–	क्षयकारक
विकृत नेत्र	–	नेत्र विनाशक
छोटा मुख	–	भोग विनाशक
हीन कटि	–	आचार्य विनाशक
हीन जंघा	–	पुत्र-मित्र विनाशक
हीन आसन	–	ऋद्धि नाशक
हीनहस्त एवं चरण	–	धन-क्षयकारक
ऊर्ध्वमुख	–	धन नाशकारक
अधोमुख	–	चिन्ताकारक
वक्र-ग्रीवा	–	स्वदेशनाशक
ऊँचा नीचा मुख	–	विदेश गमन

विषम आसन	–	व्याधिकारक
अन्याय के धन से निर्मित	–	दुष्कालकारक
न्यूनाधिक अंग	–	स्व-पर-पक्ष को कष्ट
रौद्र रूप	–	बिम्ब निर्माता का नाश
अधिक अंग	–	शिल्पकार का नाश
दुर्बल अंग	–	द्रव्य का नाश
पतला उदर	–	दुर्भिक्ष कारक
तिरछी दृष्टि	–	अपूजनीय विरोधकारक
गाढ़ दृष्टि	–	अशुभकारक
अधोदृष्टि	–	विघ्नकारक पुत्रनाश
ऊर्ध्वदृष्टि	–	भार्यानाश
नेत्ररहित	–	नेत्र नाशकारक
बड़ा उदर	–	उदर रोगकारक
हीनाधिक हृदय	–	हृदय रोगकारक
हीन अंस	–	पुत्र नाशक

खंडित जिनबिम्ब का फल-रथोत्सव, विमानोत्सव एवं अन्य कार्यक्रमों में धातु के बिम्ब ही स्थापित करना चाहिए। पाषाण या कोमल सन्धि वाले जिनबिम्ब स्थापित नहीं करना चाहिए। प्रक्षाल करते समय प्रतिमा को ले जाते समय, द्वार एवं घंटे आदि से विशेष सावधानी रखना अनिवार्य है। शक्ति से अधिक वजन वाली प्रतिमा को नहीं उठाना चाहिए, बिम्ब गिरकर या टकराकर खंडित हो सकते हैं। खंडित प्रतिमा का प्रभाव व्यक्ति के परिवार के साथ-साथ समाज पर तथा पूजक पर भी पड़ता है इसलिए खंडित अंग की प्रतिमा को मूलनायक के रूप में विराजमान नहीं करना चाहिए।

नख खंडित होने पर	–	शत्रु भयकारक
अँगुली खंडित होने पर	–	देश विनाशकारक
बाहु खंडित होने पर	–	बन्धक कारक
नासिका खंडित होने पर	–	कुल नाशकारक
चरण खंडित होने पर	–	द्रव्य क्षयकारक
पादपीठ खंडित होने पर	–	स्वजन नाशक
चिह्न खंडित होने पर	–	वाहन नाशक
परिकर खंडित होने पर	–	सेवक नाशक
छत्र खंडित होने पर	–	लक्ष्मी नाशक
श्रीवत्स खंडित होने पर	–	सुख नाशक
कान खंडित होने पर	–	बन्धु नाशक

दशलक्षण के समय सभी मंदिरों में पाषाण प्रतिमाओं का भी मार्जन किया जाता है, मार्जन करते समय विशेषकर पाषाण के फण वाले पार्श्वनाथ का विशेष ध्यान रखें क्योंकि पाषाण पार्श्वनाथ के खंडित होने के कई प्रकरण आते हैं, इसका कारण है शिर एवं फण के कारण गला कमजोर रहता है और जरा सी असावधानी से प्रतिमा खंडित हो सकती है।

आचार्यों ने सौ वर्ष प्राचीन विकलांग, बैडोल तथा आंशिक खंडित बिम्ब भी पूजनीय बताया है, परंतु मूलनायक के रूप में विराजमान नहीं किया जा सकता।

ग्रीवा से खण्डित प्रतिमा सर्वथा अपूजनीय है।

मूलनायक जिनबिम्ब की दृष्टि- मंदिर निर्माण के समय गर्भगृह एवं वेदी का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है क्योंकि वास्तु एवं प्रतिष्ठा ग्रंथानुसार प्रतिमा को गर्भगृह में राक्षस स्थान को छोड़कर देव स्थान में विराजमान करना चाहिये। अर्थात् बिम्ब को दीवार से सटाकर विराजमान नहीं करें तथा प्रतिमा की दृष्टि गजआय से निकलना चाहिये अन्यथा समाज एवं प्रतिष्ठाकारक पर विपरीत प्रभाव पड़ता है , जिससे स्वास्थ्य, व्यापार, उद्योग, मानसिक स्थिति सभी प्रभावित होते हैं। आय का वर्णन इस प्रकार है -

प्रथम- ध्वज- आय- सम्पत्तिकारक	द्वितीय- धूम आय- मृत्युकारक
तृतीय- सिंह आय- शुभकारक	चतुर्थ- श्वान आय-कष्टकारक
पंचम-वृष आय- कल्याणकारक	षष्ठ- खर आय- पीड़ाकारक
सप्तम- गज आय- लक्ष्मीदायक	अष्टम- ध्वांक्ष आय- अशुभफल दायक

प्रतिष्ठारत्नाकर

इस प्रकार प्रतिमा के निर्माण से मंदिर में वेदी में विराजमान करने तक जहाँ भी विपरीत कार्य सम्पन्न होंगे हानिकारक होंगे तथा आगम प्रतिष्ठा एवं वास्तु के सापेक्ष जितने कार्य होंगे सुखः समृद्धि, व्यापार, समाज, राष्ट्र सभी के उन्नयन में सहयोगी होंगे।

संदर्भ ग्रंथ

1. षट्खंडागम- आचार्य पुष्पदंत एवं भूतवली
2. त्रिलोकसार- आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धांत चक्रवर्ती
3. तिलोयपण्णत्ती- आचार्य यतिवृषभ
4. पद्मनंदि पंचविंशतिका- आचार्य पद्मनन्दि
5. प्रतिष्ठा सारोद्धार- पं. आशाधर जी
6. प्रतिष्ठा पाठ- आचार्य जयसेन
7. रयणसार- आचार्य कुन्दकुन्द
8. जयधवला- आचार्य गुणभद्र
9. दर्शनपाठ
10. विनयपाठ
11. जैन प्रतिमा विज्ञान-बालचन्द्र जैन
12. प्रतिष्ठा रत्नाकर- पं. गुलाबचन्द्र 'पुष्प'
13. प्रतिष्ठा पुष्प- ब्र. जयकुमार 'निशांत'
14. पुष्पांजलि- डॉ. भागचन्द्र 'भागेन्दु'

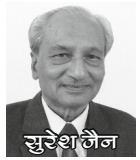

क्रमांक-32 वरिष्ठ नागरिक

सुरक्षित रहिए

आप जानते हैं कि मन चाहें कितना भी जोशीला हों, 60 की उम्र होने पर यदि आप अपने आपको फुर्तीला और ताकतवार समझते हैं, परंतु वास्तव में ढलती उम्र के साथ तन उतना ताकतवर और फुर्तीला नहीं रह जाता।

आपका शरीर ढलान पर है, जिससे हड्डियाँ व जोड़ कमजोर होते हैं लेकिन मन भ्रम बनायें रखता है कि यह काम में चुटकी में कर लूँगा। पर जल्द सच्चाई सामने आ जाती है, लेकिन एक नुकसान के साथ सीनियर सिटिजन अर्थात् वरिष्ठ नागरिक होने पर इन बातों का ख्याल अवश्य रखना चाहिये।

धोखा तब होता है जब मन सोचता है मैं कर लूंगा और शरीर करने से चूक जाता है। परिणाम एक एक्सीडेंट (हादसा) और शरीरिक क्षति यह क्षति फ्रेक्चर से लेकर हेड इंज्यूरी तक हो सकती है ? अर्थात कभी-कभी जान लेना भी हो जाती है।

इसलिये हमेशा हड़बड़ी में रहने और काम करने की अपनी आदतें बदल डालें। भ्रम न पालें, सावधानी बरतें क्योंकि अब आप पहले की तरह फुर्तीले नहीं हैं, छोटी सी चूक भी कभी बड़े नुकसान का कारण बन सकती है।

सुबह नींद खुलते ही तुरंत बिस्तर छोड़कर खड़े न हों, क्योंकि आँखे खुल जाती हैं लेकिन शरीर एवं नाड़ियों का रक्त प्रवाह पूर्ण चैतन्य अवस्था में नहीं हो पाता, अतः पहले बिस्तर पर कुछ मिनट बैठे रहें और पूरी तरह चैतन्य हो लें। कोशिश करें कि बैठे-बैठे ही स्लीपर-चप्पलें पैर में डाल लें और खड़े होने के लिये कोई सहारा लें , अक्सर यही समय होता है, डगमगा कर गिरना जाने का।

गिरने की सबसे अधिक घटनायें बाथरूम या टॉयलेट में ही होती हैं। आप चाहे अकेले हों, पति/पत्नी के साथ हों या संयुक्त परिवार में हों, बाथरूम में अकेले ही होते हैं।

यदि आप घर में अकेले रहते हैं, तो अतिरिक्त सावधानी बरतें क्योंकि गिरने पर यदि उठ न सके तो दरवाजा तोड़कर ही आप तक सहायता पहुंच सकेगी वह भी तब जब आप पड़ोसी तक समय से सूचना पहुँचाने में सफल हो सकेंगे। याद रखे बाथरूम में भी मोबाईल साथ हो ताकि समय पर काम आ सके।

देशी शौचालय को बदले हमेशा यूरोपियन कमोड़ वाले शौचालय ही इस्तेमाल करें। यदि न हो तो समय रहते बदला लें क्योंकि आवश्यकता पड़नी ही है, चाहे कुछ समय बाद ही पड़े।

संभव हो तो कमोड के पास एक हैंडिल लगवा लें, कमजोरी की स्थिति में यह आवश्यकता हो जाता है। बाजार में प्लास्टिक के वैक्यूम हैंडल भी मिलते हैं, तो टाईल्स जैसी चिकनी सतह पर भी चिपक जाते हैं, परंतु इन्हें इस्तेमाल करने से पहले खींचकर जरूर परख लें। वैसे बाथरूम में स्टील के मजबूल हैंडल अधिक सक्षम होते हैं।

हमेशा जरूरत के अनुसार ऊँचे स्टूल पर बैठकर ही नहायें। बाथरूम के फर्श पर रबर की मैट जरूर बिछाकर रखें ताकि आप फिसलने से बच सकें। आज कल बाजार में ऐंटी स्कीड मेंट भी मिलते हैं। यह बाथरूम के लिये सबसे बढ़िया रहते है।

गीले हाथों से टाईल्स लगी दीवार का सहारा न लें, हाथ फिसलते ही आप डिस बैलेंस (Disbalance) होकर गिर सकते है।

बाथरूम के ठीक बाहर सूती मैंट भी रखें जो गीले तलवों से पानी सोख ले, कुछ समय पर खड़े रहकर फिर फर्श पर पैर रखें वह भी सावधानी से।

अंडरगारमेंट हो या कपड़े, अपने चेंजरूम या बेडरूम में ही आकर पहनें, अंडरवियर, पजामा या पेंट खड़े-खड़े कभी न पहनें। हमेशा दीवार का सहारा लेकर या बैठकर ही उनके पायचों में पैर डालें, फिर खड़े होकर पहने, वर्ना दुर्घटना घट सकती है। कभी-कभी स्मार्टनेस की बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

अपनी दैनिक जरूरत की चीजों को नियत जगह पर ही रखने की आदत डाल लें जिससे उन्हें आसानी से उठाया जा सके। भूलने की की ज्यादा आदत हो तो आवश्यक चीजों की लिस्ट भेज या दीवार पर लगा लें, एवं घर से निकलते समय एक निगाह उस पर डाल लें आसानी रहेगी।

जो दवाएँ रोज लेनी हैं उनको प्लास्टिक के प्लैनर में रखें जिससे जुड़ी हुई डिब्बियों में हफ्ते भर की दवायें दिन, वार रखी जाती हैं। अक्सर भ्रम होता है कि दवाएँ ले ली हैं या भूल गये, प्लैनर में से दवा खाने में चूक नहीं होगी।

सीढ़ियों से चढ़ते उतरते समय सक्षम होने पर भी हमेशा रैलिंग का सहारा लें, खासकर ऑटोमैटिक सीढ़ियों पर ध्यान रहे आपका शरीर आपके मन का अब (Obident Servant) आज्ञाकारी सेवक नहीं रहा।

बढ़ती आयु में कोई भी ऐसा कार्य जो आप सदैव करते रहे हैं, उसको बंद नहीं करना चाहिये। कम से कम अपने से सम्बंधित अपने कार्य स्वयं ही करें। घर में या बाहर हुकम चलाने की आदत छोड़ दे। अपना पानी, भोजन, दवाई इत्यादि स्वयं लें, जिससे सक्रियता बनी रहे। बहुत आवश्यक होने पर ही दूसरों की सहायता लेनी चाहिये।

नित्य प्रातःकाल घर से बाहर निकले, पार्क में जाने की आदत न छोड़े, छोटी-मोटी कसरत भी करते रहे, नहीं तो आप योग एवं व्यायाम से दूर होते जायेंगे और शरीर के अंगों की सक्रियता और लचीलापन कम होता जायेगा। धीरे-धीरे शरीर को जंग लग जायेगा। हर मौसम में चाहे भीषण गर्मी हो या सर्दी हो, कैसा भी मौसम हो कुछ योग प्राणायाम अवश्य करते रहें।

चाहे बड़ा परिवार हो, छोटा परिवार हो या पति/पत्नि हों, मित्र हो, पड़ोसी या समाज हो, ध्यान रखें कि आपको सबसे समायोजित (Adjust) करना है न कि सबको आप से एडजस्ट होना पड़े।

स्वाद पर नियंत्रण रखें, कम से कम आवश्यकता होने पर ही बोलें, अपनी दखल अंदाजी, हस्तक्षेप, टोंका-टोंकी कम कर दें।

बुढ़ापे में जरूरत समझे तो चलते समय हाथ में छड़ी (सोटी) रखना शुरु कर दे, इससे इंसान बुढ़ापे में गिरने (Disbalance) होने से बचा रहता है, संभल जाता है। हाथ में छड़ी आपकी विशिष्ट पहचान भी बनाती है।

मूत्र संबंधित कष्ट- मूत्र रूधिरता या यूरीमिया

❊ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ❊

स्वस्थ्य अवस्था में किड़नी से मूत्र चलकर मूत्राशय में जमा होता है यदि किसी कारण से वह मूत्र मूत्राशय (Blader) से न निकले तो इसे मूत्र रोध (Retention of Urine) कहते हैं। यदि किड़नी से मूत्र चलकर मूत्राशय में ही न आये तो इसे मूत्रनाश (Suppression of Urine) कहते हैं। इन दोनों रोगों के बाहरी लक्षण प्रायः एक ही प्रकार के रहने पर भी संपूर्ण स्वतंत्र रोग हैं। मूत्ररोध में मूत्राशय पेशाब से भरा रहता है व फूलकर नींबू की तरह ऊँचा हो उठेगा जिसे अंगुली से ठोकर करने पर सुनने से ठोस आवाज (Dull Sound) निकलेगी। मूत्रनाश में मूत्राशय खाली रहता है, मूत्राशय के ऊँपर अंगुली से ठोकर करने पर सुनने से खाली आवाज निकलेगी। इसी मूत्र रोध या मूत्रनाश से होने वाले रोग को मूत्र रूधिरता या यूरीमिया (Uremia) रोग कहते हैं।

कारण- 1. मूत्र यंत्र में किसी प्रकार की चोट आदि के कारण, शॉक लगना आदि।

2. मूत्रकोष की पुरानी बीमारी में मूत्रनली, मूत्राशय या किसी अन्य मूत्र यंत्र का आपरेशन होना।

3. मूत्र नली के अन्दर स्ट्रिक्चर, मूत्राशय के अन्दर ट्यूमर या आंशिक पक्षाघात, बड़ी पथरी होना, मूत्र का रंग काला सा होना।

4. सर्दी लगना, हिस्टीरिया होना, भय लगना जिससे बच्चा पैदा होते ही मूत्र नहीं आता है।

5. गुर्दा का रोग व प्रोस्टेड ग्रंथि का बढ़ना।

6. किड़नी की कार्यक्षमता में कमी होना।

लक्षण- 1. मूत्राशय फूल उठता है व भारी मालूम होता है, बार-बार मूत्र का वेग आता है किन्तु चेष्टा करने पर भी पेशाब नहीं होता। कभी या तो बहुत देर तक बन्द रहकर पेशाब बूंद-बूंद आता हे व उससे कुछ आराम मालूम होता है और कभी-कभी आराम नहीं होता है।

2. मूत्रनाश से मूत्र के विष मूत्र द्वारा बाहर न निकलने के कारण रक्त में चले जाते हैं और शरीर में फैले जाते हैं उनके मस्तिष्क पर प्रभाव से सिरदर्द, चक्कर, मितली, तन्द्रा, बेहोशी, प्रलाप, आक्षेप, चेहरे का रंग मोम जैसा हो जाना आदि।

3. पेट और आंत संबंधी रोग, नींद न आना, वजन में कमी, खुजली, ठीक से स्वाद महसूस न होना, हिचकी, उच्च रक्तचाप, सांस की तकलीफ, मांसपेशियों में ऐठन आदि।

4. रोग के समय पर ईलाज व सावधानी न रखने से घातक हो सकता है। जिससे प्रमुख स्वास्थ्य चिंता रूप जैसे शरीर में द्रव संचय, इलेक्ट्रोलाइट असंतुलन, हार्मोन असंतुलन, चपापचयी विकार आदि उत्पन्न हो सकते है।

सावधानियाँ- 1. अत्याधिक तेज मसालेदार युक्त भोजन न करना, अधिक ठंडा व अधिक गरम भोजन नहीं करना।

2. अच्छा सुपाच्य भोजन करना व पोटेशियम, फॉस्फेट, सोडियम रोग प्रोटीन का कम सेवन करना, कब्ज नही होने देना।

3. हृदयरोग, रक्तचाप, सुगर व अन्य रोगों का नियंत्रण रखना चाहिये।

4. किडनी को प्रभावित करने वाली तेज दवाईयों का उपयोग नही करना।

5. अल्कोहल का सेवन, धूम्रपान, चाय, काफी का उपयोग कम से कम करना।

उपचार- घरेलू -1. दो ग्राम जीरा व दो ग्राम मिश्री दोनों को पीस कर ठंडे जल के साथ लेने से रूका हुआ मूत्र खुल जाता है व मूत्र की जलन भी मिटती है ये मात्राएं दिन में तीन बार।

2. एरण्ड का तेल (Castor Oil) शुद्ध की 25 से 40 ग्राम तक गर्म पानी में मिलाकर पीने से 15-20 मिनिट बंद मूत्र खुल जाता है।

3. कपिंग क्रिया - मूत्र नाश होने पुराने समय में किडनी के ऊँपर पीठ की तरफ कम से थोड़ा ऊँपर शीशे के गिलास को उलटकर, गिलास के अंदर दीपक जलाकर, गिलास दवाकर रखने से दिया बुझ जाता था व गिलास कुछ देर बाद तिरछा करके हटा देते थे व इसी प्रकार से दूसरी किडनी पर किया जाये जिससे किडनी का संक्रमण घटकर पुनः मूत्र आने लगता है। किन्तु यह क्रिया अनुभवी दाई व पुरुषों द्वारा की जाती है अतः मात्र जानकारी दी गई है।

सभी चिकित्सा पद्धति में समय पर चिकित्सा से आराम मिल जाता है। किन्तु औषधि सेवन से लाभ न होने पर ऐलोपद्धति ही प्रभावी होती है।

होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति भी बिना किसी दुष्परिणाम व कम लागत पर बहुत ही लाभदायक है जिसमें रोगी के लक्षणों के आधार पर एकोनाइट, बेलडोना, नक्सबोमिका, अर्निका, आर्सेनिका, ओपियम, प्लम्बम, कास्टिकम, इग्नेशिया सोलिडेगो, सैबल सेरूलेटा अतः समय पर अनुभवी चिकित्सक से औषधिः नियम नियमित दिन चर्या से स्वस्थ्य व निरोग रहकर जीवन को सुखी बनाया जा सकता है स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन ही निवास करता है।

समाचार

डॉ. ब्र. समता जैन मारौरा इन्दौर को मिला डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वाधान में माहेश्वरी भवन रातानाड़ा जोधपुर राज. में एक ऐतिहासिक भव्य गुणी रत्न अभिनंदन एवं सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसके मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति विनीत कोठारी, एवं अध्यक्ष श्री प्रकाश टाटिया जोधपुर, एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. डॉ. धर्मचन्द्र जी जैन जोधपुर थे।

देश के प्रसिद्ध उद्योगपति, विद्वान और हजारों गणमान्य श्रावकों की उपस्थिति में यह डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान 2023 ब्र. बहिन डॉ. समता जैन मारौरा इन्दौर को उनके शोधकार्य जैन वाङ्मय में परमाणु सिद्धांत और आधुनिक विज्ञान एक अध्ययन विषय पर TMU मुरादाबाद से PHD करने पर प्रदान किया गया।

इस अवसर पर जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्य भगवन पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. महान् अध्यवसायी परम श्रद्धेय भावी आचार्य श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा संत एवं सतीवृन्द का मंगल आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ।

हास्य तरंग

1. एक महिला अपनी सहेली को बताया कि बूढ़े व्यक्ति से शादी करके अब पछता रही हूँ। सहेली ने आश्चर्य से पूंछा -क्या उसके दौलत नहीं है ? बैंक बैलेन्स नहीं है ? कार बंगला नहीं है ? महिला बोली ऐसी कोई बात नहीं है पर उसने जितनी उम्र बताई थी वह 15 वर्ष कम उम्र का निकला।

2. पुलिस को निष्क्रियता के कारण शहर में नित्य चोरी घटनाएं होना आम बात हो गई थी, लेकिन बीती राम पुलिस थाने के पास चोरी होने पर अपराधियाँ को पकड़ने पुलिस का अमला एकदम सक्रिय हो गया। उनकी इस सक्रियता से शहरवासी व यहाँ तक स्वयं रिपोर्ट लिखाने वाले भी आश्चर्य चक्रित थे क्योंकि इससे पहले बड़ी-बड़ी बारदाते पहले भी हो चुकी थी किन्तु पुलिस विभाग कभी इतना सक्रिय नहीं हुआ। अंत में शहर के व्यक्तिगत खुफिया तंत्र के माध्यम से जो सत्य सामने आया वह यथा- इस चोरी का पूरा माल चोर स्वयं ले उड़े, पुलिस अपने हिस्से से बंचित रह गई, इसलिये उन चारों की सरगर्मी से तलाश कर रही है, ताकि ऐसा हादसा पुलिस विभाग के साथ दोबारा न हो सके।

3. बस दुर्घटना की जानकारी पत्रकार ड्राईवर से पूंछ रहे थे, ड्राईवर ने कहा मुझे नहीं पता है क्योंकि आज परिचालक न आने से मैं सवारियों से पैसा एकत्रित करने लगा था।

4. नई नवेली बहु अपनी सास से पति की बुराई करती है इनके अनेकों दुर्गण हैं, तभी सास ने समझाते हुये कहा बेटी इसी कारण से इसे कोई अच्छी लड़की नहीं मिली।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

कोकोनट थंडर आईस्क्रीम

सामग्री

दूध- 1.5 लीटर

मलाई- 1 कटोरी

शक्कर- 1 कटोरी

नारियल की मलाई - 1 कटोरी

केशर दस पत्तियाँ

विधि- दूध को उबाले उबलने के बाद पक कर जब वह दूध 1 लीटर रह जाये तब इस दूध में शक्कर डाले और गैस बंद कर दीजिये व फिर मलाई डालिये, जब मलाई मिक्स हो जाये तब तक हिलाते रहिये व फिर थोड़ा ठंडा होने के बाद नारियल की मलाई मिक्सर में पीस कर दूध में डालें फिर उसमें ब्लैडर में चला लीजिये ताकि सब अच्छे से मिक्स हो जाये फिर जमने रख दो मोल्ड में डालकर फ्रिजर में रखिये। 2 घंटे बाहर निकाल कर फिर से ब्लेड करो ताकि स्मूथ बने और फिर वापिस मोल्ड में डालकर जमाने रख दीजिये आपकी कोकोनट थंडर तैयार।

बाल कहानी

गलत कदम मत उठाओ

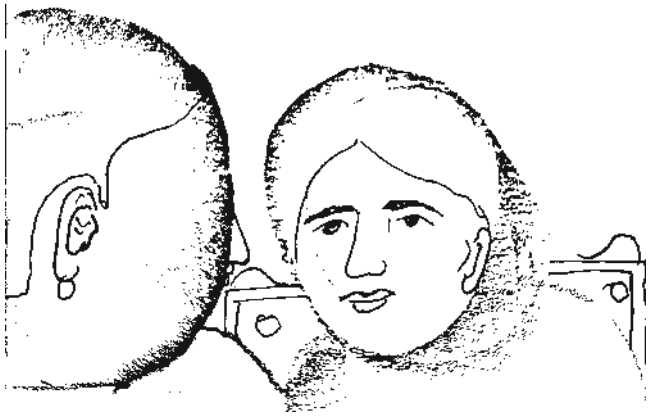

इंदौर शहर में दिव्यांश एक प्रतिभा सम्पन्न महाविद्या लयीन युवक था । उसे लोग बहुत स्मार्ट मानते थे । आज सुबह जब दिव्यांश अपने मित्रों के साथ बैठा था तो उसी समय मोबाईल की रिंगटोन बज उठी उसमें गाना बज रहा था।

दुनिया में कितना गम है -मेरा गम कितना कम है।

दिव्यांश ने मोबाइल उठाया तो समाचार आया कि नेहा ने आत्महत्या कर ली डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया है । तभी दिव्यांश ने मेरू से कहा- देखा मेरू क्या हुआ कायर और डरपोक लोग ही आत्महत्या करते हैं। नेहा कायर निकली यहाँ से अच्छी जिंदगी संसार में नहीं हो सकती है यह बात आदमी क्यों भूल जाता है मुझे समझ में नहीं आता है हौसले हार जाने वाले लोग ही आत्मघात करते है यहां की जिंदगी 60-70 साल से ज्यादा नहीं होती लेकिन स्वर्ग का सपना देखने वाले नरक में ही जाते हैं और वहां कम से कम 10 हजार वर्ष तो रहना ही पड़ता है शास्त्रों में तो यह भी लिखा है कि आत्महत्या करने वाले संक्लेश परिणामी जीव होते हैं और बहुत संक्लेश करने वाले जीव ही नरक में दुख भोगते हैं एक गाना में कहा गया है-

दुनिया में आये हैं तो जीना ही पड़ेगा
जीवन हैं अगर जहर तो पीना ही पड़ेगा

इसका मतलब यह है कि संघर्ष करके ही आदमी सुख की जिन्दगी जी सकता है अच्छी तरीके से यह जी करके अपनी मौत मरे तो उसका नाम दुनिया में अमर होगा।

मेरू दूसरे दिन सोकर उठा तो उसी समय घंटी घनघना उठी मोबाइल उठाया आवाज आई दिव्यांश ने सोसाइट कर लिया मेरू चिल्ला पड़ा। ये हुआ पर उपदेश कुशल बहुत तेरे। कल दिव्यांश सबको प्रवचन दे रहा था और आज उसने खुद गलत कदम उठा लिया और वह गुनगुनाने लगा। **गलत मत कदम उठाओ सोचकर चलो।**

संस्कार गीत

हर प्रभात में राम भजन हो

दिनचर्या को सही बनाओ
शक्ति समय बच जायेगा
धर्म कर्म पुरुषार्थ जगेगा
बिगड़ा काम बनेगा

1.
मन तो शांत बनेगा अपना
सत्कार सभी होंगे सपने
घर के झगड़े कभी न होंगे
गैर बनेंगे अपने
जल्दी जागो जल्दी सोओ
धी धन स्वास्थ्य बढ़ेगा

2.
सारी कला जगेगी अपनी
रोजगार उन्नत होगा
अभ्यासी बनकर ज्ञानी जन
लक्ष्य निष्ठ नित होगा
अच्छी दिनचर्या से ही तो
सोता भाग्य जगेगा

3.
श्रम निष्ठा कल्याणी होती
लगनशील मानव में
स्वर्ग सा आँगन बन जाता
प्राणी रमें राघव में
हर प्रभात में राम भजन हो
मन का मोह घटेगा ।

बाल कविता

एक अनार

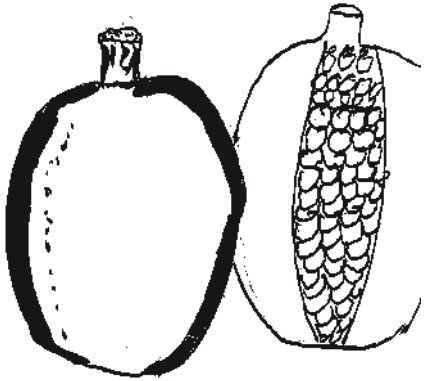

दाने बाला एक अनार
जिसको ढूंढें सो बीमार
बी विटामिन का भंडार
लाल लाल कुदरत अंगार
मीठा मीठा इसका रस हैं
कई रोगों का एक इलाज
हैमो ग्लोबल का करता काज
अब तौ भैया खाओ अनार
कभी न होगे तुम बीमार

समाचार

दीक्षायें सम्पन्न

खतोली- आचार्य श्री भारतभूषण महाराज के करकमलों से सात प्रतिमाधारी श्रीमति चक्रेश जैन मेरठ की क्षुल्लिका दीक्षा 01 सितम्बर 2023 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर खतोली (उ.प्र.) में हुई । जिनका नाम क्षुल्लिका भवतिभूषणमति माताजी रखा गया।

खतोली- आचार्य श्री भारतभूषण महाराज के करकमलों क्षुल्लिका भवति भूषणमति माताजी जी आर्यिका दीक्षा 08 सितम्बर 2023 को श्री दिगम्बर जैन मंदिर खतोली (उ.प्र.) में हुई । जिनका नाम आर्यिका श्री भवतिभूषणमति माताजी रखा गया।

आगामी दीक्षायें

बडोत (उ.प्र.)- आचार्य श्री विशुद्ध सागर महाराज जी के करकमलों से 25 अक्टूबर 2023 को बड़ौत (उ.प्र.) में ब्र. श्रृद्धम भैया जी भिण्ड, ब्र. विपुल भैया भिण्ड, ब्र. हिमांशु भैया जी भिण्ड, ब्र. हार्दिक भैया जी इंदौर, ब्र. राजेश भैया जी ललितपुर, ब्र. विपुल भैया जी बिनी छतरपुर, ब्र. तन्मय जी कोठारी जबलपुर, ब्र. अंकुर भैया जी छतरपुर की जैनेश्वरी दीक्षा होने जा रही है।

गुलाबरा छिन्दवाड़ा- आचार्य श्री विभवसागर महाराज जी के करकमलों से श्री आदिनाथ जिनालय ऋषभनगर गुलाबरा छिन्दवाड़ा (म.प्र.) में 22 से 25 अक्टूबर 2023 के मध्य ब्र. कस्तूरचंद जी सागर, बा. ब्र. संयम भैया चिरमिरी छत्तीसगढ़, बा. ब्र. प्रिंस भैया मोगड़ा, डॉ. कमलेशचंद्र जैन इंदौर, ब्र. आरती दीदी मंडीदीप, ब्रा. ब्र. रोशनी दीदी मंडीदीप की जैनेश्वरी दीक्षा होने जा रही है।

सोनागिर (म.प्र.)- मुनिश्री पुण्यसागर महाराज जी के करकमलों से श्रीमान् बाबूलाल जी मेहता,थांदला की मुनि दीक्षा 22 नवम्बर 2023 को श्री सिद्धक्षेत्र सोनागिर विशाल धर्मशाला में होगी।

समाधिमरण

खतोली- आचार्य श्री भारतभूषण महाराज के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका भवतिभूषण मति माताजी का समाधिमरण 11 सितम्बर 2023 प्रातः 6 बजकर 15 मिनिट पर खतोली (उ.प्र.) में हुआ।

सम्मेदशिखर- गणिनी आर्यिका शुभमति माताजी के ससंघ सान्निध्य में उनकी ही शिष्या आर्यिका सुलक्षणमति माताजी का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र मधुवन बीसपंथी कोठी सम्मेदशिखर में 14 सितम्बर 2023 को हुआ।

उदयपुर राजस्थान- वात्सल्य वारिधी आचार्य श्री वर्धमानसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनि श्री पार्श्वयश सागर महाराज का यम संल्लेखना पूर्वक समाधिमरण 19 सितम्बर 2023 की मध्य रात्रि 12.20 मिनट पर उदयपुर राजस्थान में हुआ।

कुंजवन उदगांव- आचार्य श्री प्रसन्नसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में उनके ही शिष्य मुनिश्री पर्वसागर महाराज जी का समाधिमरण 18 सितम्बर 2023 को दोप. 2.56 मिनिट पर कुंजवन उदगांव सांगली महाराष्ट्र में हुआ।

निश्चयगिरि कर्नाटक- आचार्य श्री निश्चयसागर महाराज जी का समाधिमरण श्री दिगम्बर जैन मंदिर निश्चयगिरि कर्नाटक में 18 सितम्बर 2023 को हुआ।

पुरुस्कार वितरण समारोह

रायपुर-आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं मुनिश्री प्रसाद सागर जी के मागर्दशन में वतन की उड़ान, डॉ. सुरेन्द्रनाथ गुप्ता द्वारा लिखित पुस्तक सोने की चिड़िया और लुटेरे अंग्रेज पुस्तक से 11 अगस्त से 15 अगस्त 2023 को ऑनलाईन प्रतियोगिता

आयोजित की गई थी जिसके पुरुस्कार शत् प्रतिशत् अंक प्राप्त करने वालों में से 21 नाम लक्की ड्रॉ के माध्यम से उपहार के लिये निकाले गये। जिनके नाम श्रीमति स्वाती जैन जबलपुर, श्रीमति सोनिका जैन सागर, श्रीमति रानी जैन केकड़ी, श्रीमति अक्षरा कंनोजलिया सागर, श्रीमति विभा जैन गौरझामर, श्री राजेश जैन भोपाल, श्रीमति उषा जैन शिकोहाबाद, श्रीमति निर्मला सांवला रामगंजमंडी, श्रीमति अनुभा जैन छिंदवाड़ा, मुस्कान जैन अशोकनगर, सचिन जैन अशोकनगर, यशा जैन ललितपुर, श्रीमति किरण जैन भोपाल, सोम्या जैन ललितपुर, वर्षा जैन गुना, रिचा जैन सागर, ज्योति जैन पेंड्रा, ज्योति जैन महरोनी, सारम्मा अब्राहम इंदौर, श्वेता जैन उत्तराखंड, नीतू जैन पीतमपुरा तथा 85 प्रतिशत या अधिक अंक प्राप्त करने वालों में से 56 नाम सांत्वना पुरुस्कार हेतु चयनित किये गये। जिनके नाम दीपक चौधरी अजमेर, पुष्पेन्द्र जैन भोपाल, प्रियंका जैन महाराष्ट्र, अरूण सिंघई, सविता जैन सागर, लक्ष्मी जैन वाशिम, स्वर्णा जैन बेंगलोर, दीप्ति कोठिया सागर, अभिषेक जैन आष्टा, अंकुर जैन ललितपुर, साकेत जैन जबलपुर, अभिलाषा जैन सांगानेर, शैली जैन सागर, जगन्यासेनी पालीमेटा, नवनीत जैन बिलासपुर, पूजा जैन रामगंज मंडी, निशांत जैन उदयपुर, सुमन जैन रोहतक, शशिप्रभा जैन महाराष्ट्र, संजय कासलीवाल सवाई माधोपुर, विपिन जैन सहारनपुर, संजना जैन शालीमार बाग, खंजाची कल्पना जैन पनागर, अंकिता जैन कोटा, कमलेश जैन अंबाह, आदीश जैन सागर, भव्या जैन, पूर्वशी जैन खुरई, पद्मासुंदरी जैन, मिताली कासलीवाल किशनगढ़, नेहा जैन करेली, सारिका जैन घंसौर, सुरेशचंद्र जैन रायपुर, सचिन जैन पटना, नंदिता जैन छत्तीसगढ़, सुनीता जैन, स्वाति जैन तिल्दानेवरा, सौम्या जैन इंदौर, माया केवलानी अजमेर,अतिशय जैन सागर, सांक्षी जैन मुंगावली, आशी जैन सागर, अंबर कोठारी इंदौर, आकाशी जैन जबलपुर, श्रीमति नीरू जैन मुंबई, मैना जैन जयपुर, श्रीमती अर्चना जैन सांगली, अशिका जैन जबलपुर, सीमा जैन गेरतगंज, अल्पना जैन भीलवाड़ा, अल्पना जैन भीलवाड़ा, राजश्री जैन धूलिया, कल्पना जैन मकरोनिया सागर, अरविन्द जैन जयपुर, श्रीमति चंदा जैन सागर, अपेक्षा जैन ललितपुर, ममता जैन सागर दिया गया। जिसका पुरुस्कार शिक्षक दिवस 05 सितम्बर 2023 को दिये गये । कार्यक्रम का संचालन ब्र. जिनेश मलैया इंदौर , कवि चंद्रसेन भोपाल, ने किया । सभी पुरुस्कार राज्यसभा सदस्य वीरेन्द्र जी हेगड़े धर्मस्थल के करकमलों से दिये गये। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट कार्य करने पर ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, सौरभ जैन जयपुर, पियुष जैन गोंदिया को सम्मानित किया गया।

शिक्षक सम्मान समारोह

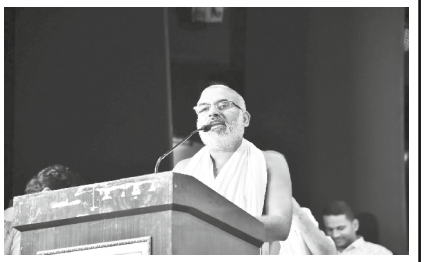

रायपुर- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद एवं मुनिश्री प्रसाद सागर जी के मागर्दशन में मेकहारा मेडिकल कॉलेज के अटल बिहारी वाजपेयी सभागार रायपुर में श्री वीरेन्द्र जी हेगड़े राज्यसभा सदस्य धर्मस्थल के करकमलों से दिनांक 05 सितम्बर 2023 शिक्षक दिवस को लगभग 14 राज्यों 77 शिक्षकों का सम्मान किया गया। जिसका संचालन ब्र. जिनेश मलैया इंदौर, कवि चंद्रसेन भोपाल ने किया।

वर्ग पहेली 288

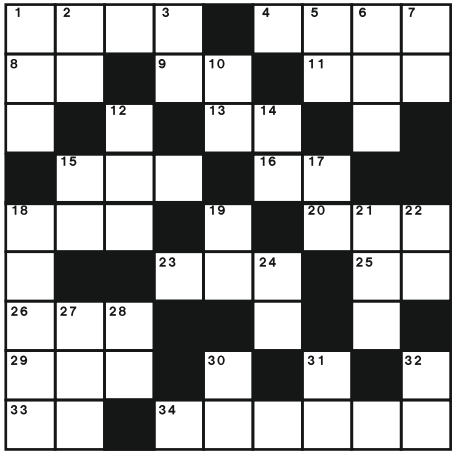

बाये से दाये

1. भारतीय एक चिकित्सा पद्धति -4
4. दीपोत्सव, प्रकाश पर्व, दिवाली -4
8. प्रेम, लगाव -2
9. स्मृति, स्मरण -2
13. बिजली, मशीन -2
15. इंडिया, आर्यावर्त -3
16. दुख, दर्द -2
18. पृथ्वी धरा -3
20. हार गले का गहना -3
23. जिंदगी -3
25. नस खून की नली -2
26. नमस्कार, स्तुति भक्ति -3
29. बोर्ड, पटल -3
33. पिंड, गट्ठा, तागा, धागा -2
34. कल्याणकारक के रचयिता आचार्य -6

ऊपर से नीचे

1. विश्राम, विराम, अवकाश -3
2. 5 वर्ष का काल, जुग -2
3. करूणा, रहना -2
5. चरण, पद, पैर -2
6. उल्टी, कै -3
7. रमण, तल्लीन -2
10. कपट, छल, साजिश -2
11. दबाव, दबाना, -1
12. वाणी, सरस्वती -3
14. संसार, दुनिया -2
15. बजन -2
17. पथ, राह, मार्ग -2
18. आयुर्वेद के ऋषि विद्वान-संस्थापक -5
19. ध्वनि, शब्द -2
21. तम्बाकू -3
22. प्रेम, प्रेय रीत -2
24. रग रक्तवाहनी -2
27. हस्तक्षेप -3
28. रिस्ता, संबंध -2
30. आगे, अग्रसर -2
31. पत्र पान -2
32. श्रेष्ठ मनुष्य पूज्य पुरुष -2

वर्ग पहेली 287 का हल

1 ज	य	2 ध	3 व	ला	4 टी	5 का	■	6 स
ग	■	7 व	न	■	8 म	र	9 क	त
10 दी	11 वा	ल	■	12 पा	■	13 ज	ल	ज
14 श	ह	■	15 प	द	16 म	■	■	ल
■	17 न	18 ज	र	■	19 ल	20 ग	न	■
21 वी	■	त	■	22 र	ह	म	■	23 माँ
24 र	25 त	न	■	■	26 म	न	■	गी
27 स	ना	■	28 प्र	ला	प	■	■	तुं
ना	■	29 आ	ज्ञा	■	ट्टी	■	30 लुं	गी

.....सदस्यता क्र. .....

पता : .....

.....

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता

शरद पूर्णिमा का चंदा

नियम

१. आपको चार से छः पंक्तियों की एक छंदबद्ध या छंदमुक्त तुकांत कविता लिखनी है, जिसके अंत में उपरोक्त शब्द आने चाहिये।
२. समस्या पूर्ति पोस्टकार्ड पर ही लिखकर भेजें।
३. पुरस्कार राशि : प्रथम पुरस्कार १५१ रु., द्वितीय ५१ रु., तृतीय २५ रु.
४. पोस्टकार्ड भेजने की अंतिम तिथि माह की १५ तारीख है।

पंचकल्याणक विधिविधान एवं अन्य धार्मिक कार्यक्रमों हेतु सम्पर्क करें

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, विद्यासागर नगर इन्दौर
सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

पंचकल्याण विधि-विधान सामग्री एवं हाथी स्वर्ण रथ आदि एक ही स्थान पर उपलब्ध

श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर में गिफ्ट आयटम उपलब्ध हैं जिनमें घड़ी, शील्ड, पेन, बैग, बेंच, आदि सामग्री तथा पंचकल्याणक, पूजन, विधान, शिलान्यास, गृह प्रवेश, गृह शुद्धि, शिविर आदि की सम्पूर्ण सामग्री एक साथ उपलब्ध रहती है। जैसे स्वर्ण शिला, रजत, ताम्रशिला, कील, कलश, पंचरत्न, स्वस्तिक, हार, मुकुट, कंठी, स्वागत पट्टे, पचरंगी झंडे, अष्ट मंगल द्रव्य, अष्ट प्रातिहार्य, पंचमेरू, पांडुक शिला, कलश, मंगल कलश, शिखर कलश, ध्वज दंड, दीपक बाक्स, दीपक चंदोवा, पलासना, छत्र, चमर, भामंडल, सिंहासन, वंदनवार, धोती-दुपट्टा, सभी विधानों के मांडने धातु में एवं फ्लेक्स में उपलब्ध है।

विभिन्न आकर्षक डिजाइनों में स्वर्ण कलश, रजत कलश (ओरिजनल चाँदी), रत्न कलश आदि जो एक्रेलिक बॉक्स स्टैण्ड के साथ उपलब्ध हैं। जो काले नहीं पड़ेंगे एवं तीन का सेट होने के बावजूद बिखरेंगे नहीं। चातुर्मास कलश का समय पर आर्डर करने पर बॉक्स के नीचे साधु के नाम, कौन सा चातुर्मास, स्थान, आयोजक आदि का नाम भी लिखवाया जा सकता है। तथा इन्दौर से सभी जगह के लिए बस सुविधा उपलब्ध है। जिसके द्वारा आप अपना आर्डर मंगवा सकते हैं।

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर **www.sanskarsagar.org**

सम्पर्क करें - 0731-4003506, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 28/09/2023, पोस्टिंग दिनांक : 03/10/2023